@Qpatrika | @qaumipatrika hindi | instagram.com/qaumipatrika

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित

सोमवार, 11 अगस्त 2025

VISIT: www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 सम्पादक - गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 272 qaumipatrikahindi 011-41509689, 23315814, 9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

प्रधानमंत्री ने बेंगलुरु में तीन वंदे भारत का किया शुभारंभ

प्रधानमंत्री ने बेंगलुरु मेट्रो की येलो लाइन की मेट्रो को भी हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ किया

एजेंसी

बेंगलुरु। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बेंगलुरु के केएसआर रेलवे स्टेशन पर नई बेंगलुरु-बेलगाम 'वंदे भारत' ट्रेन सहित तीन वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखाई। प्रधानमंत्री ने बेंगलुरु मेट्रो की येलो लाइन की मेट्रो को भी हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ किया। प्रधानमंत्री ने ट्रेन और मेट्रो से यात्रा करने वाले छात्रों से बातचीत भी की। प्रधानमंत्री मोदी ने रविवार सुबह ने बेंगलुरु के केएसआर रेलवे स्टेशन पर तीन लंबी दूर की वंदे भारत ट्रेनों को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। प्रधानमंत्री ने इनमें बेंगलुरु-बेलगावी वंदे भारत एक्सप्रेस को स्टेशन पर हरी झंडी दिखाकर रवाना किया, जबकि श्री माता वैष्णो देवी कटरा-अमृतसर और अजनी (नागपुर)-पुणे वंदे भारत सेवाओं को वर्चुअल माध्यम से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। प्रधानमंत्री ने वंदे भारत ट्रेन को हरी झंडी दिखाने के बाद ट्रेन में यात्रा कर रहे छात्रों से बातचीत की। इसके बाद प्रधानमंत्री मोदी केएसआर रेलवे स्टेशन से सड़क मार्ग से रागीगुड्डा मेट्रो स्टेशन पहुंचे और मेट्रो स्टेशन पर क्यूआर कोड स्कैन कर अपना टिकट लिया। प्रधानमंत्री मोदी ने बैंगलोर मेट्रो फेज़-2 परियोजना के तहत आरवी रोड (रागीगुड्डा) से बोम्मासंद्रा तक येलो लाइन मेट्रो का उद्घाटन किया।

● ऑपरेशन सिंदूर' ने पूरी दुनिया को कराए नए भारत के स्वरूप के दर्शनः पीएम मोदी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'ऑपरेशन सिंदूर' का जिक्र करते हुए कहा है कि इससे पूरी दुनिया ने नए भारत के इस स्वरूप के दर्शन किए। 'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद पहली बार बेंगलुरु पहुंचे प्रधानमंत्री मोदी ने मेट्रो की येलो लाइन का उद्घाटन किया और तीसरे चरण की आधारशिला भी रखी। उन्होंने कहा कि 'ऑपरेशन सिंदूर' की सफलता उन्नत तकनीक और 'मेक इन इंडिया' पहल की ताकत पर आधारित थी, जिसमें बेंगलुरु और कर्नाटक के युवाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, 'ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के पीछे बहुत बड़ी वजह हमारी टेक्नोलॉजी और डिफेंस में मेक इन इंडिया की ताकत है।

● मोदी का ट्रम्प को डेड इकोनॉमी कहने पर जवाबः भारत तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर, देश उपलब्धियों का परचम लहरा रहा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को उनका नाम लिए बिना जवाब दिया। मोदी ने बेंगलुरु में कहा- भारत दुनिया की तेजी से बढ़ती इकोनॉमी है। हम 10 वें नंबर से टॉप 5 में आ गए हैं। जल्द ही टॉप 3 में आएंगे। ये ताकत रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म से मिली है। देश की उपलब्धियों का परचम आसमान में लहरा रहा है।

राजनाथ सिंह ने रायसेन जिले के उमरिया में किया ब्रह्मा परियोजना का भूमिपूजन

● रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि रक्षा क्षेत्र का केंद्र बनने के लिए जो गुण चाहिए, वो मध्य प्रदेश के पास है।

एजेंसी

भोपाल/रायसेन। मध्य प्रदेश में रायसेन जिले के उमरिया गांव के दशहरा मैदान में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने रविवार को ब्रह्मा परियोजना का भूमिपूजन किया।

60 हेक्टेयर से अधिक भूमि पर 1800 करोड़ रुपए की लागत से बनने वाली ब्रह्मा परियोजना (बीईएमएल रेल हब फॉर मैन्युफैक्चरिंग) से भोपाल, रायसेन, सीहोर और विदिशा आदि जिले तो लाभान्वित होंगे ही, इन जिलों के तकनीकी संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए रोजगार के अवसर सृजित होंगे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि रक्षा क्षेत्र का केंद्र बनने के लिए जो गुण चाहिए, वो मध्य प्रदेश के पास है। सभी संसाधन यहां मौजूद हैं। मध्य प्रदेश पूरे हिंदुस्तान में देश के हृदय प्रदेश के रूप में जाना जाता है। आज 1800 करोड़ की लागत वाली इस परियोजना का भूमिपूजन यहां हुआ है। इसके निर्माण के बाद 5 हजार लोगों को रोजगार मिलेगा। आगे भी रक्षा क्षेत्र के माध्यम से जो भी हो सकेगा, मैं सदैव तैयार रहूंगा।

उन्होंने कहा कि यहां रेल डिब्बों का निर्माण तो होगा ही, रेलवे के अलग-अलग उत्पाद भी बनाए जाएंगे। दो साल के भीतर इसका काम पूरा हो जाएगा। इससे आसपास के क्षेत्र का भी विकास होगा। देशभर की सभी तेज गति वाली ट्रेनों में मध्य प्रदेश में बनने वाले रेलवे कोच लगेंगे राजनाथ सिंह ने कहा कि देश की अर्थव्यवस्था आज दुनियाभर में सबसे तेज गति करीब साढ़े 6 फीसदी की दर से बढ़ रही है। उद्योग धंधों के मामलों में मध्य प्रदेश भी काफी तेजी से आगे बढ़ रहा है। 30 लाख करोड़ से अधिक का निवेश मध्य प्रदेश को मिला है। मध्य प्रदेश सरकार ने 18 हजार हेक्टेयर का भूमि बैंक तैयार किए हैं। कनेक्टिविटी की बेहतर सुविधा भी मुहैया कराई गई है। कार्यक्रम में मंच पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के साथ राज्य के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान, मध्य प्रदेश के मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल, प्रभारी नारायण सिंह पंवार, भोजपुर विधायक सुरेंद्र पटवा आदि मौजूद रहे।

● रक्षा मंत्री के नेतृत्व में हमारी सेनाओं ने दो दिन में ही पाकिस्तान को घुटनों पर ला दिया : शिवराज सिंह

भोपाल। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि कश्मीर के पहलगाम में हमारे भाइयों को धर्म पूछ-पूछकर मारा गया। आज ये कहते हुए गर्व है कि हमारी सेना के जवानों ने उन आतंकवादियों को कश्मीर में ही ढूंढकर मार गिराया। हमारी सेनाओं ने पाकिस्तान में आतंकवादियों के ठिकाने 21 मिनट में ही खत्म कर दिए। भारत ने पहले ही कह दिया था कि हम किसी को छेड़ेंगे नहीं, लेकिन किसी ने हरकत की तो उसे छोड़ेंगे नहीं। रक्षा मंत्री के नेतृत्व में हमारी सेनाओं ने दो दिन में पाकिस्तान की सेना को घुटनों पर ला दिया। भारत से बात करने के लिए हाथ जोड़कर पाकिस्तान सामने आया। भारत के शौर्य प्रदर्शन को पूरी दुनिया ने देखा। केन्द्रीय मंत्री चौहान रविवार को मध्य प्रदेश के प्रवास के दौरान रायसेन जिले के ग्राम उमरिया में रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह के मुख्य आतिथ्य में आयोजित ग्रीनफील्ड रेल कोच निर्माण इकाई के भूमिपूजन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भारत के रक्षा मंत्री मेरे बड़े भाई राजनाथ सिंह ऑपरेशन सिंदूर के बाद पहली बार मध्य प्रदेश आए हैं, उनका स्वागत करें। प्रधानमंत्री के नेतृत्व में गौरवशाली भारत शक्तिशाली भारत का निर्माण हो रहा है। हमें गर्व है कि प्रधानमंत्री और रक्षा मंत्री पर, आपके नेतृत्व में सब सुरक्षित है। उन्होंने उमरिया वालों को कहा कि 1800 करोड़ की सौगात मिल रही है।

बढ़ते शेरों से बढ़ रही गिर के वनों की पहचान - भूपेंद्र यादव

143 वर्ष बाद 'बरडा वन्यजीव अभ्यारण्य' में शेर पुनः निवास कर रहे हैंः मंत्री मुलुभाई बेरा

एजेंसी

गांधीनगर। विश्व सिंह दिवस के मौके पर गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल और केन्द्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्री भूपेन्द्र यादव की उपस्थिति में गुजरात के द्वारका जिले के बरडा वन्यजीव अभयारण्य में एक विशेष आयोजन किया गया। वन मंत्री भूपेन्द्र पटेल ने देश और दुनिया भर के सिंह प्रेमियों और प्रकृति प्रेमियों को विश्व सिंह दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि गुजरात के शावक आज भारत की पहचान बन रहे हैं। इस परियोजना में सिंह के आवास और जनसंख्या प्रबंधन, वन्यजीव स्वास्थ्य, मानव और वन्यजीव संघर्ष, स्थानीय लोगों का सहयोग, पर्यटन विकास, वैज्ञानिक अनुसंधान और प्रशिक्षण, इको-डेवलपमेंट तथा जैव विविधता संरक्षण जैसी बातों को शामिल किया गया है। इसके परिणामस्वरूप हमारे यहां शेरों की संख्या 674 से बढ़कर 891 हो गई है। शेरों की बढ़ती आबादी हम सभी के लिए गर्व की बात है। पिछले ढाई दशकों में शेरों का विचरण क्षेत्र 3 जिलों से बढ़कर 11 जिलों तक फैल गया है। स्थानीय निवासियों में 'सिंह है तो हम हैं और हम हैं तो सिंह है' की भावना जागृत हुई है। 143 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद बरडा पर्वत में शेरों ने प्राकृतिक रूप से पुनः निवास शुरू किया है, इस बात पर मुख्यमंत्री ने प्रसन्नता व्यक्त की। वन और वन्यजीवों के संरक्षण तथा पर्यटन क्षेत्र के विकास के लिए 180 करोड़ रुपये के विकास कार्यों का लोकार्पण करते हुए कहा कि, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में वन्यजीवों के संरक्षण और संवर्धन के दृढ़ संकल्प को राज्य सरकार ने सफलतापूर्वक पूरा किया है। गौरव की बात है कि एशियाई शेर केवल गुजरात के गिर क्षेत्र में पाए जाते हैं। राज्य सरकार के समर्पित प्रयासों के फलस्वरूप शेरों की संख्या में 17फीसदी की वृद्धि हुई है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि प्रकृति और मनुष्य एक-दूसरे के पूरक हैं। इसका उत्कृष्ट उदाहरण गिर क्षेत्र में बसे मालधारियों और शेरों के बीच का अनोखा बंधन है। आज पूरे विश्व के लिए भारत के इको-सेंट्रिज्म के प्रयास प्रेरणादायक बन गए हैं।

▶▶ मुख्यमंत्री ने कहा कि बरडा अभ्यारण्य क्षेत्र में 75 करोड़ रुपये की लागत से नया सफारी पार्क और पर्यटकों की सुविधाओं के कार्य आने वाले दिनों में किए जाएंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बरडा अभ्यारण्य क्षेत्र में 75 करोड़ रुपये की लागत से नया सफारी पार्क और पर्यटकों की सुविधाओं के कार्य आने वाले दिनों में किए जाएंगे। विश्व सिंह दिवस के अवसर पर नए आवास और वन-पर्यावरण विभाग की नवीन परियोजनाओं के लोकार्पण की शुभकामनाएं देते हुए केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने

'आर्मी चीफ बोले- अगला युद्ध जल्द हो सकता है'

हमें उसी के मुताबिक तैयारी करनी होगी, ऑपरेशन सिंदूर पर सरकार ने फ्रीहैंड दिया थाः आर्मी चीफ

हमने शतरंज खेला, शह और मात दी : थल सेनाध्यक्ष जनरल उपेंद्र द्विवेदी

एजेंसी

बेंगलुरु। भारत के थल सेनाध्यक्ष जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने पाकिस्तान से जल्द ही दोबारा युद्ध होने की आशंका जताई है। उन्होंने कहा- अगला युद्ध जल्द हो सकता है। हमें उसी के मुताबिक तैयारी करनी होगी और इस बार हमें यह लड़ाई मिलकर लड़नी होगी।

इसके अलावा ऑपरेशन सिंदूर को लेकर जनरल द्विवेदी ने कहा- ऑपरेशन सिंदूर के दौरान सरकार ने हमें फ्री हैंड दिया था। ऑपरेशन में हम चेस खेल रहे थे। हमें नहीं पता था दुश्मन की अगली चाल क्या होगी और हम क्या करने वाले हैं।

ऐसे ही पाक को भी हमारी चाल का नहीं पता था। जनरल द्विवेदी ने कहा कि इसे ग्रे जोन कहा जाता है। इसका मतलब है कि हम पारंपरिक ऑपरेशन नहीं कर रहे हैं।थल सेनाध्यक्ष ने 4 अगस्त को आईटाईटी मद्रास में 'अग्निशोध'-इंडियन आर्मी रिसर्च सेल के उद्घाटन के दौरान यह बात कही थी। इसका वीडियो आज सामने आया।

25 अप्रैल को प्लानिंग की, 29 अप्रैल को पीएम से मुलाकात हुईः जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने कहा- 25 अप्रैल को हमने उत्तरी कमान का दौरा किया। यहां ऑपरेशन की प्लानिंग की, जिसमें हमने 9 में से 7 आतंकी ठिकानों को नष्ट किया, इसमें कई आतंकी भी मारे गए। उन्होंने कहा कि 29 अप्रैल को पीएम मोदी से मुलाकात की। यह महत्वपूर्ण है कि कैसे एक छोटा सा नाम 'ऑपरेशन सिंदूर' पूरे देश को जोड़ता है। यह एक ऐसी बात है जिसने पूरे देश को प्रेरित किया। यही कारण है कि पूरा देश कह रहा था कि आपने इसे क्यों रोक दिया? यह सवाल पूछा जा रहा था और इसका भरपूर जवाब दिया गया है।

कैलाश मानसरोवर यात्रियों का पांचवां दल पहुंचा गूंजी

पिथौरागढ़। कैलाश मानसरोवर यात्रियों का पांचवां और अंतिम दल रविवार को गूंजी पहुंचा। 50 सदस्यीय दल में 37 पुरुष और 13 महिला यात्री शामिल हैं। कैलाश मानसरोवर जाने वाला यात्रियों का यह जत्था शनिवार रात्रि साढ़े 10 बजे पिथौरागढ़ पहुंचा। दल ने केएमवीएन पिथौरागढ़ में रात्रि विश्राम किया और रविवार प्रातः साढ़े 7 बजे गूंजी के लिए प्रस्थान किया। दल आज शाम को गूंजी पहुंचा। दल के साथ लाइजनिंग अधिकारी मनु महाराज और ओम प्रकाश यात्रा संचालन व समन्वय का दायित्व निभा रहे हैं। आज चौथा दल लिपुलेख दर्रे से चीन की सीमा में प्रवेश कर अपने अगले पड़ाव के लिए रवाना हो चुका है।

'सत्ता खोने की हताशा में झूठे और बेबुनियाद बयान दे रहे राहुल गांधी'

सुधांशु त्रिवेदी का करारा पलटवार

एजेंसी

गांधीनगर।,लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी की तरफ से चुनाव आयोग (ईसी) पर लगाए गए आरोपों को लेकर भाजपा सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने कड़ी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि 'भारतीय राजनीति के 'सदाबहार युवा' लगातार देश की संवैधानिक संस्थाओं की छवि खराब करने में लगे हैं।' सुधांशु त्रिवेदी ने राहुल गांधी की तुलना नाजी जर्मनी के प्रचार मंत्री गोएबल्स से करते हुए आरोप लगाया कि वह सत्ता खोने की हताशा में झूठे और बेबुनियाद बयान दे रहे हैं।

'उन सीटों का जिक्र नहीं जहां कांग्रेस को ज्यादा वोट मिले?'

सुधांशु त्रिवेदी ने राहुल गांधी के बंगलूरू सेंट्रल सीट के बयान पर सवाल उठाया। उन्होंने कहा, 'अगर यह आंकड़े चुनाव आयोग के नहीं हैं, तो राहुल गांधी को 1 लाख फर्जी वोटरों की जानकारी कहां से मिली? उन्होंने सिर्फ उन्हीं इलाकों की बात

क्यों की जहां भाजपा आगे थी? उन्होंने चामराजपेट और शिवाजीनगर जैसे इलाकों का जिक्र क्यों नहीं किया, जहां कांग्रेस को 60त्न से ज्यादा वोट मिले?'

'कर्नाटक के सीएम-डिप्टी सीएम क्यों नहीं कर रहे प्रेस कॉन्फ्रेंस?'

भाजपा सांसद ने कहा कि जब कर्नाटक में कांग्रेस की सरकार है, तो मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री इस मामले पर प्रेस कॉन्फ्रेंस क्यों नहीं कर रहे हैं। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि कांग्रेस और 'इंडिया' गठबंधन पहले से ही विदेशी, राष्ट्रविरोधी ताकतों से मिलीभगत के शक के घेरे में हैं। उन्होंने दावा किया कि राहुल गांधी ऐसे एनजीओ और नेताओं से मिलते हैं जो भारत विरोधी हैं, और यही गठबंधन विदेशी ताकतों के जरिए भारत के लोकतंत्र को नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर रहा है।

इंडिया गठबंधन के सांसदों का चुनाव आयोग तक मार्च

एजेंसी

नई दिल्ली। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के चुनाव आयोग पर वोट चोरी कराने के आरोप के बाद इंडिया गठबंधन के नेता सोमवार को संसद से निर्वाचन कार्यालय तक मार्च करेंगे। इंडिया गठबंधन के प्रमुख घटक दल कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी का सीधा आरोप है कि चुनाव आयोग भाजपा के साथ मिलकर वोट चोरी करवा रहा है और भाजपा को फायदा पहुंचा रहा है। श्री गांधी के आवास पर पिछले सप्ताह आयोजित डिनर में इस विषय पर चर्चा के बाद तय हुआ था कि गठबंधन दलों के सांसद इस मुद्दे पर संसद भवन से चुनाव आयोग के कार्यालय तक मार्च करेंगे। मार्च का आयोजन सोमवार 11 अगस्त को हो रहा है। इससे पहले संसद की कार्यवाही शुरू होने से पूर्व सुबह संसद भवन परिसर में विपक्ष के नेता के कक्ष में गठबंधन के नेताओं की बैठक होगी जिसमें संसद से चुनाव आयोग तक मार्च करने को लेकर चर्चा होगी। बताया जा रहा है कि इंडिया गठबंधन के नेता संसद भवन परिसर में पिछले सप्ताह की तरह प्रदर्शन भी करेंगे।

धराली में छठे दिन हेलिकाप्टर से संचालित राहत कार्य जारी रहा

देहरादून।उत्तराखंड में उत्तरकाशी जिला के धराली क्षेत्र में आपदा प्रभावितों की सहायता के लिए हेलिकॉप्टर्स के माध्यम से संचालित राहत अभियान रविवार छठे दिन भी जारी है। आज प्रातः काल मौसम खराब होने के कारण यह अभियान लगभग पौने दस बजे से शुरू हो पाया। मातली हेलीपैड से हेलिकॉप्टर के माध्यम से प्रभावितों के लिए बड़ी मात्रा में खाद्य एवं राहत सामग्री हर्षिल हेलीपैड तक भेजी जा रही है। हेलिकॉप्टर से वापसी में आपदा प्रभावित क्षेत्र से जरूरतमंद लोगों को मातली पहुंचाने का नियमित सिलसिला भी शुरू हो गया है। छह से 09 अगस्त तक कुल 1126 लोगों को हर्षिल और धराली से सुरक्षित स्थानों पर ले जाया जा चुका है। आज कितने लोगों को रेस्क्यू किया गया है, यह फिलहाल स्पष्ट नहीं हो पाया है। आपदाग्रस्त धराली क्षेत्र में तत्परता के साथ बड़े पैमाने पर राहत और बचाव अभियान संचालित करने के लिए राज्य सरकार द्वारा शुरू किए गए

कर्नाटक के मुख्य चुनाव अधिकारी ने राहुल गांधी को जारी किया नोटिस

● चुनाव अधिकारी ने स्पष्ट किया है कि जांच में शकुन रानी ने यह बयान दिया है कि उन्होंने केवल एक बार ही वोट डाला, न कि दो बार जैसा कि आरोप लगाया गया है।

एजेंसी

बेंगलुरु। कर्नाटक के मुख्य चुनाव अधिकारी ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी को वोटर लिस्ट में गड़बड़ी के आरोपों के संबंध में नोटिस जारी किया है। नोटिस में राहुल गांधी से उन दस्तावेजों की मांग की गई है जिनके आधार पर उन्होंने चुनाव आयोग पर आरोप लगाए थे। नोटिस में कहा गया है कि राहुल गांधी ने अपनी प्रस्तुति के दौरान दावा किया था कि यह डेटा चुनाव आयोग का है और पोलिंग ऑफिसर के रिकॉर्ड में 'शकुन रानी' नाम की महिला का नाम दो बार दर्ज है। राहुल गांधी के अनुसार, संबंधित वोटर कार्ड पर टिक का निशान पोलिंग बूथ अधिकारी द्वारा डाले गए वोट को दर्शाता है। चुनाव अधिकारी ने स्पष्ट किया है कि जांच में शकुन रानी ने यह बयान दिया है कि उन्होंने केवल एक बार ही वोट डाला, न कि दो बार जैसा कि आरोप लगाया गया है। इसके अलावा, प्रारंभिक जांच में यह भी सामने आया कि जिस 'टिक' लगे

दस्तावेज को राहुल गांधी ने दिखाया था, वह पोलिंग ऑफिसर द्वारा जारी नहीं किया गया था। नोटिस में राहुल गांधी से कहा गया है-'आपसे अनुरोध है कि जिन दस्तावेजों के आधार पर आपने यह दावा किया है कि शकुन रानी या किसी अन्य व्यक्ति ने दो बार वोट डाला है, वे दस्तावेज उपलब्ध कराएं ताकि मामले की निष्पक्ष जांच की जा सके।'

रॉबर्ट वाड्रा पर 58 करोड़ की अवैध कमाई का आरोप, ईडी ने दायर की चार्जशीट

एजेंसी

गांधीनगर। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी के पति रॉबर्ट वाड्रा के खिलाफ दायर चार्जशीट में दावा किया है कि उन्होंने 58 करोड़ रुपये की अपराध से कमाई हासिल की। यह रकम दो कंपनियों के जरिए आई। ईडी का कहना है कि इस धन का इस्तेमाल वाड्रा ने संपत्तियां खरीदने, निवेश करने और अपनी कंपनियों के कर्ज चुकाने में किया।

ईडी के मुताबिक, आरोपित 58 करोड़ रुपये में से 5 करोड़ रुपये ब्लू ब्रीज ट्रेडिंग प्राइवेट लिमिटेड (BBTPL) के जरिए और 53 करोड़ रुपये स्काई लाइट हॉस्पिटैलिटी प्राइवेट लिमिटेड (SLHPL) के जरिए आए। दोनों कंपनियां वाड्रा के कारोबारी नेटवर्क से जुड़ी बताई गई हैं। जांच एजेंसी ने कहा कि यह रकम शेड्यूल अपराध से उत्पन्न हुई थी, यानी उस स्रोत से जो पहले से अपराध घोषित है।

▶▶ धन के इस्तेमाल पर ईडी का दावा- चार्जशीट में कहा गया है कि वाड्रा ने इस रकम का उपयोग कई तरह से किया। इनमें अचल संपत्ति की खरीद, अलग-अलग क्षेत्रों में निवेश, कंपनियों को लोन देने और समूह की कंपनियों के बकाया चुकाने जैसी गतिविधियां शामिल हैं। ईडी का कहना है कि ये सभी गतिविधियां कथित तौर पर अवैध कमाई से की गईं, जो मनी लॉन्ड्रिंग के तहत अपराध मानी जाती हैं।

ईडी ने जांच में कैसे जुटाए सबूत

अधिकारियों के अनुसार, जांच के दौरान बैंक लेन-देन, कंपनी रिकॉर्ड और गवाहों के बयान के आधार पर यह वित्तीय प्रवाह ट्रैक किया गया। ईडी ने यह भी बताया कि जिन कंपनियों के जरिए धन आया, उनका संचालन वाड्रा के नजदीकी सहयोगियों के हाथों में था। एजेंसी का कहना है कि इन चैनलों का उपयोग रकम को कानूनी स्वरूप देने के लिए किया गया।

बिजनौर में दर्दनाक हादसा : पंप ठीक करने कुएं में उतरे तीन भाइयों की दम घुटने से मौत

बिजनौर (एजेंसी)। यूपी के बिजनौर जिले के सरकथल गांव में रविवार को हुए एक दर्दनाक हादसे ने पूरे इलाके को शोक में डुबो दिया। दरअसल 20 फीट गहरे कुएं में पंप बेल्ट लगाने के दौरान जहरीली गैस की चपेट में आए तीन भाइयों की मौत हो गई। पुलिस के अनुसार मृतकों की पहचान 25 वर्षीय छत्रपाल, 22 वर्षीय हिमांशु (चचेरा भाई) और 20 वर्षीय कशिश के रूप में हुई है। घटना उस समय हुई जब सबसे पहले छत्रपाल कुएं में उतरा और जहरीली गैस के कारण बेहोश हो गया। उसे बचाने के लिए हिमांशु और कशिश भी एक-एक कर कुएं में उतरे, लेकिन वे भी गैस की चपेट में आकर बेहोश हो गए। गांव के एक व्यक्ति ने शोर सुनकर मदद के लिए दौड़ लगाई। मौके पर पहुंचे ग्रामीणों में से एक ने गीला कपड़ा बांधकर रस्सी की मदद से कुएं में उतरकर तीनों को ऊपर खींचा। उन्हें तुरंत नूरपुर अस्पताल ले जाया गया, लेकिन डॉक्टरों ने तीनों को मृत घोषित कर दिया। इस हादसे से परिवार और पूरे गांव में मातम पसरा हुआ है। पुलिस के मुताबिक, परिवार ने किसी भी तरह की कानूनी कार्रवाई से इनकार कर दिया है। स्थानीय लोगों का कहना है कि पंप खराब होना गांव में आम समस्या होती है और लोग अक्सर खुद ही मरम्मत के लिए कुएं में उतर जाते हैं, लेकिन इस हादसे ने साफ कर दिया कि बिना उचित सावधानी यह कदम जानलेवा साबित हो सकता है।

मनी लॉन्ड्रिंग मामले में ईडी ने रॉबर्ट वाड्रा के खिलाफ दायर की चार्जशीट

-दो कंपनियों से 58 करोड़ की अवैध कमाई का आरोप

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने रविवार को मनी लॉन्ड्रिंग मामले में कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी के पति और कारोबारी रॉबर्ट वाड्रा के खिलाफ चार्जशीट दाखिल की। ईडी का आरोप है कि वाड्रा ने दो कंपनियों के जरिए 58 करोड़ रुपये की अवैध कमाई की, जिसका इस्तेमाल उन्होंने अचल संपत्तियां खरीदने, निवेश करने, कारोबारी कर्ज चुकाने और विभिन्न ग्रुप कंपनियों को फंड देने में किया। ईडी की चार्जशीट के अनुसार, वाड्रा को कथित आपराधिक गतिविधियों से जुड़ी यह रकम दो रास्तों से मिली। इसमें 5 करोड़ रुपये ब्लू ब्रीज ट्रेडिंग प्राइवेट लिमिटेड (बीबीटीपीएल) के जरिए और 53 करोड़ रुपये स्काई लाइट हॉस्पिटैलिटी प्राइवेट लिमिटेड के जरिए ट्रांसफर हुए। ईडी के अनुसार जांच में सामने आया कि इन दोनों कंपनियों से प्राप्त रकम को वाड्रा ने न केवल अचल संपत्ति खरीदने और निवेश में लगाया, बल्कि अपने व्यवसायिक नेटवर्क की देनदारियां चुकाने में भी इस्तेमाल किया। ईडी का कहना है कि पूरी प्रक्रिया में मनी लॉन्ड्रिंग रोधक कानून (पीएमएलए) के तहत अपराध से अर्जित संपत्ति को छिपाने और वैध दिखाने की कोशिश की गई। ईडी ने कहा है, कि चार्जशीट में जुटाए गए दस्तावेजी सबूत और बैंक ट्रांजैक्शन रिकॉर्ड इस कथित अवैध कमाई के स्रोत और इस्तेमाल की पुष्टि करते हैं। मामले की सुनवाई जल्द ही विशेष अदालत में शुरू होगी।

आत्मविश्वेश्वर मंदिर में लगी आग, पुजारी समेत सात लोग झुलसे

वाराणसी (एजेंसी)। यूपी के वाराणसी में आत्मविश्वेश्वर मंदिर में आग लग गई जिसकी चपेट में आने से मंदिर के पुजारी समेत सात लोग झुलस गए। सभी घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस के मुताबिक यह घटना तब हुई जब मंदिर को एक प्राचीन धर्मस्थल की तर्ज पर सजाया जा रहा था। इसी दौरान अचानक आग लग गई जिसने देखते ही देखते पूरे मंदिर को अपनी चपेट में ले लिया। जानकारी के मुताबिक शुरुआती जांच में पता चला है कि आग लगने की वजह शॉर्ट सर्किट हो सकती है। आग की खबर सुनते ही लोग और पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और बचाव कार्य में जुट गई। पुलिस ने आग से झुलसे लोगों को अस्पताल पहुंचाया। इस घटना पर कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने गहरा दुख जताया है। उन्होंने एक्स पर लिखा कि वाराणसी में श्री आत्मा विश्वेश्वर महादेव मंदिर में आग लगने और कई श्रद्धालुओं के झुलसने का समाचार दुखद है। बाबा काशी विश्वनाथ से हादसे में घायल श्रद्धालुओं के शीघ्र स्वास्थ्य की प्रार्थना करता हूं।

सीएम सरमा बोले- तोज सभी घुसपैठियों को राहुल गांधी के घर भेज दो

गुवाहाटी (एजेंसी)। घुसपैठियों को लेकर कांग्रेस नरम और भाजपा हमेशा ही सख्त रही है। इसी बीच कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और सांसद गौरव गोगोई ने हाल ही में घुसपैठियों को ना असमिया (नया असमिया) कहा था। इस पर असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने कांग्रेस पार्टी पर घुसपैठियों को नई पहचान देने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी को अगर बाहर से आए घुसपैठियों से इतना ज्यादा ही लगाव है तो उन्हें अपने घर में जगह दें या फिर राहुल गांधी के घर पर भेज दें। इतना ही नहीं हिमंत ने अतिक्रमण के खिलाफ चल रही राज्य सरकार की जंग की सराहना करते हुए कहा कि सरकारी जमीनों को मुक्त कराने के लिए चलाया जा रहा बेदखली अभियान ऐसे ही जारी रहेगा। मीडिया से बात

करते हुए सीएम ने कहा कि राज्य के संसाधनों को लेकर भी अपनी चिंता जताई। उन्होंने कहा कि असम में मूल असमियों के लिए ही पर्याप्त संसाधन या जगह नहीं है, तो ऐसे में हम तथाकथित नए असमियों को कैसे जगह दे सकते हैं। उन्होंने कहा, न तो जमीन है, न जगह, न घर। हम असमियों को पर्याप्त सुविधाएं नहीं दे सकते। ऐसे में हम इन तथाकथित नए असमियों को ये सुविधाएं कैसे दे सकते हैं? गोगोई को अगर इनकी इतनी ही चिंता है, तो इन लोगों को राहुल गांधी के घर भेज देना चाहिए। मुख्यमंत्री ने राज्य में घुसपैठियों को केंद्र में रखकर चलाए जा रहे अतिक्रमण बेदखली अभियान की भी सराहना की। उन्होंने कहा, बेदखली अभियान जारी रहेगा। अगले साल विधानसभा चुनाव के बाद, भाजपा सत्ता में वापस आएगी और तब भी बेदखली जारी रहेगी।

सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद महिलाओं ने गाया बधाई गीत, योगी सरकार के ट्रस्ट पर रोक

वृंदावन के बांके बिहारी मंदिर का मामला

मथुरा, (एजेंसी)। क्या आप सोच सकते हैं कि किसी मामले में सुप्रीम कोर्ट फैसला दे और उसके सम्मान में मंदिर में महिलाएं बधाई गीत गाएं। जी हॉं वृंदावन के बांके बिहारी मंदिर मामले में ऐसा ही कुछ हुआ है। दरअसल कॉरिडोर प्रोजेक्ट और यूपी की योगी सरकार के मंदिर प्रबंधन के लिए बनाए गए ट्रस्ट का विरोध गोस्वामी परिवार और उनकी महिलाएं पिछले ढाई माह से लगातार कर रहीं थीं और अब कोर्ट ने इस पर रोक लगाकर एक तरह से उन्हें राहत प्रदान कर दी है।

सुप्रीम कोर्ट के फैसले से पहले तक जो महिलाएं विरोध स्वरुप प्रदर्शन कर रहीं थीं वही अब बधाई गीत गाती नजर आई हैं। मानों बांके बिहारी मंदिर का माहौल ही अचानक बदल गया है। कोर्ट का फैसला जान गोस्वामी परिवार और उनकी महिलाएं खुश हो गईं और ठाकुरजी को निहारते हुए बधाई गीत गाने लगीं, इससे मंदिर प्रांगण का भक्तिमय माहौल भावुक पलों में तब्दील हो गया। यहां पहुंचने वाले श्रद्धालुओं और भक्तों में इसकी वजह जानने की कोशिश की। इस पर वहां मौजूद महिलाएं भावुक हो कहती दिखीं, जिन्होंने हमारे ठाकुरजी को परेशान करने की कोशिश की थी, उनकी हार हुई। ठाकुरजी ने तो हमें अपने पास ही रखा...। वे सभी जयकारा लगाते हुए बोलीं...जय हो बिहारीजी की। इसी के साथ भावना से ओत-प्रात महिलाएं गाती हैं, मेरे ठाकुर जी की फूल गई फुलवाड़ीज। जिसमें अन्य भक्तजन भी शामिल होते चले जाते हैं।

यहां बताते चलें कि कॉरिडोर प्रोजेक्ट और यूपी सरकार के मंदिर प्रबंधन के लिए बनाए जाने वाले ट्रस्ट का विरोध काफी लंबे समय से किया जा रहा था। इस संबंध में सुप्रीम कोर्ट में याचिकाएं दायर की गईं थीं। इन याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए 8 अगस्त को सुप्रीम कोर्ट ने कहा- बांके बिहारी मंदिर न्यास अध्यादेश, 2025 के तहत समिति के संचालन को रद्द किया जा रहा है। कोर्ट ने बांके बिहारी ट्रस्ट पर अस्थाई रोक लगाते हुए अध्यादेश की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली याचिका को हाईकोर्ट ट्रांसफर कर दिया। इसे बांके बिहारी मंदिर से जुड़े हुए लोग और भक्त बड़ी जीत बता रहे हैं और बधाई गीत गा रहे हैं।

वकील अपनी पहचान न्याय के सूत्रधार के रुप में स्थापित करें : पूर्व सीजेआई

छत्रपति संभाजीनगर (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट के पूर्व सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ ने वकालत कर रहे छात्रों और वकीलों को नौतिकता पर खरे उतरने की हिदायत दी है। उन्होंने कहा कि सभी वकीलों को अपनी पहचान न्याय के सूत्रधार के रूप में स्थापित करनी चाहिए। पूर्व सीजेआई के मुताबिक सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता है। खासकर कानून की पढ़ाई करने वाले अभ्यार्थी जिंदगी भर कुछ न कुछ नया सीखते हैं। वो एक स्वतंत्र विचारक होते हैं। लॉ कॉलेज में छात्रों को संबोधित करते हुए पूर्व सीजेआई चंद्रचूड़ ने कहा कि वकीलों के लिए न्याय सबसे पहले होना चाहिए। अगर चाहिए तो दूसरों का मार्गदर्शन जरूर लो, आपकी सोच स्वतंत्र होनी चाहिए। उनहोंने कहा कि अगर नई पीढ़ी कुछ नया सीखती है और अपने कर्तव्य के प्रति ईमानदार रहती है, तो इस क्षेत्र में आपके सामने ढेरों मौके खुले हैं। आज महिलाएं भी सुपरस्पेशलिटी और तकनीकी शाखाओं में शामिल हो रही हैं। यह बदलाव कानून के क्षेत्र में भी आना चाहिए। कानून में भी महिलाओं की भागीदारी बढ़नी चाहिए। चंद्रचूड़ ने कहा कि कई छात्र छोटे शहरों और ग्रामीण इलाकों से आते हैं। वह न सिर्फ लॉ कॉलेज में अहम योगदान देते हैं बल्कि सफलता की नई कहानी भी बुनते हैं। बेहतर प्रैक्टिस के लिए कानून की पढ़ाई करने वाले बच्चों को लाइब्रेरी डेटाबेस मुहैया करवाना चाहिए। सीनियर्स को चाहिए कि नए वकीलों को उनके शुरुआती दिनों में सपोर्ट करें और आर्थिक रूप से उनकी मदद करें।

तेजस्वी के आरोप हुए सच साबित: डिप्टी सीएम खुद बोले- हॉं हैं दो जगह नाम, पर हटाने का आवेदन दे चुका

पटना(एजेंसी)। बिहार में मतदाता सूची में डिप्टी सीएम विजय कुमार सिन्हा का नाम दो जगह दर्ज होने को लेकर रविवार को सियासत गरमा गई। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने आरोप लगाया कि सिन्हा के पास दो ईपिक नंबर हैं और उनका नाम पटना के बांकीपुर व लखीसराय, दोनों विधानसभा क्षेत्रों की वोटर लिस्ट में मौजूद है, साथ ही उम्र में भी अंतर है। इसे स्वीकार करते हुए डिप्टी सीएम बोले, हॉं मेरे दो जगह से नाम हैं और एक जगह से हटाने का आवेदन भी दे चुका हूं।

दरअसल इन आरोपों के चलते बिहार से लेकर दिल्ली तक की राजनीति गरमा गई है। ऐसे में आरोप लगने के कुछ ही देर बाद डिप्टी सीएम विजय कुमार सिन्हा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए अपनी सफाई भी पेश कर दी। मीडिया के समक्ष उन्होंने स्वीकार करते हुए कहा, कि मेरा नाम दो जगह दर्ज है, लेकिन पटना से नाम हटाने का आवेदन पहले ही दे चुका हूं। अभी अंतिम मतदाता सूची जारी नहीं हुई है, प्रक्रिया जारी है। डिप्टी सीएम सिन्हा का कहना है, कि उन्होंने 30 अप्रैल 2024 को लखीसराय में नाम जोड़ने और पटना से हटाने का फॉर्म भरा था, लेकिन तकनीकी कारण से नाम नहीं हट पाया। प्रारूप प्रकाशन के बाद जब परिवार ने दोबारा नाम दर्ज होने की जानकारी दी, तो उन्होंने 5 अगस्त को बीएलओ को फॉर्म-7 भरकर दिया और उसकी रिसीविंग भी ली। डिप्टी सीएम ने कहा, कि बीजेपी लोकतंत्र की प्रहरी है, संवैधानिक संस्थाओं का अपमान नहीं करती। दो जगह से वोट देने की परंपरा हमारी नहीं, बल्कि इनकी है। उन्होंने तेजस्वी यादव को जंगलराज के युवराज कहते हुए आरोप लगाया कि विपक्ष जनता में भ्रम फैला रहा है। डिप्टी सीएम सिन्हा के साथ मौजूद एक वकील ने स्थिति को संभालते हुए स्पष्ट किया कि नाम दो जगह आने का कारण बीएलओ प्रक्रिया की तकनीकी खामी है और अब सुधार के लिए चुनाव आयोग द्वारा एक महीने का समय दिया गया है।

पैसा कमाने परदेस गया था बेटा बॉक्स में लौटा, बूढ़ी मां के रुक नहीं रहे आंसू

नाइजर में 4 महीने में 8 भारतीय मजदूरों पर हुए हमले, 6 अगवा, दो की हत्या

गोरखपुर (एजेंसी)। बेटे परदेस गया था पैसा कमाने, लेकिन बॉक्स में लौटा। मौत के 12 दिन बाद उसकी लाश देखी। उसके सीने पर गोली मारी। दो गोली कमर पर और एक सिर में लगी थी। बोलकर गया था कि दीवाली से पहले लौट आऊंगा, लेकिन वह हमें छोड़कर चला गया। यह कहना है 63 साल की ज्ञानती देवी का। वह बेटे कृष्ण की फोटो देखकर भावुक हो जाती हैं।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक कृष्ण कुमार गुप्ता पश्चिमी अफ्रीका के देश नाइजर में काम करने गया था। 15 जुलाई को उसकी साइट पर कुछ अज्ञात लोगों ने हमला कर दिया। कृष्ण को गोली मार दी। वे यूपी के कुशीनगर का रहने वाला था। आतंकियों ने कृष्ण के साथ काम करने वाले झारखंड के गणेश करमाली को भी गोली मार दी। जम्मू-कश्मीर के रंजीत को अगवा करके ले गए। उसका अभी तक पता नहीं चला है।

बता दें नाइजर में बीते चार महीने में आठ भारतीय मजदूरों पर जानलेवा हमले हुए। इनमें छह को अगवा कर लिया गया, जबकि दो की हत्या कर दी गई। जो मजदूर बच गए, उन्हें सेना के शिविर में निगरानी में रखा गया है। ये लोग अब भारत लौटना चाहते हैं। इन हमलों के पीछे आतंकी संगठन बोको हराम का हाथ बताया जा रहा है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक 15 जुलाई को डोसो में ट्रांसमिशन लाइन पर बिजली के खंभे लगाने का काम चल रहा था। इनमें जेसीबी ऑपरेटर कृष्ण गुप्ता, चीफ सेफ्टी अफसर रंजीत सिंह थे। रोज की तरह काम शुरू हुआ, लेकिन सुबह करीब 11 बजे बाइक से कुछ लोग आए। वह हथियारों से लैस थे। आते ही उन्होंने सिक्योरिटी में तैनात सेना के जवानों पर गोलियां चलानी शुरू कर दीं। हमले के बारे में कृष्ण गुप्ता के परिवार को सबसे पहले दिनेश कुमार ने बताया था। दिनेश बिहार के गोपालगंज के रहने वाला है। घटना वाले दिन वे भी ट्रांसमिशन लाइन पर काम कर रहा था। वे दूसरी कंस्ट्रक्शन साइट पर था, इसलिए बच गया। दिनेश इस वक्त सेना के शिविर में हैं।

बता दें नाइजर में भारतीय मजूदरों पर हुआ ये पहला हमला नहीं था। इससे पहले भी 25 अप्रैल, 2025 को तिलाबेरी इलाके में बिजली का टावर लगाते समय हथियारबंद बाइक सवारों ने कल्पतरु कंपनी के मजदूरों पर हमला किया था। तब मजदूर लंच करके साइट पर लौट रहे थे। इसी दौरान हमलावरों ने अंधाधुंध फायरिंग कर दी। इस घटना में सेना के छह जवान घायल हुए थे। पांच भारतीय मजदूरों को हमलावर अपने साथ ले गए थे। पांचों मजदूर झारखंड के गिरिडीह जिले के दोंदलो गांव के रहने वाले हैं। नाइजर सरकार इनकी खोजबीन के लिए तिलाबेरी से लेकर डोसो तक सर्च ऑपरेशन चला रही है। ये सभी जनवरी 2025 को नाइजर गए थे। वे इस साल जुलाई में घर लौटने वाले थे। 25 अप्रैल की इस घटना के बाद 15 जुलाई को डोसो में काम कर रहे मजदूरों की हत्या कर दी गई। एक को अगवा कर लिया गया। इन घटनाओं के बाद अब चार महीने में नाइजर में आठ भारतीय मजदूरों पर हुए जानलेवा हमलों में छह किडनैपिंग और दो की हत्या के मामले सामने आए हैं।

धराली रेस्क्यू ऑपरेशन में 1000 लोगों को सुरक्षित जगह पहुंचाया : सीएम पुष्कर धामी

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने धराली रेस्क्यू ऑपरेशन की जानकारी देते हुए बताया कि खराब मौसम के बावजूद अब तक 1000 से अधिक लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। इनमें स्थानीय नागरिकों के साथ देशभर से आए तीर्थयात्री भी शामिल हैं। घायलों को जिला अस्पताल और एम्स में भर्ती कराया गया है, जहां उनके बेहतर इलाज की व्यवस्था की गई है। मुख्यमंत्री ने बताया कि हर्षिल और धराली क्षेत्रों में आवश्यक राहत सामग्री जैसे दवाएं, राशन, दूध और कपड़े पर्याप्त मात्रा में पहुंचाए गए हैं। बिजली आपूर्ति बहाल करने के लिए उरेडा का पावर हाउस शुरू किया गया है और यूपीसीएल द्वारा तारों की मरम्मत की जा रही है। मोबाइल नेटवर्क की बहाली और दो 125 केवी जनरेटर की व्यवस्था भी की गई है। सड़क मार्ग को दुरुस्त करने का कार्य तेज़ी से जारी है। गंगनानी में बेली ब्रिज का निर्माण हो रहा है और मंगलवार तक हर्षिल तक सड़क मार्ग पूरी तरह खोलने की उम्मीद है। मुख्यमंत्री ने कहा कि जिन परिवारों के मकान पूरी तरह क्षतिग्रस्त हुए हैं, उन्हें 5 लाख की तत्काल सहायता राशि दी जाएगी और अगले छह महीने का राशन भी उपलब्ध कराया जाएगा। राजस्व सचिव की अध्यक्षता में एक समिति बनाई गई है जो पुनर्वास और क्षति का आकलन करेगी। सेब के बगीचों को हुए नुकसान की भी समीक्षा होगी। मुख्यमंत्री ने बताया कि पौड़ी के अन्य प्रभावित गांवों में भी सहायता दी जाएगी। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार जताते हुए कहा कि केंद्र सरकार हर संभव सहयोग दे रही है।

पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ 21 जुलाई से लापता, उन्हें ढूंढने के लिए याचिका दायर करेंगे: संजय राउत

मुंबई (एजेंसी)। पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ 21 जुलाई से लापता हैं। स्वस्थ होने के बावजूद, यह बेहद चौंकाने वाला था कि उन्हें बताया गया कि उन्होंने स्वास्थ्य कारणों से इस्तीफा दे दिया है। लेकिन, इस्तीफे के बाद से वह कहाँ हैं, उनकी स्वास्थ्य स्थिति क्या है, क्या वह सचमुच मौजूद हैं? क्या उन्हें कहीं गायब कर दिया गया है? ये संदेह हमारे मन में आ रहे हैं। रूस और चीन में जिन नेताओं को हम नहीं चाहते, उन्हें गायब करने का यही तरीका है। क्या इन लोगों ने ऐसी परंपरा शुरू की है? यह कहना है शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) पार्टी के वरिष्ठ नेता और सांसद संजय राउत का। संजय राउत ने रविवार को मीडिया से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने कहा, उद्धव ठाकरे जब दिल्ली गए थे, तब कपिल सिब्बल और मैंने धनखड़ के बारे में चर्चा की थी। इस संबंध में, हमने निर्णय लिया है कि सर्वोच्च न्यायालय में बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका दायर की जाए। जब कोई व्यक्ति नहीं मिल पाता है, तो ऐसी याचिका दायर की जा सकती है और न्यायालय के आदेश से संबंधित व्यक्ति का पता लगाया जा सकता है। संजय राउत ने आगे कहा, चुनाव से पहले कुछ लोगों ने शरद पवार से मुलाकात की थी और एक निश्चित राशि देकर 160 सीटें जीतने का दावा किया था। मैं आपको यह भी बता दूँ कि ऐसे कुछ लोग लोकसभा और विधानसभा चुनावों के दौरान उद्धव ठाकरे से भी मिले थे। तब उद्धव ठाकरे ने उनसे साफ़ कहा था कि हम लोकतंत्र में विश्वास करते हैं। लोकसभा में महाराष्ट्र में हमें सफलता मिली थी। बाद में, विधानसभा चुनावों के दौरान, ये लोग फिर मिले और कहा, जो 60-65 सीटें आपको मुश्किल लग रही हैं, बताइए, हम उन्हें ईवीएम से जीतेंगे। हमने उनके प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया क्योंकि हमें ऐसे तरीके की ज़रूरत नहीं थी। हालाँकि, उन्होंने कहा कि सत्तारूढ़ दल ने ईवीएम और मतदाता सूची के ज़रिए तैयारी की है, इसलिए आपकी विफलता दिखाई दे रही है। हम आपको जिता सकते हैं, ऐसा उन्होंने यह भी कहा। हमें चुनाव आयोग और लोकतंत्र पर विश्वास था। लेकिन अब मुझे लगता है कि शरद पवार और उद्धव ठाकरे से मिलने वाले लोगों के दावों में सच्चाई होनी चाहिए।

राहुल गांधी की वोट बचाओ अधिकार यात्रा कांग्रेस की समाप्ति की यात्रा है

केंद्रीय मंत्री ने कहा- वे चाहते हैं हम घुसपैठियों को वोट देने का अधिकार दें

बेगूसराय (एजेंसी)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और बिहार विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव वोट बचाओ अधिकार यात्रा निकालने वाले हैं। केंद्रीय कपड़ा मंत्री गिरिराज सिंह ने रविवार को इस यात्रा को कांग्रेस की समाप्ति की यात्रा बताया। साथ ही ऑपरेशन सिंदूर की कार्रवाई पर सवाल उठाने को लेकर उन्होंने कहा कि कांग्रेस को अपनी सेना नहीं, बल्कि पाकिस्तान पर ज्यादा भरोसा है।

सदन में पीएम मोदी के जवाब नहीं देने पर कांग्रेस द्वारा कायर बताए जाने को लेकर गिरिराज ने कहा कि राहुल गांधी और कांग्रेस को देश की सेना पर भरोसा नहीं है। सेना के जनरल और सभी बड़े लोग बता चुके हैं, लेकिन उन्हें सेना और पीएम पर भरोसा नहीं है। कांग्रेस को डूबकर मर जाना चाहिए। अगर उनकी यही आदत रही तो वे देश के अंदर ही देशविरोधी कहलाएंगे।

राहुल गांधी के चुनाव आयोग पर सवाल उठाने पर गिरीराज सिंह ने कहा कि राहुल गांधी को संविधान का ज्ञान नहीं है। वे पागल की तरह बात करते हैं। वे क्या कहना चाहते हैं कि हमें बांग्लादेशी घुसपैठियों को वोट का अधिकार देना चाहिए, जो अवैध हैं, उन्हें वोट का अधिकार मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि अगर उनमें ताकत है तो चुनाव आयोग को वह सूची क्यों नहीं दे रहे, जिसमें उन्होंने दावा किया है कि जो जिंदा थे, उन्हें मृत दिखाया गया और जो सही वोटर्स थे, उन्हें सूची से निकाल दिया गया? वे सोचते हैं कि झूठ बोलते रहेंगे, तो वह सच हो जाएगा?, लेकिन झूठ हमेशा झूठ ही रहेगा। मतदाता सूची से सही लोगों को नहीं, बल्कि जिनका दो बार नाम था, सिर्फ उन्हीं का नाम हटाया गया है। मेरा नाम दो जगह था और एक जगह काटा गया? है।

अमेरिका में नई वीजा पॉलिसी और टैरिफ नियम छात्रों के लिए बन रहे चुनौती

-ट्रंप करते रहे मनमानी तो एशिया उच्च शिक्षा का नया वैश्विक केंद्र बन जाएगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की नई वीजा पॉलिसी और टैरिफ नियमों ने भारतीय छात्रों के लिए चुनौती बन गए हैं। पहले अमेरिका उच्च शिक्षा का केंद्र माना जाता था, अब वहां पढ़ाई महंगी, जटिल और जोखिम भरी हो गई है। 4 जुलाई 2025 को ट्रंप ने वन बिग ब्यूटीफुल बिल के तहत अमेरिका में छात्र वीजा के लिए एफ, एम और जे श्रेणी के आवेदकों को 250 डॉलर यानी करीब 21,463 रुपए की वीजा इंटीग्रिटी फीस और 24 डॉलर यानी करीब 2,060 रुपए की आई-94 फॉर्म फीस देने का आदेश दिया है। इसके अलावा छात्रों से उनके सोशल मीडिया अकाउंट्स की सार्वजनिक जानकारी मांगी जा रही है और उनकी गहन जांच की जा रही है। किसी भी प्रदर्शन या नियम उल्लंघन की स्थिति में वीजा रद्द होने का खतरा है।

नई पॉलिसी के मुताबिक छात्र वीजा की वैधता अब केवल 2 से 4 सालों तक सीमित की गई है। पहले छात्र अपनी पढ़ाई पूरी होने तक रुक सकते थे, लेकिन अब समयसीमा खत्म होने पर उन्हें एक्सटेंशन के लिए दोबारा प्रक्रिया से गुजरना होगा। वीजा इंटरव्यू की प्रतीक्षा भी अब लंबी हो गई है। चीन से आई रिपोर्ट्स बताती है कि वीजा इंटरव्यू की देरी से कई छात्र हतोत्साहित हैं और हांगकांग की यूनिवर्सिटीज में अमेरिकी ट्रांसफर रिक्वेस्ट की भरमार है।

ट्रंप प्रशासन का मकसद विदेशी छात्रों की संख्या कम करना है। कुछ छात्रों को राजनीतिक गतिविधियों के आरोप में वीजा रद्द कर देश छोड़ने को मजबूर किया गया है। कई मामलों में वीजा अपॉइंटमेंट्स अस्थायी रूप से रोक दिया गया है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में यह सख्ती अमेरिका के लिए नुकसानदेह साबित हो सकती है। नेशनल एसोसिएशन फॉर फॉरेन स्टूडेंट्स अफेयर्स (एनएएफएसए) के मुताबिक इस फॉल सेमेस्टर में अमेरिका में विदेशी छात्रों की संख्या 30-40 फीसदी तक गिर सकती है, जिससे अमेरिकी अर्थव्यवस्था को अनुमानित 7 बिलियन डॉलर यानी करीब 61,000 करोड़ रुपए का नुकसान हो सकता है। विदेशी छात्रों पर निर्भर कॉलेज संकट में हैं।

इस बदलाव का फायदा ब्रिटेन, हांगकांग, सिंगापुर, मलेशिया, यूएई और कजाकिस्तान जैसे देशों को मिल रहा है। ब्रिटेन अब भारतीय छात्रों के लिए अमेरिका के बाद दूसरा पसंदीदा देश बन रहा है। यहां चीनी और अमेरिकी छात्रों की संख्या बढ़ रही है। खासकर बिजनेस और मैनेजमेंट कोर्सेज की मांग बढ़ी है। एशिया के देशों में वेस्टर्न यूनिवर्सिटीज के सैटेलाइट कैंपस स्थापित हैं, जहां फीस अपेक्षाकृत कम है। हांगकांग में विशेष ऑफर दिए जा रहे हैं कि यदि अमेरिका में वीजा नहीं मिलता, तो छात्र वहीं शिफ्ट हो सकते हैं।

दुबई में पिछले साल विदेशी छात्रों की संख्या 33फीसदी बढ़ी है। वहीं कजाकिस्तान में भी अमेरिकी यूनिवर्सिटीज के कार्यक्रम शुरू हो चुके हैं, जो खासकर चीनी और रूसी छात्रों को आकर्षित कर रहे हैं। अगर ट्रंप की नीतियां जारी रहीं, तो आने वाले सालों में एशिया उच्च शिक्षा का नया वैश्विक केंद्र बन जाएगा। भारतीय छात्रों के लिए यह एक चुनौतीपूर्ण समय जरूर है, लेकिन साथ ही नए अवसरों के द्वार भी खोल रहा है।

अल्प्राजोलम की सप्लाई में शामिल ड्रग्स कार्टेल का भंडाफोड़

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की अपराध शाखा ने मनोरोग में इलाज के लिए काम आने वाली अल्प्राजोलम टैबलेट की सप्लाई में शामिल ड्रग्स कार्टेल का भंडाफोड़ किया है। पुलिस ने दो आरोपियों निशांत पाल और अजय कुमार को गिरफ्तार किया है। इनके कब्जे से 9 किलोग्राम से अधिक अल्प्राजोलम टैबलेट बरामद की गई हैं। बरामद की गई टैबलेट की कीमत अंतराष्ट्रीय बाजार में लगभग 1 करोड़ रुपये आंकी जा रही है। अपराध शाखा के पुलिस उपायुक्त संजीव कुमार यादव के अनुसार, शाखा की एएनटीएफ में तैनात एएसआई सतबीर सिंह व अन्य को दिलशाद गार्डन मेट्रो स्टेशन के पास ड्रग्स व नशे की आपूर्ति की 28 जुलाई को सूचना मिली। इसके बाद इंस्पेक्टर प्रवीण राठी की टीम ने अप्सरा बॉर्डर-आनंद विहार आईएसबीटी फ्लाईओवर के पास घेराबंदी की और गाजियाबाद के साहिबाबाद स्थित गिरधर एन्क्लेव निवासी निशांत पाल को मोटरसाइकिल के साथ गिरफ्तार किया। उसकी मोटरसाइकिल पर रखे एक कार्टन से कुल 6.240 किलोग्राम अल्प्राजोलम टैबलेट (लगभग 60,000 टैबलेट के बराबर) बरामद की गई। आरोपी निशांत पाल के खुलासे पर गाजियाबाद के साहिबाबाद स्थित अशोक वाटिका निवासी अजय कुमार को गिरफ्तार किया गया और उसकी निशानदेही पर गाजियाबाद के राजेंद्र नगर स्थित गोदाम से 3 किलोग्राम से अधिक अल्प्राजोलम टैबलेट की अतिरिक्त बरामदगी की गई। निशांत पाल ने 12वीं कक्षा (बायो स्ट्रीम) तक पढ़ाई की है। वह मेडिकल स्टोर में काम करता था। वह दिल्ली-एनसीआर के विभिन्न हिस्सों में बिना डॉक्टर के पर्चे व बिल के मांग पर प्रत्येक डिलीवरी के लिए अतिरिक्त पैसे लेकर अल्प्राजोलम टैबलेट की सप्लाई करता था। अजय 12वीं कक्षा (बायो स्ट्रीम) तक पढ़ा है। वह एमआर के साथ काम करता था। वह दिल्ली-एनसीआर के विभिन्न हिस्सों में बिना डॉक्टर के पर्चे व बिल के मांग पर अल्प्राजोलम टैबलेट की आपूर्ति के लिए बिचौलिये के रूप में काम करता था और प्रत्येक डिलीवरी के लिए कमीशन लेता था।

ढाई साल का बच्चा नाली में गिरकर सीवर में पहुंचा

कौमी पत्रिका

नई दिल्ली। नरेला औद्योगिक क्षेत्र के खेड़ाखुर्द गांव में शनिवार सुबह गली में खेलने के दौरान ढाई साल का बच्चा नाली में गिर गया। नाली से होता हुआ वह सीवर में चला गया। करीब पांच घंटे तक चले सर्च आपरेशन के बाद बच्चे को सीवर से बाहर निकाला गया। उसे राजा हरिश्चंद्र अस्पताल ले जाया गया, जहां डाक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। बच्चे की शिनाख्त निकुंज के रूप में हुई है। जानकारी के मुताबिक निकुंज अपने पिता पंकज, मां और दो बड़ी बहनों के साथ खेड़ाखुर्द स्थित लोहार वाली गली में रहता था। शनिवार सुबह करीब दस बजे निकुंज घर के बाहर गेंद खेल रहा था। गेंद नाली में चली गई। वह गेंद निकालने के लिए नाली की ओर दौड़ा, तभी उसका पैर फिसल गयाऔर वह नाली में गिर गया। नाली से होते हुए वह सीधा सीवर के अंदर चला गया। बारिश होने की वजह से नाले में पानी का तेज बहाव था। निकुंज के गायब होने की जानकारी के बाद परिवार वालों ने उसकी तलाश शुरू की। परिवार वालों ने आस पास के सीसीटीवी कैमरे की जांच की, जिसमें पता चला कि बच्चा नाली में गिर गया है। पीड़ित परिवार ने इसकी जानकारी तुरंत पुलिस को दी। पुलिस और अन्य विभाग की टीम मौके पर पहुंच गई। पुलिस और ग्रामीणों ने बच्चे की तलाश शुरू की। बाहरी उत्तरी जिला पुलिस उपायुक्त हरेश्वर वी स्वामी ने बताया कि बच्चे के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पुलिस घटना की जांच कर रही है। बच्चे को बचाने के लिए मेनहोल में कूदे ग्रामीण बच्चे के चाचा मोहित ने बताया कि लोगों को जब घटना की जानकारी मिली तो

वह बच्चे की जान बचाने के लिए मेनहोल में कूद गए। तीन से चार मेनहोल में बच्चे का कुछ पता नहीं चला। लोग अर्थ मूवर मशीन लेकर पहुंचे। सड़क तोड़कर सीवर तोड़ी गई, बावजूद बच्चे का कुछ पता नहीं चला। हादसे वाले स्थान से करीब 200 से 300 मीटर एक अन्य सीवर का ढक्कन खोलने के बाद बच्चा मेनहोल में फंसा मिला। बच्चे को तुरंत बाहर निकालकर पास के अस्पताल में ले जाया गया। जहां बच्चे को मृत घोषित कर दिया गया। इकलौते बेटे की मौत से परिवार का रो-रोकर बुरा हाल है। वेल्डिंग का कारोबार करने वाले पिता पंकज ने बताया कि राखी के त्योहार को लेकर उनके घर उनकी बहन आने वाली थी। वह अपने बच्चों को लेकर बस स्टैंड के पास गया था। वहां से आने के बाद वह बच्चों को घर पर छोड़कर अपने काम पर चले गए। पंकज ने बताया कि उनकी बेटियां अपने भाई को राखी बांधने के लिए उत्साहित थी, लेकिन राखी बांधने से पहले ही उनका इकलौता बेटा उनसे काफी दूर चला गया। उन्होंने बताया कि उनकी पत्नी को लगा कि वह अपने बेटे को लेकर गए हैं। बेटे के नहीं मिलने पर उनकी पत्नी ने उन्हें फोन किया था। उनके मना करने पर पत्नी ने बताया कि निकुंज काफी देर से उन्हें नहीं मिल रहा है। इस बात की जानकारी मिलते ही वह घर की तरफ भागे। बच्चे के चाचा मोहित ने बताया कि इस हादसे को लेकर कोई भी विभाग जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार नहीं है। उनके मुताबिक करीब 30 वर्ष पहले ग्रामीणों ने खुद ही नाली बनवाई थी। किसी भी विभाग ने इस नाली की जिम्मेवारी नहीं ली थी। जहां बच्चा गिरा वहां जाली लगी थी। जिसे किसी ने चोरी कर ली। उसके बाद से नाली खुली हुई थी।

मेट्रो की गोल्डन लाइन के निर्माणाधीन स्थल के पास सड़क धंसी

नई दिल्ली। वसंत कुंज स्थित मसूदपुर फ्लाईओवर के पास शनिवार को दिल्ली मेट्रो की गोल्डन लाइन के निर्माणाधीन स्थल पर सड़क का एक हिस्सा धंस गया। यह हादसा डीएमआरसी के निर्माणाधीन स्थल पर दीवार गिरने के बाद हुआ। अधिकारियों के मुताबिक, घटना डी-6 इलाके के पास हुई। ट्रैफिक पुलिस ने बताया कि फोर्टिस अस्पताल से महिपालपुर जाने वाली सड़क को यातायात के लिए बंद कर दिया गया है। यात्रियों को अरुणा आसफ अली मार्ग से जाने की सलाह दी गई है। यह धंसाव फुटपाथ के पास लगभग 10 से 15 मीटर क्षेत्र में हुआ जो मेट्रो के खुदाई कार्य वाले हिस्से के पास था। डीएमआरसी ने स्पष्ट किया कि इस घटना में किसी व्यक्ति या सामग्री को कोई नुकसान नहीं हुआ है। मसूदपुर फ्लाईओवर के नीचे फुटपाथ के पास वाली सड़क पर एहतियातन बैरिकेड लगा दिया गया है। साथ ही बहाली का काम तुरंत शुरू कर दिया गया है। डीएमआरसी ने दिल्ली ट्रैफिक पुलिस के साथ मिलकर यातायात को सुचारू रूप से मोड़ने की व्यवस्था की है

परवीना के सामने ही मौत के मुंह में समा गए पति-बेटी, देवरानी और उसकी पुत्री ने भी तोड़ा दम

कौमी पत्रिका

नई दिल्लीनई दिल्ली। सुबह के नौ बज रहे थे, चाय-नाश्ता करने के बाद सभी अपनी-अपनी झुग्गी में बैठे हुए थे। रबीबुल की पत्नी परवीना को खाना बनाने की चिंता सता रही थी। उसने पति से खाना बनाने की बात की और कुछ सामान लेने के लिए बाहर निकली। जैसे ही झुग्गी से बाहर आई तो तेज आवाज के साथ 10 फीट ऊंची दीवार झुग्गियों पर आ गिरी। बदहवास परवीना झुग्गी की ओर भागी। वह रोते हुए चिल्ला रही थी। जल्दी-जल्दी मलबा हटाकर वह एक पल में अपनी बेटी और पति को निकाल लेना चाहती थी लेकिन वह मलबा हटाती रही। 14 इंच मोटी दीवार का खासा मलबा था। इस बीच बाकी लोग भी मदद को आ गए। कुछ देर बाद बेटी और पति निकले थे उनकी सांसें थम चुकी थीं। हादसे में परवीना के पति, बेटी, देवरानी और उसकी बेटी की मौत हो गई जबकि देवर हसीबुल जिंदगी के लिए अस्पताल में जंग लड़ रहा है। अब बार-बार परवीना रोते-रोते बेहोश हुए जा रही थी। बाकी परिजन उसको समझाने का प्रयास कर रहे थे। एक साथ कई लोगों की मौत की खबर सुनकर उनके आसपास रहने वाले रिश्तेदार वहां जमा हो गए। एक परिजन ने बताया कि पश्चिम बंगाल और असम के रहने वाले करीब 20-25 परिवार प्लॉट में झुग्गी डालकर यहां रह रहे हैं। लोगों ने लकड़ी और तिरपाल की मदद से झुग्गियां बनाई हैं। प्लॉट मालिक उनसे एक-एक हजार रुपये किराये भी वसूलता है। सभी लोग प्लास्टिक का कूड़ा इकट्ठा करके लाते हैं। बाद में यहां मौजूद महिलाएं इस कूड़े को अलग-अलग कर बेच देती हैं। इस पूरे काम में परिवार को 400 से 500 रुपये बच जाते हैं, उसी से पूरे परिवार का खर्चा चलाते हैं। कुछ लोग दिहाड़े मजदूरी भी करते हैं। पिछले तीन साल से परिवार इन झुग्गियों में रह रहे हैं। दूसरी ओर एक झुग्गी में मुत्तू अली बेटी मोइना (12) के साथ रह रहा था। मुत्तू अली की पत्नी की पहले ही मौत हो चुकी थी। उसकी एक ही बेटी है। शनिवार को हुए हादसे के समय मोइना बाहर निकली थी। इस बीच दीवार गिरी और मुत्तू की मौत हो गई। अब मोइना अनाथ हो गई है। उसके माता-पिता दोनों की मौत हो चुकी है। बच्ची को फिलहाल पड़ोसियों ने अपने पास रखा हुआ है। 17 मई 2025 पहाड़गंज के आराकशा इलाके में निर्माणाधीन इमारत की दीवार गिरने से तीन मजदूर की मौत। बारिश के दौरान यह हादसा हुआ। दो मजदूरों को तुरंत बाहर निकाला गया, बाद में मलबे से एक अन्य को निकाला। दक्षिण-पूर्व दिल्ली के जैतपुर स्थित हरिनगर पार्ट-2 में शनिवार सुबह बारिश के दौरान एक बड़ा हादसा हो गया। यहां एक समाधि स्थल की ऊंची दीवार खाली प्लाट में बनी झुग्गियों पर भरभराकर गिर गई। दीवार गिरते ही मौके पर अफरा-तफरी मच गई। शोर-शराबे के बीच पड़ोसी मदद को भागे। बाद में पुलिस व दमकल विभाग को सूचना दी गई। स्थानीय लोगों की मदद से पुलिस ने मलबे में दबे आठ लोगों को तुरंत एम्स ट्रामा सेंटर के अलावा सफदरजंग अस्पताल भेजा। जहां दो मासूम बच्चियों समेत सात लोगों को मृत घोषित कर दिया गया। एक अन्य युवक की हालत बेहद नाजुक बनी हुई है। हादसे की खबर मिलते ही दिल्ली पुलिस के कई वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंच गए। पुलिस के अलावा दमकल की आठ गाड़ियां, एनडीआरएफ, नगर निगम, एंबुलेंस और अन्य बचाव दल ने काम शुरू कर दिया। दोपहर बाद तक बचाव का काम चला। शुरुआती जांच के बाद पुलिस ने लापरवाही से मौत और लापरवाही बरतकर चोट पहुंचाने का मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस बाकी लोगों के बयान लेकर मामले की

दिल्ली में ट्रिपल मर्डर: करावल नगर में पति ने किया पत्नी और दो बेटियों का कत्ल

नई दिल्ली। देश की राजधानी दिल्ली तीन हत्याओं से दहल उठी। एक शख्स ने अपनी पत्नी और दो बेटियों को मार डाला। रक्षाबंधन के दिन हुई सनसनीखेज वारदात से इलाके में सनसनी फैल गई। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर फरार आरोपी की तलाश शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार, दिल्ली के करावल नगर इलाके में प्रदीप नाम के एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी और पांच और सात साल की दो बेटियों की हत्या कर दी। वारदात को अंजाम देकर आरोपी फरार है।पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज कर लिया है। साथ ही आरोपी की तलाश शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार, शनिवार को सुबह लगभग 07-15 बजे करावल नगर पुलिस थाने में एक महिला और उसकी दो बेटियों की मौत की सूचना मिली। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस को लगभग 28 वर्षीय एक महिला

और उसकी लगभग 7 और 5 वर्ष की दो बेटियां अपने कमरे में मृत मिलीं। अपराध और एफएसएल टीमों ने घटनास्थल से सबूत जुटाए। इसके साथ ही पुलिस ने आसपास के लोगों से मामले को लेकर पूछताछ की। मृतकों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए जीटीबी अस्पताल भेजा गया। करवल नगर पुलिस थाने में धारा 103(1) बीएनएस के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मृतका के पति का पता लगाने के लिए टीमें तैनात की गई हैं। जांच जारी है।

100 फीट लंबी दीवार में नहीं था एक भी कॉलम, कोई बीनता था कूड़ा तो कोई था मजदूर

नई दिल्ली। दक्षिण-पूर्व दिल्ली के जैतपुर स्थित हरिनगर पार्ट-2 में शनिवार सुबह बारिश के दौरान एक बड़ा हादसा हो गया। यहां एक समाधि स्थल की ऊंची दीवार खाली प्लाट में बनी झुग्गियों पर भरभराकर गिर गई। दीवार गिरते ही मौके पर अफरा-तफरी मच गई। शोर-शराबे के बीच पड़ोसी मदद को भागे। बाद में पुलिस व दमकल विभाग को सूचना दी गई। स्थानीय लोगों की मदद से पुलिस ने मलबे में दबे आठ लोगों को तुरंत एम्स ट्रामा सेंटर के अलावा सफदरजंग अस्पताल भेजा। जहां दो मासूम बच्चियों समेत सात लोगों को मृत घोषित कर दिया गया। एक अन्य युवक की हालत बेहद नाजुक बनी हुई है। हादसे की खबर मिलते ही दिल्ली पुलिस के कई वरिष्ठ अधिकारी मौके पर पहुंच गए। पुलिस के अलावा दमकल की आठ गाड़ियां, एनडीआरएफ, नगर निगम, एंबुलेंस और अन्य बचाव दल ने काम शुरू कर दिया। दोपहर बाद तक बचाव का काम चला। शुरुआती जांच के बाद पुलिस ने लापरवाही से मौत और लापरवाही बरतकर चोट पहुंचाने का मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस बाकी लोगों के बयान लेकर मामले की जांच कर रही है। छानबीन के दौरान पुलिस को पता चला है कि समाधि स्थल को मिट्टी का भराव करके बनाया गया था। खाली प्लाट में बनी झुग्गियां काफी गहराई में थीं। बारिश की वजह से दीवार की बुनियाद में पानी गया। बिना पिलर के बनी ऊंची दीवार अचानक भरभराकर जमींदोज हो गई। क्राइम टीम व एफएसएल की टीम ने मौके से साक्ष्य जुटाए हैं। दक्षिण-पूर्व जिला पुलिस उपायुक्त डॉ. हेमंत तिवारी ने बताया कि उनकी टीम को शनिवार सुबह करीब 9.13 मिनट पर सूचना मिली थी कि जैतपुर स्थित मोहन बाबा मंदिर, हरिनगर पार्ट-2 में एक दीवार गिर गई है। घटना से थाना नजदीक ही थी। चंद ही मिनटों में कई पुलिस के जवान मौके पर पहुंच गए और लोगों के साथ मिलकर बचाव कार्य शुरू कर दिया। बाद में सूचना मिलने के बाद एनडीआरएफ, नगर निगम व अन्य टीम वहां पहुंची। जेसीबी की मदद से मलबा हटाया गया। छानबीन के दौरान पता चला है कि गांव के पूर्व प्रधान और उनकी पत्नी की यहां समाधि बनी हुई है। समाधि बनाने के लिए उसके मालिकों ने कई फीट उसका भराव किया हुआ है। ऐसे में समाधि स्थल की दीवार खाली प्लाट में 10 फीट हो गई थी। इसी दीवार से लगकर झुग्गियां बनी हुई थीं। यहां पश्चिम बंगाल और असम के लोग रहते हैं। बारिश के दौरान करीब 90 फीट लंबी दीवार छह झुग्गियों पर गिर गई। हादसे के समय चार झुग्गियों में ही यह सभी लोग मौजूद थे, जो मलबे के नीचे दब गए। मरने वालों में एक ही परिवार के चार लोग भी शामिल हैं। सभी कूड़ा बीनने के अलावा मजदूरी करते थे।

तेज रफ्तार गाड़ी ने दो लोगों को कुचला, एक शख्स की मौके पर ही मौत

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली में एक बार फिर बेकाबू तेज रफ्तार थार का कहर देखने को मिला है। थार ने सड़क पर पैदल चल रहे दो लोगों को कुचल दिया। जिनमें से एक की मौके पर ही मौत हो गई और दूसरे की हालत गंभीर बताई जा रही है। जानकारी के मुताबिक, हादसा नई दिल्ली के चाणक्यपुरी इलाके में हुआ है। थार गाड़ी ने दो लोगों को टक्कर मार दी। हादसे में एक शख्स की मौके पर ही मौत हो गई है, जबकि दूसरे को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना 11 मूर्ति के पास हुई है। बताया जा रहा है कि सड़क पार करने के दौरान हादसा हुआ है। घटना को अंजाम देने वाले चालक को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है और उससे पूछताछ कर रही है। गाड़ी से शराब की बोतलें मिली हैं। फोरेंसिक टीम से पूरे वाहन की जांच कराई जा रही है। घायल शख्स अभी बयान देने की हालत में नहीं है, पुलिस मरने वाले शख्स की पहचान करने में जुटी है। नई दिल्ली डीसीपी देवेश कुमार महला ने कहा, 卐आज चाणक्यपुरी में सुबह करीब 6-30 बजे हमारी पेट्रोलिंग गाड़ी ने देखा कि एक एक्सीडेंट हुआ है। कार चालक का नाम आशीष है और वो गुडगांव से शकरपुर की ओर जा रहा था। गाड़ी उसके दोस्त की थी। फुटपाथ पर उसकी टक्कर 2 लोगों से हुई, जिसमें एक की मौत हो गई और दूसरा घायल है। कार चालक को गिरफ्तार कर लिया गया है। आगे की जांच जारी है। हम पीड़ितों की पहचान करने की कोशिश कर रहे हैं।

दिल्ली में संदिग्ध हालत में मिले दो शव, एक 37 तो दूसरा है 40 साल का

नई दिल्ली। मॉडल टाउन और राज पार्क थाना इलाके में पुलिस को संदिग्ध हालत में दो शव मिले हैं। दोनों शव की अभी तक शिनाख्त नहीं हुई है। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर शवगृह में सुरक्षित रखवा दिया है। पुलिस के मुताबिक, मृतकों के पास से ऐसे कोई कागजात नहीं मिली, जिससे की उनकी पहचान हो सके। वहीं, पुलिस शव की शिनाख्त के लिए स्थानीय लोगों से पूछताछ कर रही है। इसके अलावा पुलिस घटनास्थल पर लगे सीसीटीवी फुटेज भी खंगाल रही है। मॉडल टाउन पुलिस के मुताबिक, आजाद पुर स्थित एमसीडी कॉलोनी के मदर डेयरी के पास एक शव के पड़े होने की सूचना मिली। सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर आसपास की जांच की, लेकिन पुलिस को ऐसा कोई सुराग नहीं मिला, जिससे की शव की पहचान हो सके। जानकारी के मुताबिक, यह शव एक युवक का है और उसकी उम्र करीब 37 वर्ष बताई जा रही है। पुलिस ने इस शव को बाबू जग जीवन राम अस्पताल के शवगृह में पोस्टमार्टम के लिए रखवा दिया है। वहीं, दूसरी ओर राजा पार्क थाना पुलिस के मुताबिक दूसरा शव सात अगस्त को सुल्तानपुरी-नांगलोई अंडरपास से बरामद किया गया है। यहां से भी पुलिस को कोई जानकारी नहीं मिली है, जिससे की इसकी पहचान हो सके। यह शव 40 वर्षीय एक शख्स का बताया जा रहा है। पुलिस ने शव को मंगोलपुरी स्थित संजय गांधी अस्पताल के शवगृह में सुरक्षित रखवा दिया है। फिलहाल पुलिस दोनों शवों की पहचान में जुटी है।

एटीएम के कैश डिस्पेंसर में धातु लगाकर उड़ाते थे पैसे, दो गिरफ्तार

नई दिल्ली। मंडावली थाना पुलिस ने एटीएम में नोटों को फंसाने के लिए कैश डिस्पेंसर में धातु की प्लेट लगाकर ग्राहकों के पैसे उड़ाने वाले दो जालसाजों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इनके कब्जे से दस हजार रुपये बरामद किए हैं। आरोपियों की पहचान लोनी गाजियाबाद निवासी आस मोहम्मद और वहाजुद्दीन के रूप में हुई है पूर्वी जिला पुलिस उपायुक्त अभिषेक धानिया ने बताया कि 5 अगस्त को शिकायतकर्ता चंद्रशेखर ने मंडावली पुलिस थाने में सूचना दी कि मंडावली के सोनिया विहार सब्जी मंडी के पास खाते से पैसे निकाल लिए गए हैं। उन्होंने बताया कि लेन-देन के दौरान एटीएम से नकदी नहीं निकली, लेकिन मशीन के अंदर से सर्वर समस्या का हवाला देते हुए बताया गया कि पैसे डेबिट नहीं हुए हैं। कुछ देर बाद उनके पास पैसे निकाले जाने का संदेश मिला। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की। पुलिस ने 7 अगस्त को दो आरोपियों को गाजियाबाद के लोनी से गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में आरोपी वहाजुद्दीन ने बताया नोटों को फंसाने के लिए एटीएम के कैश डिस्पेंसर में धातु की प्लेट डालते थे और भ्रामक ऑडियो संदेश चलाने के लिए एक स्पीकर लगा देते थे। धातु रुपये को मशीन के अंदर ही रोक देता था। मशीन के अंदर लगाए गए स्पीकर से सर्वर की समस्या का संदेश दिया जाता था। जिससे ग्राहकों को विश्वास हो जाता था कि पैसे नहीं निकले हैं।

तीन कट ऑफ में दाखिला नहीं ले सकी छात्राओं को स्पेशल में मिलेगा मौका

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के शैक्षणिक सत्र 2025-26 में स्नातक प्रोग्राम में दाखिले की रेस जारी है। जहां नियमित कॉलेजों में दाखिले के चांस सीमित हो गए हैं, वहीं अभी नॉन कॉलिजिऐट वीमेंस एजुकेशन बोर्ड (एनसीवेब) में छात्राओं के लिए दाखिले की संभावना बनी हुई है। शनिवार को एनसीवेब में दूसरी कट ऑफ के दाखिले फीस भुगतान करने के साथ समाप्त हो गए। अब सोमवार को तीसरी कट ऑफ जारी होगी। इसके बाद स्पेशल कट ऑफ निकाली जाएगी। इसमें उन्हीं छात्राओं को दाखिले का अवसर मिल सकेगा जिनको तीन कट ऑफ में दाखिला नहीं मिला है। एनसीवेब में दो स्नातक प्रोग्राम बीए व बीकॉम प्रोग्राम की कुल 15,200 सीटों में से दूसरी कट ऑफ तक आठ हजार से अधिक सीटें भर गई हैं। इस तरह से अब भी छात्राओं के दाखिले की संभावना बनी हुई है। अब एनसीवेब की तीसरी कट ऑफ 11 अगस्त को जारी होगी। पहली दो कट ऑफ में छात्राओं को दाखिले के लिए तीन दिन मिले थे। वहीं, तीसरी कट ऑफ में दो दिन (12 व 13 अगस्त) ही मिलेंगे। इस कट ऑफ के आधार पर छात्राएं 15 अगस्त शाम पांच बजे तक फीस का भुगतान कर सकेंगी। इस कट ऑफ के बाद एनसीवेब प्रशासन खाली सीटों की समीक्षा करेगा। तब 18 अगस्त को स्पेशल कट ऑफ जारी की जाएगी। जिसके आधार पर 23 अगस्त तक दाखिला लेकर फीस का भुगतान किया जा सकेगा। चौथी कट ऑफ भी जारी की जाएगी। इसके बाद सीट की उपलब्धता के आधार पांचवीं कट ऑफ एक सितंबर को जारी होगी। इसके बाद भी सीटें शेष रहने पर एनसीवेब पहली से पांचवीं कट ऑफ में दाखिला नहीं पाई छात्राओं के लिए एक स्पेशल ड्राइव आठ सितंबर को जारी करेगा।

NAME CHANGE
It is for general information that I, ABHISHEK S/o VINOD KUMAR SINGH R/o House No. H-371, Old Seemapuri, East Delhi, Delhi-110095, declare that name of my father has been wrongly written as VINOD SINGH in my 10th and 12th class Educational Documents. The actual name of my father is VINOD KUMAR SINGH, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, SHOBHA JAIN W/o ADITYA JAIN, R/o House Number-1/6522, Gali Number-4, East Rohtash Nagar, Shahdara, North East Delhi, Delhi-110032, have changed the name of my minor daughter PARI aged 16 years and she shall hereafter be known as PARI JAIN.

NAME CHANGE
I, Salmuddin/ Salmu S/o Nabba R/o Tabela Mohalla, Ghasera(161), Ghasera, Mewat, Haryana-122103 have changed my name to Salmuddin.

NAME CHANGE
I, Radhakant Poddar S/o Arjun Poddar R/o Bhatgama Mandal Tola, Bhogakariat, Purnia, Bihar-854337 declare that Radhakant Poddar and Radhey Shyam both are same person I.e.myself

PUBLIC NOTICE
NOTICE is hereby given to public at large that my clients **Anil** is the owner of Northern Side Portion of Plot No. G-47 area measuring 25 sq. yds. out of Khasra No. 66/8 situated in the village of Hastsal abadi known as Om Vihar Phase-V Near Mohan Nagar Garden New Delhi vide General Power of Attorney , Agreement to Sell & WILL dated 15.01.2013 from Devendra Prasad who is the owner of abovementioned property vide GPA, Agreement to Sale & WILL dated 12.08.2024 and Intend to mortgage the said property with **Aditya Birla Housing Finance Ltd.** If any person(s) has/have any objection(s) or claim(s) with respect to the right, title or interest in the said property may please contact us within 07 days from the date of this notice on the number & address mentioned herein below, failing which my client(s) shall not be held responsible in any manner whatsoever.
Khaitan & Khaitan
A-38 Kailash Colony,
New Delhi-110048,
Ph. No: 011-49774545

NAME CHANGE
It is for general information that I, ASHISH SHARMA S/O OM PRAKASH SHARMA R/O J-1/1, PHASE-1, RAM MANDIR, BUDH VIHAR, SULTANPURI C-BLOCK, NORTH WEST DELHI, DELHI-110086 , declare that name of my wife and my minor son has been wrongly written as PREETI and ABHIMANYU in my minor son ABHIMANYU SHARMA aged 13 years in his School Record. The actual name of my wife and my minor son are PRITI SHARMA and ABHIMANYU SHARMA, which may be amended accordingly.

सार्वजनिक सूचना
आम जनता को सूचित किया जाता है कि मेरी मुवक्किल **श्रीमती पिंकी सैनी**, खसरा संख्या 314 एमआई, हदबस्त महिउद्दीनपुर, मैनपुर, परगना जलालाबाद, तहसील एवं जिला गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश में स्थित प्लॉट संख्या 02, जिसका क्षेत्रफल 67 वर्ग गज अर्थात 56.01 वर्ग मीटर है, की बिक्री विलेख दिनांक 20.04.2012 के अनुसार है, जो कि दस्तावेज संख्या 4746, पुस्तक संख्या 1, खंड संख्या 5756, पृष्ठ संख्या 231 से 250 तक, 20.04.2012 को पंजीकृत है, एसआरओ-II-गाजियाबाद इसकी मालिक है और उक्त संपत्ति को **मोतीलाल ओसवाल होम फाइनेंस लिमिटेड** के पास बंधक रखने का इरादा रखती है। खसरा संख्या 314 में से प्लॉट संख्या 02, जिसका क्षेत्रफल 67 वर्ग गज यानि 56.01 वर्ग मीटर है, जो एसआरओ-II-गाजियाबाद में 01.07.2011 को दस्तावेज संख्या 6595, पुस्तक संख्या 1, खंड संख्या 4921, पृष्ठ संख्या 299 से 318 के रूप में पंजीकृत है, के संबंध में श्री विजेन्द्र सिंह द्वारा श्रीमती बसंती देवी के पक्ष में दिनांक 01.07.2011 को निष्पादित मूल बिक्री विलेख खो गया है/गुम हो गया है। उक्त दस्तावेज से संबंधित कोई भी व्यक्ति अपने जोखिम और जिम्मेदारी पर ऐसा करेगा। मालिक ऐसे व्यक्ति द्वारा उठाए गए किसी भी नुकसान के लिए किसी भी तरह से उत्तरदायी नहीं होगा। यदि किसी को ये दस्तावेज मिले या उपर्युक्त दस्तावेज का कोई दुरुपयोग दिखाई दे, तो संबंधित व्यक्ति नीचे दिए गए पते पर अधोहस्ताक्षरी को लिखित रूप से सूचित करे।
Khaitan & Khaitan
A-38 Kailash Colony,
New Delhi-110048,
Ph. No: 011-49774545

NAME CHANGE
I, RAM LAKHAN GAUTAM S/O GANGA RAM R/O H NO 31 BHIM COLONY OM VIHAR ROAD JILLE COLONY PALAM VIHAR EXTENSION CARTARPURI GURGAON HARYANA122017 I HAVE CHANGED MY NAME TO RAM LAKHAN

NAME CHANGE
I, TAUKIR HUSSAIN S/O ZAHIR HASAN, R/O HOUSE NO. 133-133A, BLOCK R-EXTENSION,MOHAN GARDEN, UTTAM NAGAR, WEST DELHI, DELHI-110059, have changed my name from TAUKIR HUSSAIN to TAUKIR HASAN for all future purposes.

NAME CHANGE
I, RAJENDER GUPTA S/O JAI PRAKASH GUPTA residing at 31/11 A GALI NO- 4 DHARAM SINGH COLONY VISHWAS NAGAR DELHI-110032 . have changed my name to RAJENDRA GUPTA for all future purposes.

NAME CHANGE
I AZRA YASMIN alias AZRA YASMEEN W/O MOHD SAYEED AHMAD D/O MD QASIM R/O G-49, BATLA HOUSE, OKHLA, NEW DELHI-110025 have changed my name from AZRA YASMEEN to AZRA YASMIN and shall hereafter be known as AZRA YASMIN for all purposes.

NAME CHANGE
I , hitherto known as Suresh Kumar S/O Chiranjee Lal Bairwa, R/O A-2/735, J J Colony, Madanpur Khadar, Sarita Vihar, South Delhi, Delhi - 110076,have changed my name and shall hereafter be known as SURESH KUMAR BAIRWA.

NAME CHANGE
I hitherto known as Ikra alias Ekra D/O Mohd Aarif, R/O D-709, Jahangir Puri, DIST: North West Delhi, Delhi-110033, have changed my name and shall hereafter be known as Ekra.

NAME CHANGE
I, Avadh Nath S/O: Ram Avtar, R/O K-2/24A, Budh Vihar Phase-1, Budh Vihar, North West Delhi-110086, have changed the name of my minor son namely ADITYA aged 15 years and he shall hereafter be known as ADITYA KUMAR GAUTAM.

NAME CHANGE
I hitherto known as Aman alias Titu S/O Radhey Shyam, R/O House number -16/21, Sultanpur Dabas, Sultanpur Dabas, Bawana, North West Delhi, Delhi 110039, have changed my name and shall hereafter be known as AMAN.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, SAJDA W/o AMIRUDDIN, R/o 1375, Y-Block, Mangol Puri North West Delhi Delhi-110083 declare that name of mine has been wrongly written as SAYEDA in my minor son namely RIHAN, aged 16 years in his school record. The actual name of mines SAJDA, which may be amended accordingly.

NAME CHANGE
I, RAJNI DEVI W/O VINOD KUMAR R/O 202, GREATER NOIDA, BHUD COLONY, SURAJPUR, GAUTAM BUDDHA NAGAR, UTTAR PRADESH-201306 have changed the name of my minor daughter ABHIKA aged 15 years and she shall hereafter be known as AVIKA.

NAME CHANGE
I, LAXMAVVA Mother of No. 2620457M Rank-SEP Name-PANDURANG L SIDDANNAVAR residing at SIDDANNAVAR STREET MADAMAGERI, TEH-SAUNDATTI, DIST-BELGAUM, KARNATAKA-591129, have changed my name from LAXMAVVA to LAXMAVVA LAXMAPPA SHIDDANNAVAR for all future purposes vide Affidavit dated 09/08/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, SAHIDUL HAQUE Father of TOUHID ALAM HAQUE R/o FLAT NO-95, U/G/FLOOR, A-BLOCK, GALI NO-12, ROAD NO-4, MAHIPALPUR, PO-GURGAON ROAD, DIST-SOUTH WEST DELHI, DELHI-110037, have changed my name from SAHIDUL HAQUE to SAHIDUL HOQUE for all future purposes.

NAME CHANGE
I, GADDAIAH Father of No. 2618551X Rank-L/NK Name-VAJARAPU DURGA RAO residing at DOOR NO 24-98-1/1, GONTHINAVANIPALEM PEDDAGANTYADA (P.O), GAJUWAKA (T.O) (P.S) (T.K), VISAKHAPATNAM (DIST), ANDHRA PRADESH-530026, have changed my name from GADDAIAH to VANJARAPU GADDAIAH for all future purposes vide Affidavit dated 09/08/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
It is for general information that I PRATEEK SINGH S/O KRISHAN VIR SINGH R/O M-247, SECTOR-12, PRATAP VIHAR, GHAZIABAD, UP-201009 declare that name of my father has been wrongly written as KRISHNAVIR in my 10th and 12th educational documents. The actual name of my father is KRISHAN VIR SINGH which may be amended accordingly

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, VINEETA MEHTA W/o KAMAL SINGH MEHTA, R/o A-230 Gali No.5, Sindhu Farm road Meethapur, Jaitpur South Delhi-110044, declare that name of mine has been wrongly written as VINITA MEHTA in my minor son namely DEEPAK MEHTA, aged 14 years in his school record. The actual name of mines VINEETA MEHTA which may be amended accordingly

NAME CHANGE
I, SEBESTHI AMMAL Mother of No. 2615208K Rank-HAV Name-JOSEPH VINOTH S residing at DOOR NO-3/391, VPO-MATTIYARENDAL, TEH-MUDUKULATHUR, DIST-RAMANATHAPURAM, TAMIL NADU-623533, have changed my name from SEBESTHI AMMAL to SEBASHTHIYAMMAL for all future purposes vide Affidavit dated 09/08/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, SOOSAI IYNDU KAYAM Father of No. 2615208K Rank-HAV Name-JOSEPH VINOTH S residing at DOOR NO-3/391, VPO-MATTIYARENDAL, TEH-MUDUKULATHUR, DIST-RAMANATHAPURAM, TAMIL NADU-623533, have changed my name from SOOSAI IYNDU KAYAM to SUSAI AINDHUKAYAM for all future purposes vide Affidavit dated 09/08/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, RANGAVVA Mother of No. 2611475N Rank-HAV Name-BASAVARAJ HUNAGUNDI residing at VPO-NEELAGUND, TEH-BADAMI, DIST-BAGALKOT, KARNATAKA-587201, have changed my name from RANGAVVA to RANGAVVA HUNAGUNDI for all future purposes vide Affidavit dated 09/08/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, SUVARNA KUDACHI Mother of No. 2620452N Rank-SEP Name-BHEEMARAJ SHANKAR KUDACHI residing at TALUK-KAGAWAD NEHARU CHOUK AINAPUR, AINAPUR, BELGAUM, KARNATAKA-591303, have changed my name from SUVARNA KUDACHI to SUVARNA SHANKARLING KUDACHI for all future purposes vide Affidavit dated 09/08/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, SHANKAR KUDACHI Father of No. 2620452N Rank-SEP Name-BHEEMARAJ SHANKAR KUDACHI residing at TALUK-KAGAWAD NEHARU CHOUK AINAPUR, AINAPUR, BELGAUM, KARNATAKA-591303, have changed my name from SHANKAR KUDACHI to SHANKARLING SHIVALING KUDACHI for all future purposes vide Affidavit dated 09/08/2025 before Notary Public, Delhi.

PUBLIC NOTICE
GENERAL PUBLIC IS HEREBY INFORMED THAT ORIGINAL POSSESSION CERTIFICATE, ORIGINAL ALLOTMENT LETTER, ORIGINAL LEASE DEED DT. 28.03.2012 (DOC. NO. 6340) ALL ISSUED BY GR. NOIDA IN FAVOUR OF MR. ATAM PARKASH ARORA AND ORIGINAL TRANSFER DEED DT. 29.03.2014 (DOC. NO. 10885) EXECUTED BY MR. ATAM PARKASH ARORA IN FAVOUR OF MR. RAJANISH, ALL DOCUMENTS EXECUTED FOR FLAT NO. 417, GROUND FLOOR, BLOCK B, SECTOR SWNRI, SWARN NAGRI, GR. NOIDA, U.P. HAVE BEEN LOST BY THE CURRENT OWNER MRS. RAJ KUMARI SHARMA S/O MR. PRADEEP SHARMA, R/O, L-4011, ASSOTECH SPRINGFIELDS, NEAR AMRAPALI GRAND, SECTOR-ZETA-1, GR. NOIDA, U.P. AND SAID OWNER MRS. RAJ KUMARI SHARMA PURCHASED THE SAID PROPERTY VIDE TRANSFER DEED DT. 21.09.2016 (DOC. NO. 25810). NOW MRS. SARIKA GUPTA IS GOING TO PURCHASE THE SAID PROPERTY, FROM OWNER / SELLER MRS. RAJ KUMARI SHARMA, WHICH WILL BE MORTGAGED WITH IIFL HOME FINANCE LIMITED AS SECURITY AGAINST HOUSING LOAN FOR PURCHASING OF SAID PROPERTY. PLEASE SUBMIT THE SAID ORIGINAL DOCUMENTS IF FIND BY ANY PERSON. ALSO PLEASE CONTACT WITH WRITTEN OBJECTION LETTER WITH RELEVANT DOCUMENTS WITH UNDERSIGNED IF HAVING ANY OBJECTION IN RESPECT OF SAID PROPERTY/SALE DEED WITHIN 7 DAYS OF THIS PUBLICATION. ITS USE BY ANYONE IS ILLEGAL.
ADITYA VERMA, ADVOCATE
E-16, MANSAROVAR PARK,
SHAHDARA, DELHI-110032
MOBILE NO. 9999042521

कौमी पत्रिका
संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।

Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg
ITO, New Delhi-110002
फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300

E - mail address :
qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in

R.N.I. No.
UP-HIN/2007/21472

Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

निजी अस्पतालों को वॉर्निंग... इलाज से मना किया तो जुर्माना और पैनल से होंगे बाहर

एजेंसी

झज्जर। आयुष्मान भारत स्वास्थ्य बीमा योजना के तहत लाभार्थियों का इलाज नहीं करने वाले निजी अस्पतालों को हरियाणा सरकार ने चेतावनी जारी की है। हरियाणा की स्टेट हेल्थ एजेंसी (एसएचए) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) संगीता तेतरवाल ने बयान जारी कर कहा कि पैनल से जुड़े अस्पताल के खिलाफ अगर मरीजों का इलाज करने से मना किए जाने की शिकायत मिलती है तो जुर्माना लगाया जाएगा। इसके अलावा उनको आयुष्मान भारत के पैनल से बाहर करने व लाइसेंस निलंबित करने की कार्रवाई भी की जा सकती है। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर फीस लेने संबंधी भी कोई शिकायत मिलती है तो उन पर राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण (एनएचए) और एसएचए द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार सख्ती बरती जाएगी। दूसरी तरफ प्रदेश के निजी अस्तपालों में लगातार दूसरे दिन योजना के तहत मरीजों का इलाज नहीं हुआ। किसी भी जिले में ऑपरेशन नहीं किया गया। डॉक्टर दो दिन से इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) की हरियाणा शाखा के आह्वान पर बकाया भुगतान की मांग को लेकर विरोध जता रहे हैं। उन्होंने सभी 22 जिलों में सभी सेवाएं बंद कर रखी हैं। उनकी बकाया राशि को लेकर राज्य की स्टेट हेल्थ एजेंसी (एसएचए) के मुताबिक, सूचीबद्ध अस्पतालों को सभी भुगतान एफआईएफओ (पहले आओ पहले पाओ) पद्धति के अनुसार जारी किए जा रहे हैं।

भितरघात करने वाले कार्यकर्ता भाजपा के कार्यक्रम में नहीं हो सकेंगे शामिल

चंडीगढ़। हरियाणा भाजपा ने चुनावों में भितरघात करने वाले नेताओं के खिलाफ कड़ा रुख अपना लिया है। पार्टी ने सभी जिला अध्यक्षों को निर्देश दिए हैं कि वे उन नेताओं को पार्टी के कार्यक्रमों में शामिल न करें जिन्होंने चुनाव के दौरान पार्टी का साथ छोड़ दिया था। इसके साथ ही इन नेताओं को न तो पार्टी में कोई पद मिलेगा और न ही सरकार में। यह फैसला पिछले दिनों पार्टी की बैठक में लिया गया है। उल्लेखनीय है कि बीते विधानसभा चुनाव के दौरान जब टिकट वितरण हुआ था तो उस दौरान कई भाजपा नेताओं ने पार्टी से बगावत कर ली थी। कई नेताओं ने चुनाव से दूरी बना ली तो कइयों ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया था। इससे चुनाव के समय पार्टी की हालत भी खराब हो गई थी। मगर इसके बावजूद चुनाव में भाजपा ने बहुमत के साथ जीत हासिल की थी। चुनाव जीतने के बाद अब कई लोग फिर से पार्टी में शामिल होना चाहते हैं मगर पार्टी ने स्पष्ट कर दिया है कि ऐसे लोगों को न तो पार्टी के कार्यक्रम में शामिल करना है और न ही कोई पद दिया जाएगा। भाजपा ने यह भी एलान किया है कि यदि कोई दूसरी पार्टी का सदस्य भाजपा में शामिल होना चाहता तो वह आए जरूर मगर उसे कोई पद नहीं दिया जाएगा।

करनाल में फार्मा पार्क निर्माण की बढ़ेगी रफ्तार, पॉलिसी रिन्यू करने को मंजूरी

चंडीगढ़। करनाल में 100 एकड़ में फार्मा पार्क बनाने के लिए तैयार हरियाणा फार्मा पॉलिसी को रिन्यू करने की मंजूरी मिल गई है। वर्ष 2018-19 में बनी हरियाणा की फॉर्मा पॉलिसी वर्ष 2024 में एक्सपायर हो गई थी। इसे फार्मा कारोबारियों की गुहार पर मुख्यमंत्री की तरफ से मंजूरी मिल गई है। करनाल के फार्मा हब बनने से प्रदेश में कारोबार, रोजगार और सरकार के वित्तीय लाभ में इजाफा होगा। हरियाणा फार्मास्युटिकल मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन (एचपीएमए) के राज्य प्रधान आरएल शर्मा के मुताबिक वर्ष 2024 के विधानसभा चुनाव में भाजपा के घोषणा पत्र में करनाल के फार्मा पार्क को पूरा करने का वादा था। चुनाव के बाद मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कारोबारियों से मुलाकात के बाद पॉलिसी को रिन्यू करने की मंजूरी दी। फार्मा पार्क बनने से तकरीबन 30 हजार कुशल और अकुशल कर्मियों के लिए रोजगार के अवसर खुलेंगे। करनाल फार्मा पार्क में देशभर से 150 फार्मा विनिर्माण इकाइयों को स्थापित करने की योजना तैयार है। हरियाणा चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के सचिव राज चावला ने बताया कि वर्तमान में करनाल और आसपास के इलाकों में तकरीबन 150 छोटी-बड़ी फार्मा कंपनियां काम कर रही हैं। इनका सालाना कारोबार एक हजार करोड़ रुपये के करीब है।

सीएम सैनी से मिले पंजाबी कलाकार, प्रदेश में शूटिंग के लिए आमंत्रित किया

चंडीगढ़। पंजाबी फिल्म कलाकारों ने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी से चंडीगढ़ स्थित आवास पर मुलाकात की। इस दौरान मुख्यमंत्री ने पंजाबी कलाकारों को हरियाणा में शूटिंग करने के लिए आमंत्रित भी किया। पंजाबी कलाकारों से मुलाकात की तस्वीर और बातचीत का अनुभव मुख्यमंत्री सैनी ने अपने एक्स हैंडल पर शेयर किया हैं। मुख्यमंत्री सैनी ने पंजाबी कलाकारों के साथ पंजाब व हरियाणा की संस्कृति और कला पर गहनता से चर्चा की। अपने एक्स हैंडल पर सीएम ने लिखा कि मुख्यमंत्री आवास पर पधारे पंजाबी फिल्म कलाकारों से आत्मीय भेंट की। इस अवसर पर पंजाबी और हरियाणवी संस्कृति की फिल्मों को प्रदेश में और प्रोत्साहन मिले। इसको लेकर उपस्थित कलाकारों से सार्थक संवाद हुआ।
सीएम ने आगे लिखा कि मुझे विश्वास है कि आने वाले समय में पंजाबी और हरियाणवी कलाकारों का आपसी सौहार्द, प्रेम और हमारी स्वर्णिम संस्कृति फिल्म के माध्यम से दर्शकों का भरपूर मनोरंजन करेगी और सामाजिक सद्भाव का संदेश देगी।

रक्षाबंधन पर मुख्यमंत्री की कलाई पर स्कूली बच्चियों ने बांधी स्नेह की डोर

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने संत कबीर कुटीर में रक्षाबंधन का पर्व हर्ष और उत्साह के साथ मनाया। इस मौके पर हरियाणा राज्य बाल कल्याण परिषद की उपाध्यक्ष एवं मुख्यमंत्री की धर्मपत्नी सुमन सैनी भी मौजूद रहीं। रक्षाबंधन के इस विशेष पावन अवसर पर पंचकूला जिले के दो सरकारी प्राइमरी स्कूलों तथा रायपुररानी स्थित वेलफेयर सेंटर फॉर पर्सन विद स्पीच एंड हियरिंग इम्पेरेमेंट की नन्हीं-नन्हीं बच्चियां अपने शिक्षकों के साथ पहुंचीं और मुख्यमंत्री की कलाई पर प्रेम, विश्वास और सुरक्षा के प्रतीक स्वरूप राखी बांधी। स्कूल यूनिफार्म में पहुंची इन बच्चियों ने जब मुख्यमंत्री की कलाई पर रंग-बिरंगी राखी के रूप में स्नेह की रेशमी डोर बांधी तो मुख्यमंत्री ने उनको उपहार और आशीर्वाद दिया। मुख्यमंत्री ने बच्चियों से आत्मीय

बातचीत की, उनकी पढ़ाई, खेलकूद और भविष्य की योजनाओं के बारे में जानकारी ली। उन्होंने बच्चियों को शिक्षा में आगे बढ़ने और समाज में अपनी पहचान बनाने के लिए प्रेरित किया। इनमें पंचकूला शहर के गवर्नमेंट मॉडल संस्कृति प्राइमरी स्कूल सेक्टर-26 एवं सेक्टर-4 की 12 बच्चियां तथा वेलफेयर सेंटर फॉर पर्सन विद स्पीच एंड हियरिंग इम्पेरेमेंट रायपुररानी से 8 बच्चियां शामिल थी। इस अवसर पर उनके साथ जिला शिक्षा अधिकारी संध्या छिक्कारा, जिला विज्ञान विशेषज्ञा पूजा, जिला सांस्कृतिक समन्वयक दीपा रानी के अलावा उक्त स्कूलों की शिक्षिकाएं भी थी। महिला शिक्षिकाओं ने भी मुख्यमंत्री को राखी बांधी। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने इस अवसर पर कहा, रक्षाबंधन केवल भाई-बहन का त्योहार नहीं, बल्कि यह प्रेम, त्याग और सुरक्षा की भावना का प्रतीक है। ऐसे अवसर हमें अपनी संस्कृति और परंपराओं से जोड़ते हैं और समाज में भाईचारे व सौहार्द की भावना को प्रबल करते हैं। उन्होंने कहा कि बच्चों की मासूम मुस्कान और स्नेह उन्हें नई ऊर्जा और उत्साह प्रदान करते हैं, जिससे वे राज्य के विकास और बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए और अधिक मेहनत करने के लिए प्रेरित होते हैं।

हरियाणा में मानसून मेहरबानः कई जगहों पर बाढ़ जैसे हालात

एजेंसी

चंडीगढ़ हरियाणा में मानसून की बारिश अब आफत बनकर बरस रही है। राज्य के 11 जिलों में रविवार को बारिश दर्ज की गई है, जिनमें कई शहरों में मूसलाधार बारिश दर्ज की गई है। सोनीपत में 92 एमएम, राई में 122 एमएम, फरीदाबाद में 116 एमएम बारिश दर्ज की गई है। राज्य में मानसून सीजन के दौरान अब तक 289 एमएम बारिश दर्ज की जा चुकी है, जो सामान्य से 15 फीसदी ज्यादा है। लगातार बारिश से राज्य से बहने वाली सभी नदियां उफान पर बह रही है। इससे कई जगह पर बाढ़ जैसे हालात पैदा हो गए हैं। मौसम विभाग के पूर्वानुमान के मुताबिक अगस्त के आने वाले दिनों में भी भारी बारिश के आसार बने हुए हैं। हरियाणा में गुरुग्राम, फरीदाबाद, सोनीपत, पानीपत, करनाल, पलवल, झज्जर, जींद, महेंद्रगढ़, चरखी दादरी और पंचकूला में बारिश दर्ज की गई। लगातार बारिश से दिन के तापमान में करीब औसत 3.8 डिग्री की गिरावट दर्ज की गई है। सबसे गर्म नारनौल रहा, जहां अधिकतम तापमान 34.5 डिग्री दर्ज किया गया है। हालांकि कई इलाकों में उमस भी अत्यधिक रही, जिससे लोगों को परेशानी का सामना भी करना पड़ा। हिसार स्थित चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविद्यालय के कृषि मौसम विज्ञान के विभागाध्यक्ष डा. मदन खीचड़ ने बताया, दस अगस्त से मानसून टर्फ नीचे आने की संभावना है, जिससे राज्य में बारिश की गतिविधियों में फिर से बढ़ोतरी होने के आसार हैं। दस से 12 अगस्त के दौरान राज्य के ज्यादातर क्षेत्रों में अच्छी बारिश की संभावना है। इस दौरान वातावरण में नमी बढ़ने व दिन के तापमान में हल्का बदलाव आ सकता है।हरियाणा के यमुनानगर में मानसून सीजन के दौरान सबसे ज्यादा बारिश दर्ज की गई है।

रक्षाबंधन पर ब्रह्मकुमारियों ने दिया एकता और भाईचारे का संदेश

एजेंसी

सोनीपत। रक्षाबंधन के पर्व पर ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की संचालिका बहन प्रमोद और अनुकुमारी ने पूर्व कैबिनेट मंत्री कविता जैन व नगर निगम मेयर राजीव जैन को रक्षा सूत्र बांधकर आशीर्वाद दिया। बहन प्रमोद ने कहा कि यह पर्व भाई-बहन के प्रेम की अटूट डोर के साथ-साथ सभी महिलाओं की रक्षा व सम्मान का संकल्प लेने की प्रेरणा देता है। यह धर्म, समाज और आत्म कल्याण से जुड़ी वचनों में बंधने का संदेश भी देता है।

गोहाना में पुलिस उपायुक्त भारती डबास ने भी रक्षाबंधन का पर्व ब्रह्मकुमारी संगठन की बहनों के साथ मनाया। इस अवसर पर बहनों ने डीसीपी भारती डबास सहित उपस्थित पुलिस अधिकारियों व कर्मचारियों को राखी बांधी और उनके सुरक्षित, स्वस्थ व सफल जीवन की कामना की। डीसीपी ने कहा कि रक्षाबंधन भाई-बहन के

पवित्र रिश्ते का प्रतीक है और यह आपसी विश्वास, सम्मान तथा एकता को मजबूत करता है। उन्होंने समाज में शांति, सौहार्द और भाईचारे की भावना बनाए रखने की आवश्यकता पर जोर दिया। कार्यक्रम में गोहाना पुलिस के अन्य अधिकारी व कर्मचारी भी उपस्थित रहे। अंत में सभी ने आपसी भाईचारे और सामुदायिक सहयोग को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया।

स्वतंत्रता दिवस पर 14 व 15 अगस्त को दिल्ली में भारी वाहनों को ना ले जाएंः महाबीर सिंह

ज्योति दर्पण

गुरुग्राम। स्वतंत्रता दिवस को लेकर सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से ट्रक यूनियन प्रधानों/ड्राइवरों के साथ यातायात पुलिस अधिकारियों ने बैठक की। बैठक में उन्होंने सभी को जरूरी दिशा-निर्देश दिए।

पुलिस उपायुक्त यातायात डॉ. राजेश मोहन व सहायक पुलिस आयुक्त यातायात हाईवे/मुख्यालय सत्यपाल यादव के निर्देशों पर यातायात निरीक्षक महाबीर सिंह ने स्वतंत्रता दिवस के आगमन पर सुरक्षा व्यवस्था, यातायात व्यवस्था को सुनिश्चित करने के उद्देश्य ट्रक यूनियन प्रधानों/ड्राईवरों के साथ मीटिंग की। मीटिंग के दौरान सभी ट्रक यूनियन प्रधानों/ ड्राइवरो को 12 अगस्त 2025 शाम पांच बजे से 13 अगस्त 2025 दोपहर डेढ़ बजे तक और 14 अगस्त शाम पांच बजे से 15 अगस्त दोपहर डेढ़ बजे तक अपने भारी वाहनों को दिल्ली सीमा क्षेत्र की ओर न ले जाने के बारे में जानकारी दी गई। बैठक के दौरान मौजूद सभी प्रधानों/ड्राइवरों को यह

भी बताया गया कि इस दौरान अपने वाहनों को उचित पार्किंग में ही खड़ा करें, ताकि किसी भी प्रकार से यातायात के आवागमन और संचालन कराने में बाधा उत्पन्न न होने पाए। बताए गए समय व तारीख के दौरान भारी वाहन चालक गुरुग्राम क्षेत्र से अन्य राज्यों/जिलों में जाना चाहते हैं तो वे सभी भारी वाहन चालक केएमपी एक्सप्रेस-वे व द्वारका एक्सप्रेसवे का प्रयोग करें। सभी ट्रक यूनियन प्रधानों/ड्राइवरों ने 15 अगस्त 2025 की तैयारियों और यातायात सम्बंधित दिए गए निर्देशानुसार वाहनों का आवागमन करने और अपना पूर्ण सहयोग देने की बात कही।

हरियाणा, पंजाब व राजस्थान से दिल्ली हवाई अड्डे पर जाना सुगम करेगा यूईआर-2

एजेंसी

झज्जर। दिल्ली का अर्बन एक्सटेंशन रोड-2 के चालू होने से न केवल दिल्ली में वाहनों की भीड़ कम करने में मदद करेगा बल्कि हरियाणा के 20 जिलों, पंजाब और राजस्थान के कई जिलों से दिल्ली हवाई अड्डे जाना-आना बहुत सुगम हो जाएगा। इस मार्ग से आवागमन करने वाले वाहनों का एक से दो घंटे तक समय तो बचेगा ही हजारों के रुपये के ईंधन की बचत नहीं होगी। हरियाणा, पंजाब व राजस्थान से दिल्ली आने वाले वाहनों को सुविधा देने के लिए और दिल्ली की सड़कों पर इन वाहनों की भीड़ कम करने के लिए राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली को यूईआर के रूप में एक नया रिंग रोड मिल रहा है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 16 अगस्त को इस मार्ग का लोकार्पण करेंगे। आधुनिक ढंग से बनाए गए इस रोड से क्षेत्र में जुड़ाव में जबरदस्त परिवर्तन आने की आशा है। दिल्ली के कई प्रमुख इलाके हवई

अड्डे से सीधे जुड़ जाएँगे और यात्रा का समय भी काफ़ी कम हो जाएगा। यूईआर-2 बहादुरगढ़ रोहतक, जींद, भिवानी, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा, सोनीपत, पानीपत, करनाल, अंबाला को तो दिल्ली हवाई अड्डे से जोड़ेगा ही, समोसे पंजाब और राजस्थान के कई जिलों के निवासियों को भी दिल्ली हवाई अड्डे और दिल्ली के कई क्षेत्रों तक आने-जाने में बड़ी सुविधा हो जाएगी। जिससे यात्रा में एक से दो घंटे तक कम समय खर्च होगा वाहनों के ईंधन का खर्च भी घटेगा।

केंद्र सरकार के सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने तीन साल पहले यूईआर-2 बनाने की घोषणा की थी। यह मार्ग चार से छह लेन का एक्सप्रेस-वे है। यह दिल्ली की सड़कों पर यातायात के दबाव को कम करेगा और डीजल, पेट्रोल व दूसरे वाहन इंधनों की भारी बचत करेगा। लगभग 8000 करोड़ रुपये की लागत वाली यह परियोजना अलीपुर में दिल्ली, चंडीगढ़ राजमार्ग से शुरू होकर मुंडका, बक्करवाला, नजफगढ़ और द्वारका में द्वारका एक्सप्रेसवे तक जाती है। यूईआर-2 को दिल्ली-चंडीगढ़ राजमार्ग, द्वारका एक्सप्रेस-वे, दिल्ली-जयपुर राजमार्ग, गुरुग्राम सोहना राजमार्ग और दिल्ली-रोहतक राजमार्ग सहित कई प्रमुख राजमार्गों से जोड़ा गया है। द्वारका एक्सप्रेसवे आगे दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे से भी जुड़ा है, जिससे इलाके के प्रमुख नगरों तक पहुंचना आसान हो रहा है। परियोजना के सभी प्रकार के प्रमुख कार्य 15 अगस्त तक पूर्ण होने की पूरी संभावना है। इस मार्ग का नक्शा दिल्ली के कई क्षेत्रों में, खासकर व्यस्त समय के दौरान यातायात की भीड़भाड़ को कम करने के लिए बनाया गया है।

हरियाणा स्टाफ सिलेक्शन कमीशन ने अभ्यर्थियों को किया सावधान, परिणाम की फर्जी खबरों से रहें सतर्क

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा स्टाफ सिलेक्शन कमीशन के चेयरमैन हिम्मत सिंह ने अभ्यर्थियों को सोशल मीडिया पर फैल रही फर्जी खबरों के प्रति आगाह किया है। उन्होंने फेसबुक पर एक पोस्ट साझा कर स्पष्ट किया कि CET 2025 ग्रुप C के परिणाम को लेकर सोशल मीडिया पर चल रही खबरें पूरी तरह गलत और भ्रामक हैं। आयोग ने अभी तक न तो कोई परिणाम घोषित किया है और न ही इस संबंध में कोई आधिकारिक सूचना जारी की है।

चेयरमैन ने अभ्यर्थियों से अपील की है कि वे ऐसी फर्जी खबरों पर ध्यान न दें और भ्रमित न हों। उन्होंने सलाह दी कि किसी भी जानकारी के लिए केवल आयोग की आधिकारिक वेबसाइट https://hssc.gov.in पर भरोसा करें और नियमित रूप से इसे चेक करते रहें। हिम्मत सिंह ने अपनी पोस्ट में लिखा कि अभ्यर्थी ध्यान दें! सोशल मीडिया पर CET 2025 ग्रुप C के परिणाम को लेकर कुछ भ्रामक खबरें फैलाई जा रही हैं। यह

स्पष्ट किया जाता है कि आयोग ने अभी कोई परिणाम या सूचना जारी नहीं की है। कृपया ऐसी खबरों से सावधान रहें और केवल आधिकारिक वेबसाइट https://hssc.gov.in पर दी गई जानकारी पर भरोसा करें।

प्रदेश को हरा-भरा बनाने के लिए सभी लोग लगाएं अधिक से अधिक पेड़ - सांसद रेखा शर्मा

एजेंसी

तावडू। जिला प्रशासन की ओर से अआईएमटी रोजका मेव में 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत वन महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में राज्यसभा सांसद रेखा शर्मा तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में सोहना से विधायक तेजपाल तंवर, हरियाणा वक्फ बोर्ड के प्रशासक जाकिर हुसैन, जिला परिषद अध्यक्ष जान मोहम्मद, उपायुक्त विश्राम कुमार मीणा उपस्थित रहे। सभी अतिथियों ने आईएमटी रोजका मेव क्षेत्र में पौधारोपण कर वन महोत्सव कार्यक्रम की शुरुआत की। सांसद रेखा शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किए गए 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत आज पूरे हरियाणा में वन महोत्सव मनाया जा रहा है। इसी क्रम में जिला नूंह में भी वन महोत्सव का सफल आयोजन किया गया है, जहां उपस्थित सभी लोगों ने पौधारोपण किया। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने भी प्रदेशवासियों से आह्वान किया है कि वे प्रदेश को हरा-भरा बनाने के लिए इन कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भाग लें, जिससे आने वाले समय में

देश और प्रदेश का पर्यावरण स्वच्छ एवं संतुलित बना रहे। विधायक तेजपाल तंवर ने कहा कि पौधारोपण के साथ-साथ उनकी देखभाल भी उतनी ही जरूरी है। उन्होंने सभी से आग्रह किया कि हर व्यक्ति कम से कम एक पौधा प्रतिवर्ष अवश्य लगाए और उसकी सही तरीके से देखरेख करे। उपायुक्त विश्राम कुमार मीणा ने बताया कि जिला नूंह में इस वर्ष वन विभाग द्वारा करीब 3.25 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है, जिनमें से लगभग 1.25 लाख पौधे लगाए जा चुके हैं। शेष पौधारोपण कार्य इस माह के भीतर पूरा करने के निर्देश दिए गए हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षा, पंचायत और अन्य विभागों द्वारा भी करीब 2 लाख पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है, जिसमें से एक लाख से अधिक पौधे पहले ही लगाए जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि वन विभाग के पास पर्याप्त संख्या में पौधे उपलब्ध हैं।

आयुष्मान भारत योजना में हरियाणा की स्थिति बहुत ही चिंताजनक : कुमारी सैलजा

एजेंसी

सिरसा। सिरसा सांसद कुमारी सैलजा ने कहा कि आयुष्मान भारत योजना में हरियाणा की स्थिति चिंताजनक है, इस योजना के तहत सूचीबद्ध निजी अस्पतालों को जहां 15 दिन में बिलो का भुगतान मिल जाना चाहिए था वहां इन्हें अब पांच माह से भुगतान ही नहीं मिला है, भुगतान न होने पर निजी अस्पताल आयुष्मान कार्ड पर गरीब रोगियों का इलाज बंद कर चुके है और वीरवार से प्रदेश में ईलाज फिर से बंद कर दिया गया है। उनके द्वारा लोकसभा में रखे गए प्रश्न के जवाब से साफ हो गया है कि प्रदेश सरकार लोगों को गुमराह कर रही है। चिकित्सा दावों के निपटान और अस्पतालों को समय पर भुगतान में सुधार की आवश्यकता है। मीडिया को जारी बयान में सांसद कुमारी सैलजा ने लोकसभा में पूछे गए अपने प्रश्न के उत्तर के आधार पर कहा कि आयुष्मान भारत - प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (एबी पीएमजेएवाई) के तहत हरियाणा में कार्यान्वयन के आंकड़े दिखाते हैं कि योजनाओं की पहुंच के बावजूद चिकित्सा दावों के निपटान और अस्पतालों को समय पर भुगतान में सुधार की आवश्यकता है। केंद्र सरकार की ओर से प्रतापराव जाधव, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री की ओर से सवाल के जवाब के अनुसार हरियाणा में अब तक 1.35 करोड़ आयुष्मान कार्ड बनाए जा चुके हैं। 26.25 लाख अस्पताल में भर्ती की मंजूरी दी गई है, जिनका मूल्य लगभग 3,990 करोड़ रुपये है। केंद्र सरकार ने योजना के आरंभ से लेकर वित्त वर्ष 2024-25 तक हरियाणा को 607.73 रुपये करोड़ जारी किए हैं। योजना का खर्च केंद्र और राज्य सरकार के बीच 60:40 अनुपात में बांटा जाता है। कुमारी सैलजा ने कहा कि योजना का उद्देश्य गरीब और जरूरतमंद परिवारों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराना है, लेकिन अस्पतालों को दावों का भुगतान समय पर न होना चिंता का विषय है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य प्राधिकरण के नियमों के अनुसार, राज्य के भीतर के अस्पतालों को 15 दिन में और राज्य के बाहर के अस्पतालों को 30 दिन में भुगतान होना चाहिए।

सोनीपत में तेज बारिश से जलभराव, यातायात प्रभावित

एजेंसी

सोनीपत। सोनीपत जिले में सुबह से हो रही लगातार तेज बारिश ने शहर और गांवों की रफ्तार थाम दी। मौसम विभाग के अलर्ट के बीच हुई मूसलधार बारिश से निचले इलाकों, गलियों और मुख्य सड़कों पर कई फुट पानी भर गया। शहर के अंडरपास जलमग्न हो गए, जिससे यातायात ठप पड़ गया। काफी वाहन पानी में फंस गए इंजन बंद हो होने बीच में ही फंस गए, ग्रामीण क्षेत्रों में खेतों और रास्तों पर पानी भरने से लोगों को आवाजाही में भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। सुबह 8 बजे से दोपहर 1 बजे तक जिले में हुई बरसात के आंकड़े जारी किए गए। सोनीपत में 82 मिमी, गन्नौर में 52 मिमी, गोहाना में 12 मिमी, खरखौदा में 48 मिमी, खानपुर कलां में 35 मिमी और राय में सर्वाधिक 98 मिमी बरसात दर्ज हुई। नगर पार्षद संजय बडवासनी ने जलभराव वाले स्थान शहीद चौक के पास खड़े होकर आरोप लगाया कि हर साल पानी निकासी के लिए लाखों रुपये खर्च किए जाते हैं, पर सफाई का कार्य केवल कागजों में ही पूरा होता है। उन्होंने कहा कि सफाई घोटाले और लापरवाही के कारण हर बारिश में

शहर जलमग्न हो जाता है, जिससे आमजन को दिक्कत उठानी पड़ती है। बारिश ने रक्षाबंधन के उत्सव पर भी पानी फेर दिया। बहनें भाइयों की कलाई पर राखी बांधने के लिए घरों से निकल नहीं पाईं। जो महिलाएं एक दिन पहले राखी बांधने निकली थीं, वे भी जलभराव में फंस गईं। बाजारों और मोहल्लों में पानी भरने से खरीदारी पर असर पड़ा। ग्रामीण क्षेत्रों में भी हालात गंभीर हैं। भठगांव में गांव के जोहड़ भर गए, तो खेवड़ा में घरों में पानी घुस गया। ग्रामीणों का आरोप है कि सरपंच ने सफाई को लेकर कोई सुनवाई नहीं की। खेतों में पानी भरने से फसलों को नुकसान का खतरा है। अंडरपास और मुख्य मार्गों के बंद होने से वाहन चालकों को वैकल्पिक रास्ते अपनाने पड़े। नगर निगम व प्रशासन जल निकासी में जुटा है, लेकिन लगातार हो रही बारिश राहत कार्यों में बाधा डाल रही है।

महेंद्रगढ़ में दर्दनाक हादसाः नौसेना के जवान की सड़क हादसे में मौत, तीन माह पहले ही हुई थी शादी

एजेंसी

महेंद्रगढ़/नारनौल। कनीना में हुई सड़क दुर्घटना ने पूरे इलाके को गहरे सदमे में डाल दिया है। इस दर्दनाक हादसे में भारतीय नेवी के जवान रवि कुमार की मौके पर ही मौत हो गई। महज 26 साल की उम्र और तीन वर्ष पहले देश सेवा के लिए नेवी में भर्ती हुए रवि का सफर यूं अचानक थम जाएगा किसी ने नहीं सोचा था।

गांव धनौंदा निवासी नेवी के जवान की सड़क हादसे में दर्दनाक मौत हो गई। जवान चार दिन पहले ही रक्षा बंधन पर्व की छुट्टी लेकर अपने घर आया था। देर रात अपने दोस्त को छोड़ने के लिए कनीना गया था। जब अपने दोस्त को कनीना बस स्टैंड पर छोड़कर वापस अपने घर आ रहा था तो इसी दौरान दादरी टी-प्वाइंट पर एक ट्रक चालक ने बाइक को सीधी टक्कर मार दी। हादसे में जवान की मौके पर ही मौत हो गई तथा ट्रक चालक अपने ट्रक को मौके पर छोड़कर फरार हो गया। घटना के बाद रात को उसकी पहचान के लिए बनाई गई वीडियो तेजी से शोसल मीडिया पर वायरल हो गई।

कनीना में हुई सड़क दुर्घटना ने पूरे इलाके को गहरे सदमे में डाल दिया है। इस दर्दनाक हादसे में भारतीय नेवी के जवान रवि कुमार की मौके पर ही मौत हो गई। महज 26 साल की उम्र और तीन वर्ष पहले देश सेवा के लिए नेवी में भर्ती हुए रवि का सफर यूं अचानक थम जाएगा किसी ने नहीं सोचा था। चार दिन पहले ही वह रक्षाबंधन पर छुट्टी लेकर अपने गांव धनौंदा आया था, और तीन महीने पहले ही उसकी शादी हुई थी।

बीती रात करीब नौ बजे, रवि अपने दोस्त कुलदीप को कनीना बस स्टैंड तक छोड़ने बाइक से गया था। दोस्त को विदा कर वापस लौटते समय, उन्हाणी के पास एक ट्रक से उसकी आमने-सामने टक्कर हो गई। टक्कर इतनी भयावह थी कि रवि का सिर फट गया और मौके पर ही उसने दम तोड़ दिया। खून से लथपथ जवान की हालत देखकर वहां मौजूद लोग सन्न रह गए। हादसे के बाद ट्रक चालक वाहन छोड़कर फरार हो गया। रात करीब दस बजे उसकी पहचान के लिए बनाई गई वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुई। नारनौल नंबर की बाइक होने के कारण यह वीडियो नारनौल के सोशल मीडिया ग्रुप्स में भी फैल गई ।

त्योहारी मांग के बावजूद सरसों-मूंगफली तेल के दाम गिरे, बाकी तेल-तिलहन में सुधार

- उपभोक्ताओं का रुख अब सस्ते विकल्प जैसे सोयाबीन और पामोलीन की ओर

नई दिल्ली ।

बीते सप्ताह घरेलू तेल-तिलहन बाजार में मिश्रित रुख देखने को मिला। जहां सरसों और मूंगफली तेल-तिलहन के दाम गिरावट के साथ बंद हुए, वहीं सोयाबीन और पाम तेल में सुधार दर्ज किया गया। बाजार सूत्रों के अनुसार, सरसों तेल के दाम आयातित खाद्य तेलों की तुलना में 35-40 रुपये प्रति किलो अधिक हैं, जिससे इसकी मांग कमजोर पड़ी है। उपभोक्ताओं का रुख अब सस्ते विकल्प जैसे सोयाबीन और पामोलीन की ओर है। मूंगफली की नई फसल में बरसात के कारण नमी होने से किसानों को मजबूरी में कम दाम पर बेचना पड़ा। इससे मूंगफली तेल-तिलहन की कीमतें भी गिरीं। मूंगफली तिलहन का भाव 75 रुपये गिरकर 5,700-6,075 रुपये क्विंटल रहा, जबकि मूंगफली तेल गुजरात का दाम 150 रुपये घटकर 13,500 रुपये क्विंटल पर बंद हुआ। सरकार ने आगामी खरीफ फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) बढ़ाया है। सोयाबीन का एमएसपी 436 रुपये बढ़ाकर 5,328 रुपये और मूंगफली का 480 रुपये बढ़ाकर 7,263 रुपये प्रति क्विंटल किया गया है। लेकिन वर्तमान बाजार कीमतें एमएसपी से नीचे हैं, जिससे चिंता बनी हुई है। उधर, त्योहारी मांग और स्टॉक की सीमित उपलब्धता के चलते सोयाबीन तेल-तिलहन में मजबूती रही। सोयाबीन दाने और लूज के भाव क्रमशः 4,875-4,925 रुपये और 4,575-4,675 रुपये क्विंटल रहे। सोयाबीन दिल्ली का तेल 200 रुपये चढ़कर 13,200 रुपये और डीगम तेल 200 रुपये की बढ़त के साथ 10,225 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। पाम तेल में भी सुधार देखा गया। सीपीओ का भाव 280 रुपये बढ़कर 11,380 रुपये और पामोलीन दिल्ली 175 रुपये बढ़कर 13,000 रुपये प्रति क्विंटल रहा। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि किसानों को बेहतर दाम दिए जाएं, तो इससे न केवल उत्पादन बढ़ेगा बल्कि विदेशी मुद्रा की भी बचत होगी।

व्यापार तनाव और रुपये में गिरावट से अगस्त में एफपीआई ने 18,000 करोड़ निकाले

नई दिल्ली । अमेरिका और भारत के बीच बढ़ते व्यापार तनाव, कमजोर तिमाही नतीजों और रुपये की गिरती कीमत के चलते विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने अगस्त 2025 की शुरुआत में भारतीय शेयर बाजार से भारी निकासी की है। डिपॉजिटरी आंकड़ों के अनुसार, 1 से 8 अगस्त के बीच एफपीआई ने भारतीय इक्विटी बाजार से 17,924 करोड़ रुपये निकाले। इससे पहले जुलाई 2025 में भी उन्होंने 17,741 करोड़ रुपये की निकासी की थी। इस निकासी के साथ वर्ष 2025 में अब तक एफपीआई की कुल इक्विटी निकासी 1.13 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गई है। हालांकि मार्च से जून के बीच एफपीआई ने लगभग 38,673 करोड़ रुपये का निवेश किया था, लेकिन हालिया वैश्विक और घरेलू कारकों ने उनकी निवेश भावना को कमजोर कर दिया है। बाजार के जानकारों ने कहा` कि अमेरिका द्वारा भारतीय वस्तुओं पर 25 फीसदी टैरिफ लगाने और उसके बाद अतिरिक्त शुल्क लगाने से बाजार में बेचैनी बढ़ गई है। वहीं रुपये की कमजोर स्थिति और कंपनियों के कमजोर तिमाही नतीजों ने भी निवेशकों की धारणा पर नकारात्मक असर डाला है। एक वरिष्ठ विश्लेषक ने बताया कि अमेरिका में बॉन्ड प्रतिफलबढ़ने से निवेशकों का रुझान वहां की ओर गया है। हालांकि एफपीआई ने समीक्षाधीन अवधि में 3,432 करोड़ सामान्य ऋण और 58 करोड़ स्वैच्छिक ऋण में भी निवेश किया। विशेषज्ञों का मानना है कि जब तक व्यापार विवाद सुलझ नहीं जाते और रुपये में स्थिरता नहीं आती, तब तक एफपीआई का रुझान कमजोर बना रह सकता है।

एयर इंडिया ने 7 साल और बढ़ाई पायलट और केबिन क्रू की रिटायरमेंट उम्र

- अब पायलट 65 साल, केबिन क्रू और अन्य कर्मचारी 60 साल तक कर सकेंगे काम

नई दिल्ली ।

एयर इंडिया ने अपने पायलटों, केबिन क्रू और अन्य कर्मचारियों की रिटायरमेंट उम्र बढ़ाने का बड़ा फैसला लिया है। अब पायलटों की रिटायरमेंट उम्र 58 साल से बढ़ाकर 65 साल कर दी गई है। केबिन क्रू और अन्य कर्मचारियों की रिटायरमेंट उम्र भी 58 साल से बढ़ाकर 60 साल कर दी गई है। इसके साथ ही माना जा रहा है कि केबिन क्रू की रिटायरमेंट उम्र भी 65 साल करने पर विचार चल रहा है ताकि पायलटों के बराबर किया जा सके। यह फैसला एयर इंडिया और विस्तारा के मर्जर के बाद लिया गया है। विस्तारा में पहले से पायलटों की रिटायरमेंट उम्र 65 साल थी, जबकि एयर इंडिया में यह उम्र 58 साल थी।

दोनों एयरलाइंस के विलय के बाद रिटायरमेंट उम्र को समान करने के लिए यह निर्णय लिया गया। एयर इंडिया के सीईओ कैम्बेल विल्सन ने बताया कि इस संबंध में डीजीसीए से अनुमति भी मिल गई है, जिससे पायलट 65 साल की उम्र तक वाणिज्यिक उड़ानें भर सकेंगे। एयर इंडिया में वर्तमान में लगभग 24 हजार कर्मचारी काम कर रहे हैं, जिनमें से 3,600 पायलट और 9,500 केबिन क्रू हैं। पायलटों की रिटायरमेंट उम्र बढ़ाने का यह कदम मर्जर से जुड़ी व्यवस्थाओं को सरल बनाने और कर्मचारी संतुष्टि बढ़ाने के लिए माना जा रहा है। हालांकि, यह कदम दो महीने पहले अहमदाबाद से लंदन जा रही एयर इंडिया की उड़ान दुर्घटना के बाद आया है, जिसमें 265 लोगों की जान गई थी। प्रारंभिक जांच में पायलट की गलती सामने आई है। ऐसे में पायलटों की रिटायरमेंट उम्र बढ़ाना कुछ के लिए चौंकाने वाला निर्णय माना जा रहा है। इसके बावजूद एयर इंडिया इस फैसले के पीछे कर्मचारियों के अनुभव और विशेषज्ञता को ध्यान में रख रही है। एयर इंडिया की यह नई नीति समूह में एकरूपता लाने के साथ ही पायलटों और क्रू के लिए बेहतर करियर अवसर प्रदान करेगी।

संसद में सोमवार को नया इनकम टैक्स बिल पेश होगा

- 285 बदलाव शामिल, रिजिजू ने दूर की अटकल

नई दिल्ली ।

संसद में सोमवार को नया इनकम टैक्स बिल पेश किया जाएगा। संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने स्पष्ट किया कि वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण लोकसभा में यह बिल पेश करेंगी, जिसमें सिलेक्ट कमेटी की सभी सिफारिशें और सरकार द्वारा स्वीकृत संशोधन शामिल होंगे। पिछले शुक्रवार को लोकसभा से पुराने बिल को वापस लेने के बाद मीडिया में नए बिल को लेकर कई अटकलें लगाई जा रही थीं। रिजिजू ने इन अटकलों को खारिज करते हुए कहा कि यह बिल पूरी तरह नया नहीं होगा, बल्कि पुराने बिल में सिलेक्ट कमेटी की अध्यक्षता में भाजपा सांसद बैजयंत पांडा द्वारा सुझाए गए 285 संशोधन जोड़े जाएंगे। सरकार ने इन संशोधनों को पूरी तरह स्वीकार कर लिया है। उन्होंने बताया कि पुराने बिल को वापस लेकर नया बिल पेश करना संसदीय परंपरा का हिस्सा है, खासकर जब सिलेक्ट कमेटी की रिपोर्ट में बड़े पैमाने पर संशोधन सुझाए गए हों। इससे संसद के लिए बिल पर चर्चा करना और उसे पारित करना आसान हो जाता है। रिजिजू ने कहा कि पहले बिल पर काफी मेहनत की गई थी, इसलिए नया ड्राफ्ट उसी पर आधारित है, लेकिन सभी आवश्यक संशोधन इसमें शामिल किए गए हैं।

नया इनकम टैक्स बिल पेश होने के बाद कर नियमों में कई महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिल सकते हैं, जिनमें आयकर स्लैब, छूट, रियायतें और कर प्रशासन से जुड़ी प्रक्रियाओं में सुधार शामिल हो सकता है। सरकार का मानना है कि यह कदम टैक्स व्यवस्था को सरल, पारदर्शी और समयानुकूल बनाने में मदद करेगा, जिससे करदाता और प्रशासन दोनों को लाभ होगा।

आईसीआईसीआई बैंक आज से लेगा यूपीआई ट्रांजैक्शन शुल्क....पेमेंट एग्रीगेटर्स से

सेंसेक्स की टॉप 10 कंपनियों के मार्केट कैप में भारी उतार-चढ़ाव रहा

- सेंसेक्स की टॉप 10 कंपनियों की सूची में रिलायंस इंडस्ट्रीज शीर्ष पर बरकरार रही

मुंबई (ईएमएस)। बीते सप्ताह भारतीय शेयर बाजार में लगातार छठे सप्ताह गिरावट दर्ज की गई। इस बीच टॉप 10 सबसे वैल्यूएबल कंपनियों में से 6 कंपनियों के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में कुल 1,36,151.24 करोड़ रुपये की गिरावट आई। सबसे ज्यादा नुकसान रिलायंस इंडस्ट्रीज को हुआ, जिसका मार्केट कैप 34,710.8 करोड़ रुपये घटकर 18,51,174.59 करोड़ रुपये रह गया। इसके बाद एचडीएफसी बैंक का मार्केट कैप 29,722.04 करोड़ रुपये गिरकर 15,14,303.58 करोड़ रुपये, आईसीआईसीआई बैंक का 24,719.45 करोड़ रुपये घटकर 10,25,495.69 करोड़ रुपये, और इंफोसिस का 19,504.31 करोड़ रुपये घटकर 5,91,423.02 करोड़ रुपये हो गया। भारती एयरटेल और हिंदुस्तान यूनिलीवर के मार्केट कैप में भी क्रमशः 15,053.55 करोड़ और 12,441.09 करोड़ रुपये की गिरावट आई। वहीं टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस), भारतीय स्टेट बैंक, एलआईसी और बजाज फाइनेंस के मार्केट कैप में बढ़ोतरी देखी गई। एलआईसी का मार्केट कैप 17,678.37 करोड़ रुपये बढ़कर 5,77,187.67 करोड़ रुपये हो गया। टीसीएस का मार्केट कैप 11,360.8 करोड़ रुपये बढ़कर 10,97,908.66 करोड़ रुपये, भारतीय स्टेट बैंक का 9,784.46 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी के साथ 7,42,649.34 करोड़ रुपये, और बजाज फाइनेंस का 186.43 करोड़ रुपये बढ़कर 5,45,148.52 करोड़ रुपये पहुंच गया। सेंसेक्स की टॉप 10 कंपनियों की सूची में रिलायंस इंडस्ट्रीज शीर्ष पर बरकरार रही। उसके बाद एचडीएफसी बैंक, टीसीएस, भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक, भारतीय स्टेट

जियो फाइनेंशियल ने किया शेयरधारकों को 0.50 रुपए डिविडेंड का ऐलान

- डिविडेंड के लिए रिकॉर्ड डेट 11 अगस्त तय की गई

नई दिल्ली । जियो फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड ने अपने निवेशकों को खुशखबरी दी है। कंपनी ने वित्त वर्ष 2024-25 के लिए 0.50 प्रति शेयर के फाइनल डिविडेंड की सिफारिश की है। डिविडेंड के लिए रिकॉर्ड डेट 11 अगस्त 2025 तय की गई है। यानी इस तारीख तक जिन शेयरधारकों के पास कंपनी के शेयर होंगे, वे डिविडेंड के पात्र होंगे। कंपनी की दूसरी वार्षिक आम बैठक (एजीएम) 28 अगस्त गुरुवार को होगी। एजीएम में डिविडेंड प्रस्ताव को मंजूरी मिलने के बाद, इसका भुगतान एक हफ्ते के भीतर किया जाएगा। वहीं एजीएम में वोटिंग के लिए कंपनी ने 21 अगस्त को कट-ऑफ डेट घोषित की है। इसी तारीख के आधार पर यह तय होगा कि कौन-कौन शेयरधारक एजीएम में भाग लेकर प्रस्तावों पर मतदान कर सकेंगे। शेयर बाजार की बात करें तो 8 अगस्त को बीएसई पर जियो फाइनेंशियल का शेयर 321.55 पर बंद हुआ जो पिछले बंद भाव 325.30 से 1.15 फीसदी कम है। कंपनी का पीई रेशियो पिछले चार तिमाहियों से 50 से ऊपर बना हुआ है, जो निवेशकों का भरोसा दर्शाता है।

पीवीआर आईनॉक्स को मिली दर्शकों से अच्छी प्रतिक्रिया, घाटा घटा: एमडी

नई दिल्ली । मल्टीप्लेक्स ऑपरेटर पीवीआर आईनॉक्स ने चालू वित्त वर्ष की पहली तिमाही में दर्शकों से उत्साहजनक प्रतिक्रिया पाई है। अप्रैल-जून तिमाही में कंपनी के सिनेमाघरों में 3.4 करोड़ दर्शकों ने फिल्में देखीं, जो पिछले साल की तुलना में 12 फीसदी अधिक है। कंपनी का शुद्ध घाटा 179 करोड़ रुपये से घटकर 54.5 करोड़ रुपये हो गया है, जबकि परिचालन आय बढ़कर 1,469.1 करोड़ रुपये हो गई है। कंपनी के प्रबंध निदेशक ने कहा कि बड़े पर्दे पर फिल्म देखना भारतीय दर्शकों के लिए मनोरंजन का प्रमुख माध्यम बना रहेगा। जुलाई में रिलीज हुई फिल्मों को अच्छा रिस्पॉन्स मिला है और 14 अगस्त को रजनीकांत की 'कुली' और 'वॉर 2' जैसी बड़ी फिल्मों के कारण दर्शकों की संख्या और बढ़ने की उम्मीद है। ओटीटी प्लेटफॉर्म पर दर्शकों के रुझान कम होने से सिनेमाघरों में भीड़ बढ़ेगी। कंपनी दर्शकों को बेहतर अनुभव देने पर जोर दे रही है।

रेलवे ने टिकट के डिजिटल पेमेंट पर लगने वाले एक्स्ट्रा चार्ज को बताया सुविधा शुल्क

- एक्स्ट्रा चार्ज को लेकर राज्यसभा में उठे सवाल पर रेलवे मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सफाई दी

नई दिल्ली। ऑनलाइन ट्रेन टिकट बुकिंग पर डिजिटल पेमेंट के दौरान लगने वाले एक्स्ट्रा चार्ज को लेकर राज्यसभा में उठे सवाल पर रेलवे मंत्री अश्विनी वैष्णव ने सफाई दी है। उन्होंने कहा कि यह कोई टैक्स नहीं, बल्कि कंविनियंस फीस यानी सुविधा शुल्क है, जो आईआरसीटीसी के डिजिटल सिस्टम के संचालन और अपग्रेड के लिए लिया जाता है। रेल मंत्री के अनुसार एसी टिकट बुक करने पर 20 और नॉन-एसी टिकट पर 10 का शुल्क लिया जाता है। यह शुल्क केवल ऑनलाइन टिकट बुकिंग पर लागू होता है। उन्होंने कहा कि इस डिजिटल प्लेटफॉर्म से यात्रियों को रेलवे काउंटर तक जाने की जरूरत नहीं पड़ती, जिससे समय और संसाधनों की बचत होती है। सांसद संजय सिंह ने सवाल उठाते हुए कहा था कि जब सरकार कैशलेस इकोनॉमी को बढ़ावा दे रही है, तब डिजिटल पेमेंट पर एक्स्ट्रा चार्ज लेना तर्कसंगत नहीं है। इससे डिजिटल लेनदेन को बढ़ावा मिलने के बजाय बाधा आ सकती है। रेल मंत्री ने यह भी बताया कि आज 87 फीसदी रिजर्वेशन टिकट ऑनलाइन बुक होते हैं, जो आईआरसीटीसी की डिजिटल सेवा की लोकप्रियता को दर्शाता है। इसके साथ ही रेलवे अपने पैसेंजर रिजर्वेशन सिस्टम को अत्याधुनिक बना रहा है। यह सिस्टम अब हर मिनट 1 लाख टिकट बुक करने की क्षमता रखेगा, जो फिलहाल 25,000 टिकट प्रति मिनट है। यह अपग्रेडेशन सेंट्रल फॉर रेलवे इंफॉर्मेशन सिस्टम्स के जरिए किया जा रहा है। सरकार का कहना है कि यह शुल्क डिजिटल पेमेंट को हतोत्साहित करने के लिए नहीं, बल्कि सिस्टम के रखरखाव की लागत निकालने के लिए है।

हाइब्रिड फंड्स में निवेशकों का बढ़ता भरोसा

- आर्बिट्राज और मल्टी एसेट फंड्स ने मारी बाज़ी

नई दिल्ली । जून 2025 को समाप्त तिमाही में ओपन-एंडेड हाइब्रिड स्कीम्स में निवेशकों की प्राथमिकताओं में बड़ा बदलाव देखने को मिला है। ताजा रिपोर्ट के अनुसार इस तिमाही में आर्बिट्राज फंड्स और मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स सबसे तेजी से आगे बढ़े हैं। मार्च 2025 की तुलना में आर्बिट्राज फंड्स का एयूएम 22.2 फीसदी बढ़ा, जबकि मल्टी एसेट एलोकेशन फंड्स में 15.4 फीसदी की वृद्धि हुई। यह ट्रेंड इस बात का संकेत है कि निवेशक अब कम जोखिम और स्थिर रिटर्न वाले विकल्पों की ओर रुख कर रहे हैं। हाइब्रिड फंड कैटेगरी में भी अच्छा प्रदर्शन देखने को मिला। बैलेंस्ड हाइब्रिड/एग्रेसिव हाइब्रिड फंड्स ने 8.9 फीसद की वृद्धि दर्ज की, जबकि इक्विटी सेविंग्स फंड्स में 8.2 फीसदी और डायनेमिक एसेट एलोकेशन/बैलेंस्ड एडवांटेज फंड्स में 8.1 फीसदी की बढ़त हुई। इसके विपरीत, कंजरवेटिव हाइब्रिड फंड्स सबसे कमजोर साबित हुए, जिनमें मात्र 3.4 फीसदी की वृद्धि देखी गई।

पेट्रोल पंप के लाइसेंस मानकों को संशोधित कर सकती है सरकार

- पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया

नई दिल्ली । सरकार ने पेट्रोल पंपों के लाइसेंस जारी करने के मानदंडों को शिथिल करने और नीति में सुधार करने की तैयारी शुरू कर दी है। यह कदम बदलते वैश्विक ईंधन परिदृश्य और भारत में ऊर्जा सुरक्षा एवं कार्बन उत्सर्जन घटाने के राष्ट्रीय लक्ष्यों को ध्यान में रखकर उठाया जा रहा है। पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय ने 2019 की नीति की समीक्षा के लिए एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया है। इस समिति की अध्यक्षता बीपीसीएल के पूर्व निदेशक (विपणन) सुखमल जैन कर रहे हैं। समिति में पेट्रोलियम नियोजन एवं विश्लेषण प्रकोष्ठ के महानिदेशक पी. मनोज कुमार, फिपी के सदस्य पीएस रवि और मंत्रालय के निदेशक (विपणन) अरुण कुमार भी शामिल हैं। समिति का उद्देश्य मौजूदा नीति का पुनर्मूल्यांकन, वैकल्पिक ईंधनों और इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने के सुझाव देना और नीति के क्रियान्वयन में आ रही चुनौतियों की पहचान करना है। सरकार ने 6 अगस्त को आदेश जारी कर हितधारकों और जनता से 14 दिनों के भीतर सुझाव मांगे हैं। 2019 में संशोधित नियमों के तहत, गैर-पेट्रोलियम कंपनियों को शुद्ध संपत्ति के आधार पर पेट्रोल-डीजल बेचने की अनुमति दी गई थी। वर्तमान में देश में लगभग 97,804 पेट्रोल पंप हैं, जिनमें इंडियन ऑयल, बीपीसीएल, एचपीसीएल जैसी सरकारी कंपनियों का बड़ा हिस्सा है। निजी क्षेत्र में रिलायंस-बीपी, नायरा एनर्जी और शेल के भी कई पंप संचालित हैं। वैश्विक ऊर्जा कंपनियां जैसे टोटल एनर्जीज़, बीपी, ट्रैफिगुरा और सऊदी अरामको भी भारतीय खुदरा ईंधन बाजार में हिस्सेदारी की इच्छा रखती हैं। नई नीति के जरिए सरकार ऊर्जा क्षेत्र में निवेश बढ़ाने और वैकल्पिक ईंधनों को प्रोत्साहित करने का प्रयास कर रही है।

टैरिफ़ विवाद, मुद्रास्फीति और विदेशी निवेशक तय करेंगे बाजार की दिशा

– भारतीय कंपनियों के जून तिमाही के नतीजे भी बाजार को प्रभावित करेंगे

मुंबई ।

भारतीय शेयर बाजार में इस सप्ताह कई महत्वपूर्ण घटनाएं हो सकती हैं जो बाजार की दिशा को प्रभावित करेंगी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा भारत पर 50 फीसदी टैरिफ़ लगाने की घोषणा के बाद भारतीय बाजार में अनिश्चितता बनी हुई है। यह कदम भारतीय जीडीपी वृद्धि को एक फीसदी तक घटा सकता है, जिससे निवेशकों में चिंता है। हालांकि, व्यापार वार्ता में संभावित सुधार से स्थिति में कुछ राहत मिल सकती है, लेकिन घरेलू बाजार इस पर नज़र बनाए रखेगा। इसके अलावा भारतीय और अमेरिकी मुद्रास्फीति के आंकड़े भी बाजार में हलचल पैदा कर सकते हैं। 12 अगस्त को भारत और अमेरिका दोनों देशों के उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) के आंकड़े जारी होंगे। भारत का सीपीआई 1.8 फीसदी रहने का अनुमान है, जबकि अमेरिका का सीपीआई 2.8 फीसदी तक बढ़ सकता है। मुद्रास्फीति में बढ़ोतरी अमेरिकी फेडरल रिजर्व की ब्याज दरों में कटौती की संभावना को कम कर सकती है, जिससे विदेशी पूंजी प्रवाह प्रभावित हो सकता है। अमेरिका और चीन के बीच व्यापार समझौते से भारत को भी असर हो सकता है।

यदि यह समझौता होता है, तो विदेशी निवेश चीन की ओर रुख कर सकता है, जिससे भारतीय बाजार में गिरावट आ सकती है। वहीं भारतीय कंपनियों के जून तिमाही के नतीजे भी बाजार को प्रभावित करेंगे। प्रमुख कंपनियों जैसे बजाज कंज्यूमर, अशोक लीलैंड और ओएनजीसी के परिणामों पर निवेशकों की नज़र रहेगी। इस हफ्ते के बाजार रुझान में वैश्विक और घरेलू संकेतकों का मिश्रित असर देखने को मिलेगा, जिससे भारतीय निवेशकों को सतर्क रहना होगा।

सेंसेक्स की टॉप 10 कंपनियों के मार्केट कैप में भारी उतार-चढ़ाव रहा

- सेंसेक्स की टॉप 10 कंपनियों की सूची में रिलायंस इंडस्ट्रीज शीर्ष पर बरकरार रही

मुंबई ।

बीते सप्ताह भारतीय शेयर बाजार में लगातार छठे सप्ताह गिरावट दर्ज की गई। इस बीच टॉप 10 सबसे वैल्यूएबल कंपनियों में से 6 कंपनियों के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में कुल 1,36,151.24 करोड़ रुपये की गिरावट आई। सबसे ज्यादा नुकसान रिलायंस इंडस्ट्रीज को हुआ, जिसका मार्केट कैप 34,710.8 करोड़ रुपये घटकर 18,51,174.59 करोड़ रुपये रह गया। इसके बाद एचडीएफसी बैंक का मार्केट कैप 29,722.04 करोड़ रुपये गिरकर 15,14,303.58 करोड़ रुपये, आईसीआईसीआई बैंक का 24,719.45 करोड़ रुपये घटकर 10,25,495.69 करोड़ रुपये, और इंफोसिस का 19,504.31 करोड़ रुपये घटकर 5,91,423.02 करोड़ रुपये हो गया। भारती एयरटेल और हिंदुस्तान यूनिलीवर के मार्केट कैप में भी क्रमशः 15,053.55 करोड़ और 12,441.09 करोड़ रुपये की गिरावट आई। वहीं टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस), भारतीय स्टेट बैंक, एलआईसी और बजाज फाइनेंस के मार्केट कैप में बढ़ोतरी देखी गई। एलआईसी का मार्केट कैप 17,678.37 करोड़ रुपये बढ़कर 5,77,187.67 करोड़ रुपये हो गया। टीसीएस का मार्केट कैप 11,360.8 करोड़ रुपये बढ़कर 10,97,908.66 करोड़ रुपये, भारतीय स्टेट बैंक का 9,784.46 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी के साथ 7,42,649.34 करोड़ रुपये, और बजाज फाइनेंस का 186.43 करोड़ रुपये बढ़कर 5,45,148.52 करोड़ रुपये पहुंच गया। सेंसेक्स की टॉप 10 कंपनियों की सूची में रिलायंस इंडस्ट्रीज शीर्ष पर बरकरार रही। उसके बाद एचडीएफसी बैंक, टीसीएस, भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक, भारतीय स्टेट बैंक, इंफोसिस, हिंदुस्तान यूनिलीवर, एलआईसी और बजाज फाइनेंस का स्थान रहा। यह आंकड़े बाजार में जारी उतार-चढ़ाव और निवेशकों की सतर्कता को दर्शाते हैं।

19 अगस्त को खुलेगा श्रीजी शिपिंग और पटेल रिटेल का आईपीओ

नई दिल्ली । शिपिंग समाधान कंपनी श्रीजी शिपिंग ग्लोबल लिमिटेड और सुपरमार्केट श्रृंखला पटेल रिटेल लिमिटेड का आईपीओ 19 अगस्त को खुलेगा और 21 अगस्त को बंद होगा। एंकर निवेशक 18 अगस्त को बोली लगाएंगे। श्रीजी शिपिंग के आईपीओ में केवल नया निर्गम होगा, जिसमें 1.63 करोड़ शेयर जारी किए जाएंगे। कंपनी 251.2 करोड़ रुपये अधिग्रहण और 23 करोड़ रुपये कर्ज चुकाने में खर्च करेगी। पटेल रिटेल का आईपीओ 85.18 लाख नए शेयरों और 10.02 लाख शेयरों की बिक्री पेशकश (ओएफएस) का संयोजन है। इसकी अनुमानित राशि 250-300 करोड़ है। यह कंपनी 59 करोड़ कर्ज चुकाने, 115 करोड़ कार्यशील पूंजी और शेष राशि सामान्य खर्चों में लगाएगी। दोनों कंपनियों के शेयर 26 अगस्त को शेयर बाजार में सूचीबद्ध होंगे। इससे पहले, 11 और 12 अगस्त को तीन अन्य कंपनियों के आईपीओ भी खुल रहे हैं।

अमेरिकी दादागिरी पर मोदी की ललकार

ललित गर्ग

प्रधानमंत्री मोदी ने अमेरिकी टैरिफ पर पहली बार प्रतिक्रिया दी, और अमेरिका या डॉनल्ड ट्रंप का नाम लिए बगैर कहा कि किसानों, पशुपालकों और मछुआरों के हितों के साथ भारत कभी समझौता नहीं करेगा। भारत ने इससे पहले ट्रंप के 50 प्रतिशत टैरिफ को अनुचित, अन्यायपूर्ण और तर्कहीन बताया था। यह विडम्बनापूर्ण एवं विसंगतिपूर्ण है कि ट्रंप बातें रूस की कर रहे हैं, लेकिन यह समझना आसान है कि उनकी निराशा के मूल में भारत के साथ अटकी कृषि ट्रेड डील भी है।

देश के अग्रणी कृषि वैज्ञानिक एवं कृषि-क्रांति के जनक एम.एस. स्वामीनाथन के शताब्दी समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किसान हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए ललकारभरे शब्दों में अमेरिकी टैरिफ पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि भारत किसानों के हितों से समझौता नहीं करेगा, भारत की बढ़ती वैश्विक ताकत का द्योतक है। ट्रंप प्रशासन द्वारा लगाए गए टैरिफ को भारत ने अनुचित एवं दुर्भावनापूर्ण बताया है। भारत अमेरिकी कृषि उत्पादों के लिए बाजार खोलने के दबाव कभी नहीं आयेगा क्योंकि भारत के लिये यह एक राजनीतिक रूप से संवेदनशील मुद्दा है। इस समारोह में मोदी ने जो शब्द कहे, वे केवल एक श्रद्धांजलि नहीं, बल्कि नये भारत, सशक्त भारत की एक स्पष्ट नीति का घोषणा पत्र है, भारत की नई कृषि रणनीति, आत्मनिर्भरता की भावना और अमेरिकी टैरिफ की दादागिरी को खुली चुनौती है। भारत अब पीछे हटने वाला नहीं है और दुनिया की कोई भी ताकत उसे नुकसान नहीं पहुंचा सकती।

प्रधानमंत्री मोदी ने अमेरिकी टैरिफ पर पहली बार प्रतिक्रिया दी, और अमेरिका या डॉनल्ड ट्रंप का नाम लिए बगैर कहा कि किसानों, पशुपालकों और मछुआरों के हितों के साथ भारत कभी समझौता नहीं करेगा। भारत ने इससे पहले ट्रंप के 50 प्रतिशत टैरिफ को अनुचित, अन्यायपूर्ण और तर्कहीन बताया था। यह विडम्बनापूर्ण एवं विसंगतिपूर्ण है कि ट्रंप बातें रूस की कर रहे हैं, लेकिन यह समझना आसान है कि उनकी निराशा के मूल में भारत के साथ अटकी कृषि ट्रेड डील भी है। वह चाहते हैं कि भारत अमेरिकी कृषि उत्पादों और डेयरी प्रॉडक्ट्स के लिए अपना बाजार खोले। लेकिन देश की बड़ी आबादी खेती पर आश्रित है और किसान आर्थिक रूप से सशक्त नहीं हैं। इसलिये वे सब्सिडाइज्ड अमेरिकी प्रॉडक्ट्स से होड़ नहीं कर सकते। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने भाषण के जरिये भारत का यही पक्ष एवं किसानों की चिन्ता को रखा है। लेकिन ट्रंप इस चिंता को शायद ही समझें, क्योंकि अब ऐसा लग रहा है कि अपनी हर नाकामी का ठीकरा फोड़ने के लिए उन्हें कोई देश चाहिए। अमेरिका में बढ़ती महंगाई और बेरोजगारी का दबाव व यूक्रेन युद्ध न रुकवा पाने की हताशा ट्रंप के फैसलों में बौखलाहट के रूप में झलक रही है। पहले उन्होंने चीन पर दबाव बनाने की कोशिश की, लेकिन जब वहां से 'रेयर अर्थ मिनरल्स' के रूप में झटका लगा, तो भारत और रूस से अपनी बात मनवाना चाहते हैं।

हाल ही में अमेरिका द्वारा भारतीय कृषि उत्पादों पर टैरिफ बढ़ाने की घोषणा को प्रधानमंत्री मोदी ने न केवल अनुचित और एकतरफा करार दिया, बल्कि यह स्पष्ट कर दिया कि भारत अब वैश्विक मंच पर दबाव में आने वाला नहीं है। अमेरिका की यह टैरिफ नीति, डब्ल्यूटीओ के सिद्धांतों के विरुद्ध और विकासशील देशों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार का प्रतीक है। भारत पर विशेषकर चावल, गेहूं, दलहन, और मसालों के निर्यात में टैरिफ लगाना सीधे-सीधे भारतीय किसानों की आय पर प्रहार है। ऐसे समय में जब भारत कृषि निर्यात को बढ़ावा देकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बना रहा है, अमेरिका की यह नीति दादागिरीपूर्ण व्यापारवाद का उदाहरण है। भले ही ट्रंप की टैरिफ पैंतरों ने दुनिया के सामने एक बड़ी चुनौती खड़ी कर दी हो, लेकिन भारत ऐसी चुनौतियों के सामने झुकने वाला नहीं है।

भारत अब केवल अमेरिका या यूरोप पर निर्भर नहीं रहना चाहता। अफ्रीका, खाड़ी देशों, दक्षिण एशिया और पूर्वी एशियाई देशों के साथ द्विपक्षीय कृषि व्यापार समझौते तेजी से किए जा रहे हैं। स्थानीय उत्पादन का प्रोत्साहन, 'मेक इन इंडिया' और 'वोकल फॉर लोकल' के तहत कृषि प्रसंस्करण इकाइयों को बल दिया जा रहा है, जिससे निर्यात योग्य उत्पादों का मूल्यवर्धन हो सके। डिजिटल एग्रीकल्चर मिशन, तकनीक के माध्यम से किसानों को वैश्विक बाजार की जानकारी, टैरिफ डाटा और निर्यात संभावनाओं से जोड़कर किसानों की ताकत को बढ़ाया जा रहा है। भारत टैरिफ के जवाब में टैरिफ की राह पर बढ़ते हुए यदि आवश्यकता पड़ी, तो प्रतिस्पर्धी टैरिफ नीति के तहत अमेरिकी उत्पादों पर शुल्क बढ़ाने से नहीं हिचकिचाएगा। भारत डब्ल्यूटीओ और जी20 आदि मंचों पर आक्रामक कूटनीति का सहारे लेकर अब विकासशील देशों की आवाज बनकर, अमेरिका की एकतरफा नीतियों का जवाब दे रहा है।

देश को धीरे-धीरे समझ आने लगा है कि भारतीय कृषि व डेरी क्षेत्र में अमेरिकी उत्पाद खपाने के लिये ही डोनाल्ड ट्रंप टैरिफ आंतक फैला रहे हैं। यही वजह है कि पहले संयम दिखाने के बाद भारत ने निरंकुश ट्रंप सरकार को चेता दिया है कि भारतीय किसानों व दुग्ध उत्पादकों के हितों की बलि नहीं दी जा सकती। हमारे लिये यह देश की एक बड़ी कृषि व डेरी उद्योग से जुड़ी आबादी के जीवन-यापन का भी प्रश्न है। बहरहाल, यह तय हो गया है कि भारत वाशिंगटन के उन मंसूबों पर पानी फेरने के लिये खड़ा हो गया है, जिनके तहत अमेरिका मक्का, सोयाबीन, सेब, बादाम और इथेनॉल जैसे उत्पादों से कम टैरिफ के साथ भारत के बाजार को पाटना चाहता है। निस्संदेह, भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले तीन प्रमुख क्षेत्रों कृषि, डेरी फार्मिंग और मत्स्य पालन से जुड़े करोड़ों लोगों की अजीविका की रक्षा करने के लिये प्रधानमंत्री की प्रतिबद्धता सराहनीय है।

एम.एस. स्वामीनाथन का नाम आते ही भारतीय कृषि का वह स्वर्णिम अध्याय सामने आता है, जब देश अन्न के लिए विदेशों पर आश्रित था और अकाल एक आम त्रासदी हुआ करती थी। 1960 के दशक में स्वामीनाथन ने नॉर्मन बोरलॉग के साथ मिलकर उच्च उपज वाली किस्मों (एचवाईवी), उर्वरकों और सिंचाई तकनीक का ऐसा संगम किया जिसने भारत को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बना दिया। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में शुरू हुई हरित क्रांति ने न केवल खाद्यान्न सुरक्षा सुनिश्चित की, बल्कि भारत की कृषि पहचान को वैश्विक पटल पर स्थापित किया। उनकी रिपोर्टें, विशेष रूप से स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशें, आज भी किसानों की आय दोगुनी करने और उन्हें बाजार से न्याय दिलाने की कुंजी मानी जाती हैं। उन्होंने 'किसान केंद्रित कृषि नीति' का विचार दिया, जिसमें किसानों को केवल उत्पादनकर्ता नहीं, बल्कि राष्ट्रनिमार्ता माना गया। मोदी इसी नीति को आगे बढ़ाते हुए न केवल किसानों के हितों के साथ रहे हैं, बल्कि भारतीय कृषि को नये भारत का आधार बनाने के लिये संकल्पबद्ध है। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि भारतीय राजनीति में किसान उत्पादक व उपभोक्ता से इतर बड़ा राजनीतिक घटक भी है। ऐसे में जाहिर है कि प्रधानमंत्री मोदी कृषक समुदाय को किसी भी कीमत पर नाराज नहीं करना चाहेंगे। प्रधानमंत्री मोदी का जोर अब 'अन्नदाता को ऊजार्दाता' बनाने पर है। इसके लिए कृषि के तीन प्रमुख मोर्चों पर काम हो रहा है- न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को अधिक न्यायसंगत और पारदर्शी बनाना। कृषि निर्यात को 50 बिलियन डॉलर से ऊपर ले जाना। स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को चरणबद्ध लागू करना, जिससे किसानों को लागत से 50 प्रतिशत अधिक लाभ मिल सके। आज जब हम एम.एस. स्वामीनाथन की वैज्ञानिक दृष्टि को याद करते हैं, तो स्पष्ट होता है कि उनकी सोच सिर्फ उत्पादन बढ़ाने तक सीमित नहीं थी, बल्कि किसान को सशक्त करने, आत्मनिर्भर बनाने और वैश्विक ताकतों के सामने टिके रहने योग्य बनाने की थी। मोदी की यह नई नीति उसी दर्शन की राजनीतिक अभिव्यक्ति है।

सही मायनों में भारतीय कृषि में उन आमूल-चूल परिवर्तनों की आवश्यकता है जो न केवल किसान की आय बढ़ाएं बल्कि कृषि उत्पादों को विश्व बाजार की चुनौतियों से मुकाबला करने में भी सक्षम बनायें। एक सौ चालीस करोड़ आबादी वाला देश भारत दुनिया में सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला देश है। इस आबादी की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना भी देश की प्राथमिकता होनी चाहिए। ऐसे में हरित क्रांति के जनक एम.एस. स्वामीनाथन को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम हर हालात में मेहनतकश अन्नदाता को पूरे दिल से समर्थन दें। भारत अब 'झुककर व्यापार' नहीं करेगा, बल्कि 'सम्मान के साथ साझेदारी' करेगा। अमेरिका जैसे देशों को यह समझना होगा कि भारतीय किसान अब केवल हल चलाने वाला नहीं, बल्कि वैश्विक बाजार का खिलाड़ी है। और जब उसके पीछे स्वामीनाथन की विरासत और मोदी की नेतृत्वशक्ति हो, तो कोई भी टैरिफ, कोई भी दबाव, भारत की कृषि शक्ति को झुका नहीं सकता।

संपादकीय

ट्रंप को सधा सा जवाब

लगता है कि अमेरिकी राष्ट्रपति ड़ोनाल्ड़ ट्रंप के टैरिफ दबाव का मुकाबला करने को लेकर भारत कमर कस रहा है। ट्रंप को साफ संदेश देते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बृहस्पतिवार को कहा कि भारत अपने किसानोंङ्क मछुआरों और ड़ेयरी क्षेत्र से जुड़े.लोगों के हितों से समझौता नहीं करेगा। दरअसल, अमेरिका की नजर भारत के कृषि और डेय़री बाजार पर है। वह चाहता है कि भारत अमेरिकी कंपनियों को भारतीय बाजार में खुलकर खेलने की छूट दे। इसी बात को पूरा होता न देख ट्रंप बौखला गए हैं। मोदी जानते हैं कि मुकाबला आसान नहीं होगा क्योंकि भारत को दबाव में लाने के लिए ट्रंप ऐसे कदम उठा रहे हैं जैसे उनकी भारत से कोई निजी खुन्नस हो जबकि उनके कदमों से दुनिया का कोई देश सहमत नहीं है। ट्रंप भारतीय वस्तुओं पर टैरिफ बढा कर 50 फीसद कर चुके हैं।

यह सब ऐसे वक्त में हो रहा है जब दोनों देश द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर चर्चा कर रहे हैं। अमेरिका मक्का, सोयाबीन, सेब, बादाम और इथेनॉल जैसे उत्पादों पर शुल्क कम करने के साथ-साथ अपने ड़ेयरी उत्पादों तक पहुंच बढ़ाने की मांग भी कर रहा है। भारत जानता है कि ये मांगें मान ली गई तो भारत के किसान बर्बाद हो जाएंगे। हरित क्रांति के जनक एमएस स्वामीनाथन की जन्मशती के उपलक्ष्य में आयोजित सम्मेलन में प्रधानमंत्री ने कहा कि मेरे देश के मछुआरों और पशु पालकों के हितों की रक्षा के लिए आज भारत तैयार है। हाल के वर्षों में बनाई गई नीतियां केवल सहायता के लिए नहीं, बल्कि किसानों में विश्वास पैदा करने के लिए हैं। मोदी के अनुसार ड़ॉ. स्वामीनाथन का मानना था कि जलवायु परिवर्तन और पोषण संबंधी चुनौतियों का समाधान उन्हीं फसलों में निहित है, जिन्हें भुला दिया गया है। उन्होंने दूसरी हरित क्रांति की अवधारणा पेश की। भारत जानता है कि ट्रंप के दबाव में नहीं झुकना आज के वक्त की सबसे बड़ी जरूरत है। एक के बाद एक देश ड़ोनाल्ड़ ट्रंप की टैरिफ मार के खिलाफ उठ कर खड़े.हो रहे हैंङ्क और ट्रंप के आगे न झुकने का साफ संदेश दे रहे हैं। भारत जानता है कि रूस, चीन ब्राजील जैसे ट्रंप विरोधी देशों के साथ संबंधों की मजबूती ही वक्त की जरूरत है। ब्राजील के साथ मोदी की बात हो चुकी है। रही बात रूस और चीन की तो भारत के साथ इन देशों के साथ मिल कर काम करने की कवायद तेजी से चल रही है। यही वक्त की मांग भी है।

चिंतन-मनन

उपयोगी हल

एक बार की बात है एक राजा था। उसका एक बड़ा-सा राज्य था।एक दिन उसे देश घूमने का विचार आया और उसने देश भ्रमण की योजना बनाई और घूमने निकल पड़ा। जब वह यात्रा से लौट कर अपने महल आया। उसने अपने मंत्रियों से पैरों में दर्द होने की शिकायत की। राजा का कहना था कि मार्ग में जो कंकड़ पत्थर थे वे मेरे पैरों में चुभ गए और इसके लिए कुछ इंतजाम करना चाहिए। कुछ देर विचार करने के बाद उसने अपने सैनिकों व मंत्रियों को आदेश दिया कि देश की संपूर्ण सड़कें चमड़े से ढंक दी जाएं। राजा का ऐसा आदेश सुनकर सब सकते में आ गए। लेकिन किसी ने भी मना करने की हिम्मत नहीं दिखाई। यह तो निश्चित ही था कि इस काम के लिए बहुत सारे रुपए की जरूरत थी। लेकिन फिर भी किसी ने कुछ नहीं कहा। कुछ देर बाद राजा के एक बुद्धिमान मंत्री ने एक युक्ति निकाली।

उसने राजा के पास जाकर डरते हुए कहा कि मैं आपको एक सुझाव देना चाहता हूँ। अगर आप इतने रुपयों को अनावश्यक रूप से बर्बाद न करना चाहें तो एक अच्छी तरकीब मेरे पास है। जिससे आपका काम भी हो जाएगा और अनावश्यक रुपयों की बबार्दी भी बच जाएगी। राजा आश्चर्यचकित था क्योंकि पहली बार किसी ने उसकी आज्ञा न मानने की बात कही थी। उसने कहा बताओ क्या सुझाव है। मंत्री ने कहा कि पूरे देश की सड़कों को चमड़े से ढंकने के बजाय आप चमड़े के एक टुकड़े का उपयोग कर अपने पैरों को ही क्यों नहीं ढंक लेते। राजा ने अचरज की दृष्टि से मंत्री को देखा और उसके सुझाव को मानते हुए अपने लिए जूता बनवाने का आदेश दे दिया। यह कहानी हमें एक महत्वपूर्ण पाठ सिखाती है कि हमेशा ऐसे हल के बारे में सोचना चाहिए जो ज्यादा उपयोगी हो। जल्दबाजी में अप्रायोगिक हल सोचना बुद्धिमानी नहीं है। दूसरों के साथ बातचीत से भी अच्छे हल निकाले जा सकते हैं।

विचार मंथनः देश में समस्याओं की भरमार और कांग्रेस की डिनर डिप्लोमेसी

डॉ हिदायत अहमद खान

यह सच है कि हमारा प्यारा हिंदुस्तान आज समुद्र के गर्त में छुपे रहस्यों को जानने और चांद में क्या चल रहा है इसकी जानकारी वहीं पहुंचकर हासिल करने में सक्षम हो चुका है। यह हमारे वैज्ञानिक जगत की सफलता का चरम पक्ष है। इस गौरवमयी उपलब्धियों से हमें और आगे जाना है, क्योंकि आसमान नापना अभी भी दुनियां के कथिततौर पर चौधरी बनने वाले देशों के वश की भी बात नहीं। हॉ, भारत इसे पूरा करके जरुर दिखा सकता है। इसकी सीधी और सच्ची वजह यह है कि हमारी संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम की है। जो हमें सिखाती है कि पृथ्वी को परिवार मानकर विश्व का कल्याण करना सबसे महत्वपूर्ण है। पर यह सब तभी संभव होगा जबकि हम वैश्विक चुनौतियों से पहले अपने देश में मौजूद अजगर के समान बढ़ रहीं समस्याओं से निजाद पा लें। वर्तमान में देश कई जटिल समस्याओं और चुनौतियों से जूझ रहा है। इसमें सबसे बड़ी चुनौती देश में मौजूद आर्थिक असमानता है। देश का संपन्न वर्ग लगातार और धनवान होता चला जा रहा है, जबकि अधिकांश लोग गरीबी रेखा के ईद-गिर्द ही बने हुए किसी तरह से अपना जीवनयापन करते नजर आ रहे हैं। अमीर और गरीब के बीच की यह चौड़ी खाई यदि और बढ़ती है तो देश की सुख-शांति को भी यह खा सकती है। इसलिए इसका समाधान समय रहते करना ही होगा। इससे हटकर पढ़े-लिखे वर्ग में बेरोजगारी का जो प्रतिशत बढ़ रहा है वह भी गंभीर बात है। वहीं देश का प्रत्येक तबका बढ़ती महंगाई से परेशान नजर आ रहा है। शिक्षा और स्वास्थ्य की कमजोर व्यवस्था अपने आप में समस्या बनी हुई है। भ्रष्टाचार चरम पर है, रिश्वतखोरी बदस्तूर जारी है, अपराध का रेशो लगातार बढ़ रहा, जिसे आंकड़ों की बाजीगरी से घटाने की कोशिश भी की जा रही है। आतंकियों की घुसपैठ और आमजन के साथ ही हमारे जवानों का शहीद होना कोई छोटी-मोटी समस्या का हिस्सा नहीं है। इन सब में जलवायु संकट, कृषि संकट और लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति देशवासियों का घटता भरोसा किसी ज्वलंत समस्या से कम नहीं है। इन सब के लिए किसे दोषी ठहराया जाए, क्योंकि मुल्क के असली मालिकों ने यदि सत्ता चलाने के लिए स्थिर सरकारें दीं हैं तो सिर्फ इसलिए कि देश का कल्याण हो, न कि मनमर्जी से उन्हीं पर शासन करने के लिए बहाने-बहाने से कोड़े बरसाए जाएं। मौजूदा सरकार जिस विकास की बात कर रही है वह चंद लोगों के लिए है, जबकि देश की आमजनता उससे अछूती ही है। ऐसे में सभी राजनीतिक दलों की जिम्मेदारी बन जाती है कि वो महज चुनावी जीत तक सीमित न रहें, बल्कि इन समस्याओं के समाधान की दिशा में ठोस नीतियां और कार्ययोजनाएं बनाएं। मगर अफसोस कि भारतीय राजनीति की दिखावटी एकजुटता भी असली मुद्दों से दूर नजर आ रही है। इनके पास ज्यादा सुर्खियां बटोरने वाले मुद्दे जो हैं, जिनके दम पर ये अपना हित साधने में लगे रहते हैं।

थोड़ी देर के लिए इन सब से हटकर विचार करें कि अमेरिका ने भारत पर अतिरिक्त 25 प्रतिशत टैरिफ लगाने का एलान क्या किया, भारत और अमेरिका के बीच व्यापारिक रिश्तों में तनाव आ गया। इस मुद्दे पर केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने जो कहा वह वाकई विचारणीय है। दरअसल उनका कहना है कि आज दुनिया में जो देश दादागिरी कर रहे हैं, वे ऐसा इसलिए कर पा रहे क्योंकि वे आर्थिक तौर पर मजबूत हैं और उनके पास बेहतर टेक्नोलॉजी है। ऐसे में उन्होंने निर्यात बढ़ाने और आयात घटाने का सजेशन दे दिया है। इस पर तो वो खुद भी अमल कर सकते हैं, क्योंकि वर्तमान सरकार का वो हिस्सा हैं। सरकार में रहते हुए नीतियां बनाना और उन्हें अमल में लाना आसान होता है, जबकि विपक्ष में रहते हुए सरकार के काम-काज की खामियां गिनाना आसान होता है, लेकिन उन्हें दूर करने के लिए रास्ता सुझाते हुए उसे मनवा लेना बहुत कठिन काम होता है। यह सच है कि हम आत्मनिर्भर बनकर दुनिया में अग्रणी भूमिका निभाते हुए विश्वगुरु का सच्चा तमगा हासिल कर सकते हैं, पर यह तभी संभव होगा जबकि राजनीतिक इच्छाशक्ति मजबूत होगी। इसी बीच खबर है कि कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे 11 अगस्त को इंडिया ब्लॉक के सांसदों को डिनर पार्टी देने जा रहे हैं। इससे पहले राहुल गांधी ने भी विपक्षी नेताओं को डिनर पर बुलाया था, जिसमें विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श किए जाने के साथ ही वोट चोरी मॉडल के खिलाफ लड़ने की शपथ भी ली गई थी। यदि यह डिनर डिप्लोमेसी इतनी ही कारगर साबित हो रही है तो इसे वाकई आगे भी जारी रखा जाना चाहिए, वर्ना यह नहीं भूलना चाहिए कि आज भी देश में एक तबका ऐसा मौजूद है जिसे दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं हो रही है। इस सिस्टम को सुधारने के साथ ही उसकी चिंता करने की भी आवश्यकता है।

विश्व पटल : ब्रिक्स की एकजुटता ट्रंप का जवाब

गिरीश पांड़े

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत पर एक बार फिर 25 प्रतिशत और टैरिफ लगाकर यानी कुल 50 प्रतिशत टैरिफ लगाकर साबित कर दिया है कि वे वाकई भारत की बढ़ती आर्थिक शक्ति से खौफ खाए हैं। यही नहीं, 25 प्रतिशत रेसिप्रोकल टैरिफ के बाद जो उन्होंने 25 प्रतिशत टैरिफ लगाया है, उसके पीछे का कारण भारत द्वारा रूस से तेल खरीदना बताया है। हालांकि टैरिफ की नई दरें 27 अगस्त से लागू होंगी लेकिन भारत ने उनकी टैरिफ चुनौती को दबाव की नीति कह कर उनकी ही भाषा में जवाब दे दिया है और अतिरिक्त शुल्क लगाने की अमेरिका की कार्रवाई को अनुचित, अन्यायपूर्ण और अविवेकपूर्ण बताया और कहा कि यह देश अपने हितों की रक्षा के लिए झुकने वाला नहीं है।

असल में अमेरिका को भारत-रूस मैत्री कभी रास नहीं आई। अतीत में भी वह रूस से ऊर्जा और हथियार खरीदने के मसले पर टकराव लेता रहा है। मौजूदा रूस-यूक्रेन युद्ध में भारत द्वारा अपनाए गए रुख से भी वह नाराज है। ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इंस्टीट्यूट-जीटीआरआई-ने अमेरिका के फैसले को पाखंडपूर्ण बताया है और मॉस्को के साथ व्यापार के संबंध में अपने सहयोगियों और चीन के प्रति वाशिंगटन के चयनात्मक रवैये को उजागर किया है। वास्तव में ट्रंप के इस कदम का कोई तार्किक आधार नहीं है। अमेरिका का सबसे बड़ा व्यापार घाटा चीन से है (.295 अरब, 2024), जिस पर ट्रंप ने एक समय 145प्र. शुल्क लगाया था। लेकिन चीन ने दुर्लभ खनिज की आपूर्ति रोक दी तो ट्रंप को पीछे हटना पड़ा। अब चीन पर मात्र 30प्र. टैरिफ है, जबकि वह और तुर्की भी रूस से तेल आयात करते हैं। फिर भारत को दंड क्यों? इससे स्पष्ट होता है कि इस बार भारत के साथ ही अन्य ब्रिक्स देशों पर मनमाने टैरिफ लगाने के पीछे ट्रंप की मंशा कुछ और नजर आती है और वह ब्रिक्स, की बढ़ती ताकत से चिंतित हैं। ट्रंप अपने दूसरे शासनकाल से ही ब्रिक्स† को धमकी देते आए हैं। ब्रिक्स† जिसमें ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अखेका संस्थापक सदस्यों के अलावा उसमें जुड़े नये सदस्यों जैसे मिस्त्र, ईरान, सऊदी अरब, यूएई, इथियोपिया शामिल हैं। यह संगठन जहां दुनिया की लगभग आधी आबादी के साथ 30प्र. से अधिक वैश्विक जीडीपी को समेटे है और जिसमें भारत और चीन जैसी बड़ी अर्थव्यवस्थाएं शामिल हैं, वहीं यह वैश्विक दक्षिण का सशक्त मंच भी है, जो ऊर्जा, व्यापार, निवेश, तकनीक और वैकल्पिक वित्तीय ढांचे को भी बढ़ावा देता है। प्राकृतिक संसाधन, विशाल बाजार, भू-राजनीतिक संतुलन और सामूहिक आवाज इसकी प्रमुख ताकत हैं।

ब्रिक्स† से ट्रंप की चिंता मुख्यतः दो कारणों से है। उनकी पहली चिंता ब्रिक्स† द्वारा कॉमन करेंसी अपनाने की संभावना को लेकर है जिस बारे में वह ब्रिक्स को धमकी भी दे चुके हैं। दूसरी चिंता ब्रिक्स† द्वारा अंतरराष्ट्रीय सहयोग, बहुध्रवीय और समावेशी विश्व व्यवस्था के निर्माण पर बल देने को लेकर है जिसकी शुरूआत संयुक्त राष्ट्र, विश्व स्वास्थ्य संगठन और बहुपक्षीय विकास बैंक जैसी वैश्विक संस्थाओं में व्यापक सुधार के साथ करने के लिए ब्रिक्स के सभी देशों ने आह्वान किया है और यहां ट्रंप को अमेरिकी चौधराहट को बरकरार रखने की चुनौती है।

लेकिन ट्रंप के इस टैरिफ कदम से ब्रिक्स में जो एकजुटता दिखाई दे रही है, उसे हम भविष्य के लिए शुभ संकेत कह सकते हैं। ब्राजील के साथ ही रूस, चीन तथा दक्षिण अफ्रीका जिस प्रकार से भारत के साथ खड़े दिखाई दे रहे हैं, वह भारत के लिए भी अच्छी खबर कही जा सकती है। चीन ने भारत पर ट्रंप के टैरिफ को 'दबावपूर्ण' और अस्वीकार्य कहा, रूस ने इसे वैश्विक सहयोग रोकने में नाकाम संरक्षणवाद बताया और दक्षिण अखेका ने ब्रिक्स के भीतर मिल कर इसका जवाब देने पर जोर दिया।

भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार की मास्को यात्रा और उसके बाद पुतिन की निकट भविष्य में भारत यात्रा तथा प्रधानमंत्री मोदी की 31 अगस्त से 1 सितम्बर, 2025 को चीन के टियांजिन में शंघाई सहयोग संगठन की 25वीं बैठक में भाग लेने से भी भारत-चीन-रूस के बीच त्रिपक्षीय वार्ता की फिर से शुरूआत हो सकती है। इस प्रकार ब्रिक्स की एकजुटता को शायद ही ट्रंप प्रभावित कर सकें। ऐसा होता है तो यह न केवल ब्रिक्स के लिए, बल्कि संपूर्ण विश्व समुदाय के लिए हितकर होगा।

संक्षिप्त समाचार

यूसीएलए से एक बिलियन डॉलर की डील चाहते हैं ट्रंप

वाशिंगटन, एजेंसी। ट्रंप प्रशासन ने यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया, लॉस एंजिल्स (यूसीएलए) से 1 अरब डॉलर (लगभग 8,300 करोड़ रुपए) का सेटलमेंट मांगा है। प्रशासन ने इस हफ्ते यूसीएलए के 584 मिलियन डॉलर के फेडरल ग्रांट रोक दिए हैं। न्याय विभाग (डीओजे) ने हाल में यूसीएलए पर यहूदी विरोध के आरोप लगाए थे। यूसीएलए पहला पब्लिक विश्वविद्यालय है जिसके फंड पर इस तरह की कार्रवाई हुई है। इससे पहले निजी कॉलेजों के फंड भी रोक दिए गए थे। यूसीएलए के नए अध्यक्ष जेम्स बी. मिलिकेन ने कहा कि डीओजे से नोटिस मिला है और वे मामले की समीक्षा कर रहे हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि इतनी बड़ी रकम का भुगतान करने से विश्वविद्यालय की रिसर्च और छात्रों पर गंभीर असर पड़ेगा। हाल ही में यूसीएलए ने तीन यहूदी छात्रों और एक प्रोफेसर के साथ 6 मिलियन डॉलर का समझौता किया था। इनका आरोप था कि 2024 में प्रोपैलिस्तीनी प्रदर्शनकारियों ने उन्हें क्लास और कैंपस के अन्य हिस्सों में जाने से रोका था। विश्वविद्यालय का कहना है कि वह कैंपस में सुरक्षा और सभी के लिए समान माहौल बनाए रखने के लिए कदम उठाता रहेगा।

ईरान ने कैदियों को एविन जेल में वापस भेजा

तेहरान, एजेंसी। तेहरान में अधिकारियों ने कुछ कैदियों को फिर से एविन जेल में भेजा, जिसे जून में इस्राइल ने हवाई हमले में निशाना बनाया था। सरकारी मीडिया के अनुसार, यह पहला दल है और आगे और कैदियों को लाया जाएगा। नई सुविधाएं बनाई गई हैं, लेकिन कुछ कैदी हथकड़ी पहनने से मना कर रहे थे। एक कार्यकर्ता की पत्नी ने आरोप लगाया कि पुलिस ने उन्हें मजबूर करने के लिए पीटा। इस्राइली हमले में 71 लोग मारे गए थे, जबकि कुछ रिपोर्टों में संख्या 80 बताई गई। कारण स्पष्ट नहीं है कि जेल को क्यों निशाना बनाया गया।

कनाडा, फ्रांस और ईरान ने इस्राइल की गाजा योजना का विरोध किया

तेहरान, एजेंसी। कनाडाई प्रधानमंत्री मार्क कार्नी ने कहा कि गाजा पर इस्राइल का कब्ज़ा बंधकों की जान को खतरे में डाल देगा और मानवीय स्थिति खराब करेगा। फ्रांस ने भी इस योजना को अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन बताते हुए कड़ी निंदा की और दो-राष्ट्र समाधान पर जोर दिया। ईरान ने इस योजना को नरसंहार की तैयारी कहा और इस्लामी देशों से संयुक्त कदम उठाने की अपील की। वहीं, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद शनिवार को इस मुद्दे पर आपात बैठक करेगी।

अमेरिका-एमोरी यूनिवर्सिटी और सीडीसी कैंपस के पास गोलीबारी, संदिग्ध व पुलिसकर्मी की मौत

वाशिंगटन, एजेंसी। अटलांटा के एमोरी विवि स्थित अमेरिकी रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केंद्र के मुख्यालय के बाहर एक युवक ने गोलीबारी की। इसमें एक पुलिसकर्मी की मौत हो गई। बाद में हमलावर भी मृत पाया गया। अटलांटा पुलिस प्रमुख डारिन शियरबाम ने बताया कि बंदूकधारी सीडीसी परिसर के सामने वाली एक इमारत की दूसरी मंजिल पर पाया गया और घटनास्थल पर ही उसकी मौत हो गई। उन्होंने कहा कि हमें नहीं पता कि गोली पुलिसवालों ने चलाई थी या उसने खुद चलाई थी। हमलावर के पास एक लंबी बंदूक थी। अधिकारियों ने घटनास्थल से तीन अन्य हथियार बरामद किए।

आईआरएस अधिकारी बिली लॉन्ग पर ट्रंप एक्शन

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने पूर्व सांसद बिली लॉन्ग को आईआरएस (इनकम टैक्स विभाग) के कमिश्नर पद से हटा दिया है। उन्हें पद संभाले हुए अभी दो महीने भी पूरे नहीं हुए थे। व्हाइट हाउस के एक अधिकारी ने बताया कि इस पद से हटाने का कारण नहीं बताया गया है। ट्रेजरी सचिव स्कॉट बेसेंट अब अस्थायी कमिश्नर के रूप में काम करेंगे। बिली लॉन्ग को सीनेट ने 53-44 वोट से मंजूरी दी थी, जबकि डेमोक्रेट सांसदों ने उनके पुराने काम को लेकर चिंता जताई थी। लॉन्ग पहले एक नीलामीकर्ता थे और टैक्स प्रशासन का कोई अनुभव नहीं रखते थे।

हृद्र-डोभाल ने रूसी उप-प्रधानमंत्री से की मुलाकात, पुतिन ने स्वीकारा निमंत्रण, साल के अंत में आएंगे भारत

बीजिंग, एजेंसी।
राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल ने रूस के प्रथम उपप्रधानमंत्री डेनिस मंतुरोव के साथ द्विपक्षीय सैन्य-तकनीकी संबंधों और रणनीतिक क्षेत्रों में संयुक्त परियोजनाओं के कार्यान्वयन पर चर्चा की। डोभाल द्विपक्षीय ऊर्जा और रक्षा संबंधों पर महत्वपूर्ण वार्ता करने और इस वर्ष के अंत में राष्ट्रपति पुतिन की भारत यात्रा की तैयारी के लिए रूस में हैं। भारत स्थित रूसी दूतावास के अनुसार, डोभाल और मंतुरोव की मुलाकात शुक्रवार को हुई। दूतावास ने एक पोस्ट में कहा, ''इस बैठक के दौरान भारत-रूस के बीच सैन्य-तकनीकी सहयोग से जुड़े मौजूदा मुद्दों पर चर्चा हुई। साथ ही असैन्य विमान निर्माण, धातु उद्योग और रासायनिक उद्योग जैसे अन्य रणनीतिक क्षेत्रों में संयुक्त परियोजनाओं को लागू करने पर भी बातचीत हुई। डोभाल ने बृहस्पतिवार को क्रेमलिन में रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से मुलाकात की थी और दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय सहयोग पर चर्चा की। मुलाकात के दौरान, उन्होंने बाहरी दबाव के बावजूद रूस के साथ सभी मोर्चों पर सहयोग जारी रखने की नयी दिल्ली की प्रतिबद्धता दोहराई। डोभाल की यात्रा ऐसे समय में हुई है जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक कार्यकारी आदेश जारी करके रूस से तेल खरीदने पर भारतीय वस्तुओं पर 25 प्रतिशत का अतिरिक्त शुल्क लगाया है। इसके बाद कुल शुल्क 50 फीसदी हो गया है। सूत्रों के अनुसार, डोभाल ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की ओर से राष्ट्रपति पुतिन को इस वर्ष के अंत में भारत आने का निमंत्रण दिया। पुतिन ने आभार के साथ निमंत्रण स्वीकार कर लिया है।

एक न्यूक्लियर अटैक और नागासाकी की इस मां का दूध बन गया बच्चे के लिए जहर

बीजिंग, एजेंसी।
80 साल पहले अमेरिका ने हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु हमला किया था। इसमें एक झटके में हजारों लोगों की मौत हुई और न जाने कितने लोगों की जिंदगी तबाह हो गई और जो लोग बच गए उनकी जिंदगी भी हमेशा के लिए बदल गई। ब्लास्ट और रेडिएशन से बची महिलाओं को नई वास्तविकताओं का सामना करना पड़ रहा है। नागासाकी ही महिलाओं की कहानियां बताती हैं कि कैसे रेडिएशन ने महिलाओं की जिम्मेदारी, पारिवारिक अपेक्षाओं और हिबाकुशा माताओं में जनता के विश्वास के मायने ही बदल दिए। ऐसी ही एक कहानी नागासाकी की एक मां की है, जिसके बेटे को बाद में ल्यूकेमिया हो गया और इसकी वजह डॉक्टरों ने स्तनपान के दौरान फैलने वाली विकिरण बीमारी बताया। नाकामुरा... ये उस मां का नाम है जो ये मानती है कि उसके बच्चे की मौत उसकी वजह से हुई। दरअसल, अमेरिका के परमाणु हमले में बचने के तीन साल बाद

वो एक बच्चे को जन्म देती हैं। बच्चा धीरे-धीरे बड़ा होता है और एक दिन उसकी पीठ पर कुछ गांठें दिखाई पड़ती हैं। पहले तो वो ये सोचती हैं कि ये सिर्फ दाने हैं और बेटे से कहती हैं कि वो अस्पताल में जाकर डॉक्टर की सलाह ले। 2003 में 55 साल की उम्र में उनका बेटा अस्पताल जाता है। धीरे-धीरे वक्त बीतता जाता है लेकिन उसकी कोई खैर खबर नहीं मिलती है। आखिरकार हारकर वो बेटे का हाल जानने के लिए खुद अस्पताल पहुंचती हैं। उनका बेटा उनसे कहता है कि डॉक्टर कुछ टेस्ट करेंगे। जब टेस्ट के रिजल्ट आते हैं तो पता चलता है कि उनके बेटे को स्टेज 4 ल्यूकेमिया (ब्लड कैंसर की एडवांस स्टेज) है। ये उनके शरीर के दूसरे हिस्सों में भी फैल चुका था। नाकामुरा बताती हैं कि डॉक्टरों ने कहा कि इस कैंसर की जिम्मेदार और कोई नहीं बल्कि वो खुद हैं। उन्होंने ने ही अपने बेटे को कैंसर दिया है, जो स्तनपान के जरिए उनके बेटे के अंदर पहुंचा है। एक समय के बाद उनके बेटे की मौत हो जाती है तो नाकामुरा को विश्वास हो गया कि उन्होंने ही अपने बेटे को मार डाला। ये ख्याल उन्हें आज भी चैन से जीने नहीं देता है और डॉक्टर कही बात उन्हें बार-बार परेशान करती है। परमाणु विकिरण के संपर्क में आने वाली महिलाओं को आमतौर पर परमाणु विस्फोट के तुरंत बाद स्तनपान बंद करने की सलाह दी जाती है। हालांकि विशेषज्ञों का कहना है कि इस बात का कोई ठोस प्रमाण नहीं है कि रेडिएशन के संपर्क में आने के सालों बाद भी मां बच्चों को कैंसर पैदा करने वाला पदार्थ दे सकती है। बांझपन या बच्चे की विकलांगता का विकिरण जोखिम से कोई लेना-देना नहीं होता, तब भी हिबाकुशा महिलाओं को अक्सर दोषी ठहराया जाता था।

संयुक्त राष्ट्र ने गाजा पर नियंत्रण के इस्राइल के फैसले को बताया खतरनाक

वाशिंगटन, एजेंसी। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने शुक्रवार को कहा कि गाजा शहर पर नियंत्रण करने के इस्राइल के फैसले से लाखों फलस्तीनियों के लिए पहले से ही विनाशकारी परिणाम और भी गंभीर हो सकते हैं, और इससे शेष बंधकों समेत और भी लोगों की जान को खतरा हो सकता है। गुटेरेस ने यह भी चेतावनी दी कि इस्राइली आक्रमण के परिणामस्वरूप और अधिक जबरन विस्थापन, हत्याएं और बड़े पैमाने पर विनाश होगा, जिससे गाजा में फलस्तीनी आबादी की अकल्पनीय पीड़ा और बढ़ जाएगी। मामले में सहयोगी प्रवक्ता स्टेफनी ट्रेम्बले ने कहा कि महासचिव ने युद्धविराम की अपनी तत्काल अपील दोहराई। ट्रेम्बले ने शुक्रवार को संयुक्त राष्ट्र के संवाददाताओं को बताया कि संयुक्त राष्ट्र प्रमुख ने इस्राइल से गाजा, पश्चिमी तट और पूर्वी यरुशलम समेत फलस्तीनी क्षेत्र में अपनी अवैध उपस्थिति को समाप्त करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय की जुलाई 2024 की सलाहकार राय का पालन करने का आग्रह किया।

रूस-यूक्रेन युद्ध खत्म कराने में मदद करेगा भारत, टैरिफ तनाव के बीच अमेरिका सांसद ने जताई उम्मीद

वाशिंगटन , एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा भारत पर लगाए गए टैरिफ के बाद दोनों देशों के संबंधों में खटास नजर आ रही है। इसी बीच अमेरिकी सीनेटर लिंडसे ग्राहम ने शुक्रवार को रूस और यूक्रेन युद्ध समाप्त करवाने के लिए भारत से अपने प्रभाव को इस्तेमाल करने का आग्रह किया है। उन्होंने कहा कि अगर भारत के जरिए यह युद्ध समाप्त होता है तो यह भारत और अमेरिका के संबंधों को बेहतर बनाने में सबसे महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

सोशल मीडिया साइट एक्स पर पोस्ट करते हुए ग्राहम ने लिखा, जैसा कि मैं भारत में मौजूद अपने दोस्तों से कहता रहा हूं, भारत और अमेरिका के संबंधों को बेहतर बनाने के लिए वह एक सबसे महत्वपूर्ण काम कर सकते हैं। वह काम है राष्ट्रपति ट्रंप की यूक्रेन में हो रहे खूनखराबे को रोकने की कोशिश में मदद करना।

ग्राहम ने रूस से भारत की तेल खरीद का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा, भारत पुतिन के सस्ते तेल का दूसरा सबसे बड़ा खरीददार है। इस तेल खरीद के जरिए मिले पैसे से ही पुतिन की युद्ध मशीन को मदद मिलती है। राष्ट्र्पति पुतिन और पीएम मोदी के बीच हुए हालिया फोन कॉल का जिक्र करते हुए ग्राहम ने कहा, मुझे उम्मीद है कि पीएम मोदी ने पुतिन के साथ अपने हालिया फोन कॉल में यूक्रेन के इस युद्ध का न्यायसंगत, सम्मानजनक और हमेशा के लिए विवाद खत्म करने वाले प्रस्ताव को स्वीकार करने की आवश्यकता पर जोर दिया होगा। मेरा हमेशा से यही मानना रहा है कि इस मामले में भारत का प्रभाव है और मुझे उम्मीद है कि वह बुद्धिमानी के साथ इसका इस्तेमाल करेंगे।

रूस-यूक्रेन युद्ध पर पुतिन से मुलाकात-चर्चा करेंगे ट्रंप, 15 अगस्त को अलास्का में होगी बैठक

वॉशिंगटन, एजेंसी।
अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने शुक्रवार को कहा कि रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से 15 अगस्त को अलास्का में मुलाकात करेंगे। जानकारी के मुताबिक दोनों नेता यूक्रेन युद्ध पर चर्चा करेंगे। ट्रंप ने मेरे और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के बीच बहुप्रतीक्षित बैठक अगले शुक्रवार, 15 अगस्त, 2025 को ग्रेट स्टेट ऑफ अलास्का में होगी। आगे की जानकारी बाद में दी जाएगी।

अगर यह बैठक होती है तो 2021 के बाद अमेरिका और रूस के बीच यह पहला शिखर सम्मेलन होगा। तब पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडन ने जिनेवा में पुतिन से मुलाकात की थी। यह ट्रंप की युद्ध खत्म करने की कोशिश में एक अहम कदम होगा, हालांकि रूस और यूक्रेन की शांति शर्तें अभी भी एक-दूसरे से बहुत अलग हैं, इसलिए लड़ाई रुकने की गारंटी नहीं है। ट्रंप की इस घोषणा के बीच, मोर्चे पर लड़ रहे यूक्रेनी सैनिकों को कूटनीतिक हल की ज्यादा उम्मीद नहीं है। ट्रंप ने लगभग दो हफ्ते पहले पुतिन को बमबारी रोकने का अल्टीमेटम दिया था और धमकी दी थी कि अगर

रूस पीछे नहीं हटता तो अतिरिक्त प्रतिबंध और रूसी तेल खरीदने वाले देशों पर टैरिफ लगाए जाएंगे। रूस की सेना धीरे-धीरे यूक्रेन में आगे बढ़ रही है और शहरों पर लगातार हमले कर रही है। डोनेटस्क के पोक्रोव्स्क इलाके में लड़ाई सबसे ज्यादा तेज है, जहां रूस ड्निप्रोपेट्रोव्स्क की ओर बढ़ने की कोशिश कर रहा है। यूक्रेन के पास जनशक्ति की कमी है, फिर भी सैनिक डटे हुए हैं। डोनेटस्क में ड्रोन यूनिट के एक कमांडर बूदा ने कहा, रूस से बातचीत असंभव है, उन्हें हराना ही एकमात्र रास्ता है। दक्षिणी जापोरिज्जिया में हॉवित्जर यूनिट के कमांडर वारसा ने कहा, हम अपनी जमीन पर खड़े हैं, हमारे पास पीछे हटने का विकल्प नहीं है। क्रेमलिन के मुताबिक, पुतिन ने चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग से फोन पर बात की और ट्रंप के दूत स्टीव विटकॉफ से हुई मुलाकात की जानकारी दी। शी ने यूक्रेन संकट के दीर्घकालिक समाधान के लिए समर्थन जताया।

ट्रंप के टैरिफ वार के बीच रूस में डोभाल की मैराथन बैठक, टॉप-3 नेताओं से मिले

रूस , एजेंसी।
राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल ने शुक्रवार को मास्को में रूस के उप प्रधानमंत्री डेनिस मांतुरोव से मुलाकात की। यह दो दिनों में उनकी तीसरी उच्चस्तरीय बैठक थी। गुरुवार को डोभाल ने रूसी सुरक्षा परिषद सचिव सर्गेई शोइगू से बातचीत की और राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से भी भेंट की थी। रूसी सरकार के बयान के मुताबिक, डोभाल और मांतुरोव ने सैन्य-तकनीकी सहयोग के साथ-साथ नागरिक विमानन और रासायनिक उद्योग जैसे अन्य रणनीतिक क्षेत्रों में संयुक्त परियोजनाओं के क्रियान्वयन पर चर्चा की। मांतुरोव ने नवंबर 2024 में मुंबई में हुई पिछली भारत-रूस की बैठक में सह-अध्यक्षता की थी।

डोभाल की यह यात्रा ऐसे समय हुई है जब भारत-अमेरिका संबंधों में तनाव

तेज हो गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत की रूस से तेल खरीद जारी रखने के कारण भारतीय आयात पर अतिरिक्त 25त्र शुल्क लगा दिया है, जो पहले से लागू 25प्रतिशत टैरिफ के साथ मिलकर कुल 50प्रतिशत हो गया है।

पुतिन की भारत यात्रा पर भी चर्चा

डोभाल और रूसी नेताओं के बीच बातचीत में इस साल के अंत में होने वाले वार्षिक भारत-रूस शिखर सम्मेलन के लिए पुतिन की नई दिल्ली यात्रा भी एजेंडे में रही। गुरुवार को डोभाल ने कहा था कि ये वार्षिक बैठकें हमेशा मील का पत्थर साबित हुई हैं और रिश्तों को नई दिशा देती रही हैं। शुक्रवार को पुतिन ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से फोन पर बात की, जिसमें उन्होंने यूक्रेन संघर्ष के समाधान के प्रयासों की जानकारी दी। पीएम मोदी ने एक्स पर लिखा, हमने द्विपक्षीय एजेंडे की प्रगति की समीक्षा की और भारत-रूस विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी को और गहरा करने की प्रतिबद्धता दोहराई। पुतिन के इस साल के अंत में नई दिल्ली आने की उम्मीद है, जहां वे वार्षिक शिखर सम्मेलन में प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात करेंगे।

8 घायल, 1500 लोगों को रेस्क्यू किया

कराची , एजेंसी। पाकिस्तान के कराची में लांढी के एक्सपोर्ट प्रोसेसिंग क्षेत्र में गुरुवार सुबह एक कपड़ा फैक्ट्री में भीषण आग लग गई। इस हादसे में 8 लोग घायल हो गए और इमारत पूरी तरह ढह गई। पाकिस्तानी मीडिया के अनुसार, आग सुबह लगी और करीब चार घंटे से अधिक समय तक बेकाबू रही। आग बुझाने के लिए 12 फायर टेंडर तैनात किए गए, लेकिन आग तेजी से फैल गई।

पास की चार अन्य फैक्ट्रियों तक भी आग पहुंच गई। फैक्ट्री में पुराने कपड़ों की रीसाइकलिंग होती थी और वहां केमिकल भी रखे थे, जिससे आग और तेज हो गई। रेस्क्यू अधिकारी आबिद जिलाल ने बताया कि आग लगने के समय फैक्ट्री में 1,200 से 1,500 लोग मौजूद थे। सभी मजदूरों को सुरक्षित रेस्क्यू किया गया और आसपास की इमारतों को भी खाली कराया गया। सिंध के मुख्यमंत्री सैयद मुराद अली शाह ने घटना का संज्ञान लिया और बचाव कार्यों में लगे। मुख्य अग्निशमन अधिकारी मुहम्मद हुमायूं ने बताया कि आग पहली मंजिल से शुरू हुई और तेजी से फैल गई। आग का कारण अभी पता नहीं चल सका है। मलबा हटाने में तीन से चार दिन लग सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि क्षेत्र की फैक्ट्रियों को सुरक्षा सर्वे फॉर्म भेजे गए थे, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। जियो न्यूज के अनुसार, जून में लांढी में एक दूसरी फैक्ट्री में आग लगने से पांच कर्मी घायल हुए थे।

हबल अंतरिक्ष दूरबीन ने दूसरे सौरमंडल से आए धूमकेतु की सबसे साफ तस्वीर ली

वाशिंगटन, डीसी, एजेंसी।
हबल अंतरिक्ष दूरबीन ने एक ऐसे धूमकेतु की अब तक की सबसे साफ तस्वीर खींची है, जो हमारे सौरमंडल के बाहर के किसी तारे से आ रहा है। यह धूमकेतु बहुत तेजी से यात्रा कर रहा है। यह तस्वीरें नासा और यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी ने बृहस्पतिवार को साझा कीं। इस धूमकेतु का नाम 3आई-एटलस है। इसे पिछले महीने चिली में एक जमीन पर लगी दूरबीन से खोजा गया था। यह अब तक पाया गया तीसरा ऐसा अंतरतारकीय (दूसरे तारे से आया हुआ) पिंड है, जो हमारे सौरमंडल से होकर गुजरेगा। अच्छी बात यह है कि इससे पृथ्वी को कोई खतरा नहीं है। शुरुआत में वैज्ञानिकों ने सोचा था कि इसके बीच का बर्फीला हिस्सा (जिसे नाभिक कहते हैं) बहुत बड़ा होगा। लेकिन हबल की ली गई तस्वीरों से पता चला कि इसका आकार ज्यादा से ज्यादा 5.6 किलोमीटर है, और हो सकता है कि यह सिर्फ 320 मीटर ही हो। यह धूमकेतु करीब 2 लाख 9 हजार किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हमारी दिशा में आ रहा है। लेकिन यह पृथ्वी के बजाय मंगल ग्रह के ज्यादा पास से गुजरेगा, इसलिए इससे हमें कोई खतरा नहीं है।नासा के अंतरिम प्रशासक सीन डफी ने 2030 तक चंद्रमा की सतह पर एक परमाणु रिएक्टर स्थापित करने की योजना की घोषणा की है।

11000 की जनसंख्या वाले देश पर मंडरा रहा है डूबने का खतरा

ऑस्ट्रेलिया ने खोले दरवाजे

तुवालु, एजेंसी।
समुद्र का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है, जिसके कारण दुनिया के कई देश डूबने की कगार पर हैं। प्रशांत महासागर में मौजूद तुवालु भी इन्हीं में से एक है। वायर्ड की रिपोर्ट के अनुसार, तुवालु अगले 25 साल में डूब जाएगा। ऐसे में तुवालु के लोगों ने अभी से पलायन करना शुरू कर दिया है।

9 कोरल आईलैंड और अटॉल्स से बने तुवालु देश की जनसंख्या महज 11,000 है। यह द्वीप समुद्रतल से महज 2 मीटर ऊंचा है। ऐसे में तुवालु से लोगों का पलायन दुनिया का पहला योजनाबद्ध प्रवास माना जा रहा है।

समुद्रतल से कम ऊंचाई के कारण तुलावु में अक्सर बाढ़ और समुद्री तूफान

जैसे खतरे बने रहते हैं। रिपोर्ट्स के अनुसार, तुवालु के 9 में से 2 आईलैंड पहले ही डूब चुके हैं और बाकी आईलैंड भी डूबने की कगार पर हैं। 15 सालें की तुलना में 2023 में तुवालु के आसपास का समुद्रीस्तर 15 सेंटीमीटर बढ़ गया था। ऐसे में संभावना है कि अगले 25 सालों यानी 2050 तक तुवालु पूरी तरह से डूब जाए। 2023 में तुवालु और ऑस्ट्रेलिया ने फॉलेपिली समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। इसके तहत हर साल 280 तुवालु नागरिकों को ऑस्ट्रेलिया की स्थायी नागरिकता प्रदान की जाएगी। 16 जुलाई से 18 जुलाई के बीच आवेदन का पहला फेज देखने को मिला।

ऑस्ट्रेलियन हाई कमिशन के अनुसार, 8,750 लोगों ने आवेदन किया था। जिनमें से बैलट के जरिए 280 लोगों का चयन किया गया है।

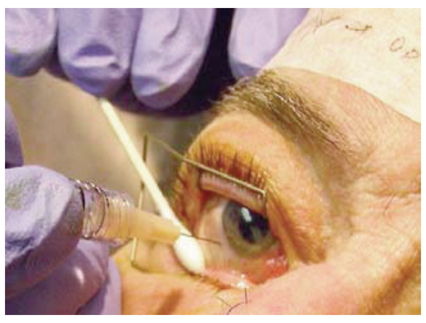

मधुमेह है डायबिटिक रेटिनोपैथी का मुख्य कारण

जीवनशैली से जुड़ी कई बीमारियां हमें अपनी चपेट में ले रही है। मधुमेह भी ऐसी ही एक बीमारी है, जो लोगों को अपने शिकंजे में ले रही है। हमारे हृदय और लीवर को मधुमेह के कारण कितना नुकसान पहुंचता है, यह तो हम अच्छी तरह जानते हैं, लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि हमारी आंखों की रोशनी के लिए भी कि मधुमेह उतना ही नुकसानदायक है। मधुमेह होने कि वजह से आंखों का एक गंभीर रोग पैदा हो सकता है, जिसे चिकत्सकों की भाषा में डायबिटिक रेटिनोपैथी कहा जाता है। डायबिटिक रेटिनोपैथी होने से अगर आंखों की दृष्टि चली गई तो उसे वापस नहीं लाया जा सकता है।

ऐसे होती है डायबिटिक रेटिनोपैथी

नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. राजीव जैन के अनुसार डायबिटिक रेटिनोपैथी एक हल्की बीमारी के रूप में शुरू होती है। बीमारी के शुरुआती चरण के दौरान रेटिना में छोटी रक्त वाहिकाएं कमजोर हो जाती हैं और यह छोटे बुल्गेस को विकसित करती है जिसे माइक्रोएनिअरीसम्स कहते है। इस बीमारी में रक्त में शुगर की मात्रा अधिक हो जाती है, जो आंखों सहित पूरे शरीर को नुकसान पहुंचा सकती है। रक्त में मधुमेह अधिक बढ़ने से रेटिना में रक्त वाहिकाओं को नुकसान होता है, जिसके कारण डायबिटिक रेटिनोपैथी हो सकती है। इस बीमारी से रेटिना के ऊतकों में सूजन हो सकती है, जिससे दृष्टि धुंधली होती है। जिस व्यक्ति को लंबे समय से मधुमेह होता है, उसे डायबिटिक रेटिनोपैथी होने की संभावना उतनी ही अधिक हो जाती है। इतन ही नहीं डायबिटिक रेटिनोपैथी का इलाज नहीं कराने पर यह अंधेपन का कारण भी बन सकती है।

डायबिटिक रेटिनोपैथी के लक्षण

- आंखों का बार-बार संक्रमित होना।
- चश्मे के नंबर बार-बार बदलना।
- सुबह उठने के बाद कम दिखाई देना।
- सिर में हमेशा दर्द रहना।
- आंखों की रोशनी अचानक कम हो जाना।
- रंग को पहचानने में कठिनाई।

डायबिटिक रेटिनोपैथी का उपचार

डायबिटिक रेटिनोपैथी के रोगियों का इलाज कैसे किया जा सकता है, इस पर नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. राजीव जैन कहते हैं कि समस्या से निजात पाने के लिए लेजर उपचार का प्रयोग किया जाता है, इस उपचार विधि के दौरान रेटिना के पीछे की नई रक्त वाहिकाओं के विकास के इलाज के लिए और आंखों में रक्त और द्रव के रिसाव को रोकने के लिए किया जाता है। इलाज प्रक्रिया के दौरान आंखों को सुन्न करने और पुतलियों को बड़ा करने के लिए विशेष रूप की आई ड्रॉप डाली जाती है, इसके बाद आंखों का लेजर किरणों से इलाज किया जाता है। इलाज के दौरान लगभग 30.40 मिनट लगते हैं। इसमें आम तौर पर दृष्टि का धुंधला होना और प्रकाश के प्रति संवेदनशीलता का बढ़ जाना जैसे कुछ दुष्प्रभाव हो सकते हैं। **इंजेक्शन से उपचार:** डायबिटिक रेटिनोपैथी से निजात पाने के दूसरे तरीके में आंखों में इंफ्लामेशन को कम करने या आंखों के पीछे नयी रक्त वाहिकाओं को बनने से रोकने के लिए आंखों में ल्यूसेंटिस, अवास्टिन जैसे इंजेक्शन लगाए जाते है। इंजेक्शन आम तौर पर एक महीने में एक बार लगाया जाता है और एक बार जब दृष्टि स्थिर हो जाती है तो इंजेक्शन लगाना बंद कर दिया जाता है। इलाज की इस विधि में जलन या बेचैनी आंखों के अंदर रक्तस्राव आंखों में खुजली, आंखों में कुछ तैरने या आंखों में कुछ होने का अहसास हो सकता हैं। **सर्जरी से उपचार:** लेजर और इंजेक्शन उपचकर की विधि से जब इलाज संभव नहीं होता है तो विट्रेक्टॅमी नामक सर्जरी से इलाज किया जाता है, जो इसके इलाज के लिए एक कारगर तरीका है।

डायबिटिक रेटिनोपैथी से ऐसे करें बचाव

आंखों पर मधुमेह के अधिक बढ़ने से प्रभाव शुरू हो जाता है, इसलिए इससे बचने का सबसे अच्छा तरीका है कि मधुमेह का पता लगते ही ब्लड शुगर और कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को बढ़ने से रोकें। इसके लिए डॉक्टर के बताए नुस्खों का पालन करें और दवाएं लेते रहें। इसके अलावा डायबिटीज होने पर आपको साल में एक-दो बार आंखों की जांच करानी चाहिए, जिससे आंखों पर अगर किसी तरह का प्रभाव शुरू हो जाए, तो उसका समय पर इलाज किया जा सके। आपको अगर डायबिटीज बहुत समय से हैं तो आपको हर 3 महीने में आंखों की जांच करानी चाहिए।

रेसिपी

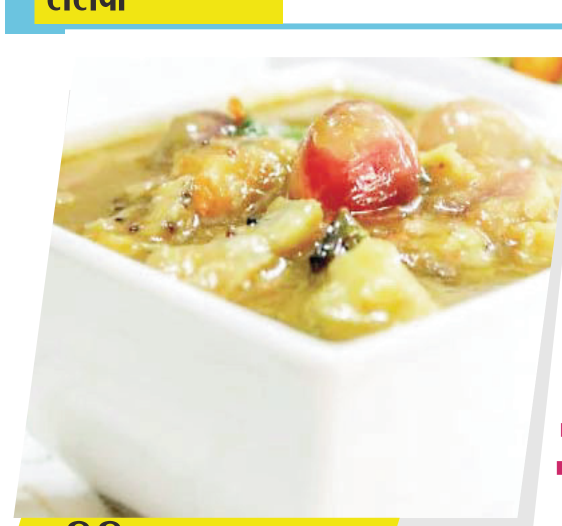

वेजिटेबल फिंगर्स

सामग्री

- अरहर दाल: 1 कप ■ लाल मिर्च- 2
- छोटा प्याज (छिला हुआ): 1 कप
- कटे हुए टमाटर: 2
- इमली का गूदा: 4 चम्मच
- सांबर पाउडर- 1 चम्मच
- नमक: स्वा के अनुसार ■ सरसों: 1 चम्मच
- हींग: चुटकी भर ■ करी पत्ता: 6
- बारीक कटी धनिया पत्ती: 4 चम्मच

विधि

अरहर दाल को धोकर दस मिनट के लिए भिगो दें। दाल को कुकर में दो कप पानी के साथ डालें और तीन से चार सीटी लगाएं। जब दाल पक जाए तो उसे अच्छी तरह से मैश कर दें। अब कुकर में टमाटर, इमली का गूदा, सांबर पाउडर, नमक और एक चौथाई कप पानी डालें। कुकर बंद करके दो सीटी लगाएं। अब दाल और इमली के मिश्रण को एक बड़े पैन में डालें और अच्छी तरह से मिलाएं। एक छोटे पैन में एक चम्मच तेल गर्म करें और छौंक की सभी सामग्री डालें। एक मिनट बाद इस छौंक को तैयार सांबर में डाल दें। अब सांबर वाले पैन को गैस पर चढ़ाएं। एक उबाल आने के बाद आंच धीमी कर दें और मध्यम आंच पर पांच मिनट तक उबालें। अगर सांबर गाड़ा है तो उसमें थोड़ा-सा पानी मिलाएं और उबालें। नमक चख लें। धनिया पत्ती से गार्निश करें और सर्व करें।

आलू कुल्चा

सामग्री

■ मैदा: 2 कप ■ चीनी: 1 चम्मच ■ बेकिंग सोडा: 1/4 चम्मच ■ गाढ़ा दही: 1/4 कप ■ तेल: 2 चम्मच ■ गुनगुना पानी: गूंदने के लिए भरावन के लिए ■ उबले आलू: 2 ■ कटी मिर्च: 1 ■ कश्मीरी लाल मिर्च: 1/2 चम्मच ■ गरम मसाला: 1/4 चम्मच ■ अदरक: 1 चम्मच ■ अमचूर: 1/4 चम्मच ■ अजवाइन: 1/4 चम्मच ■ नमक: स्वादानुसार ■ काले तिल: 2 चम्मच ■ हरा धनिया चम्मच ■ बेकिंग पाउडर: 1 चम्मच ■ बटर- 2 चम्मच

विधि

मैदा, चीनी, बेकिंग पाउडर, बेकिंग सोडा, नमक और दही को एक बरतन में डालकर अच्छी तरह से मिलाएं। गुनगुने पानी की मदद से मैदा को गूंद लें। गीले सूती कपड़े से ढककर दो घंटे के लिए छोड़ दें। एक बाउल में मैश किया आलू और भरावन की सभी साम्रगी डालें और अच्छी तरह से मिलाएं। गूंदे हुए मैदे से लोई काटें। उसके बीच में हल्का गड्ढा-सा करें और उसमें थोड़ा-सा आलू वाला मिश्रण डालें। लोई को सील करें। लोई के ऊपर थोड़ा-सा तिल और धनिया पत्ती डालें और हल्के हाथों से लोई को अंडाकार आकार में बेल लें। तवा गर्म करें। कुल्चे में एक ओर से ब्रश की मदद से पानी लगाएं और कुल्चे को गर्म तवे में चिपका दें। एक मिनट बाद तवा को पलट दें और कुल्चे को सीधे आग से सुनहरा होने तक पकाएं। कुल्चे के ऊपर हल्का-सा बटर लगाएं और सर्व करें।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। आत्मीय श्रेष्ठता बनेगी। शुभांक-2-5-6

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। श्रेष्ठजनों की सहानुभूतियां होगी। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात् दूर हो जाएगी। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। शुभांक-3-6-7

मिथुन (का की कू घ ड छ के को हा): कहीं रुका हुआ पैसा वसूलने में मदद मिल जाएगी। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। दैनिक सुख-सुविधा में वृद्धि होगी। ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा। शुभांक-3-5-7

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): शुभ कार्यों की प्रवृत्ति बनेगी और शुभ समाचार मिलेंगे। किसी से कहा सुनी न हो यही ध्यान रहें। लाभकारी गतिविधियों में सक्रियता रहेगी। कुछ एकाग्रता की प्रवृत्ति बनेगी। कामकाज की व्यस्तता से सुख-आराम प्रभावित होगा। धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। मनोरथ सिद्धि का योग है। शुभांक-4-7-8

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। अपना काम दूसरों के सहयोग से पूरा होगा। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। जरा-सी लापरवाही आपको परेशानी में डाल सकती हैं। शुभांक-3-5-7

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): संयमित भाषा का इस्तेमाल करें। कुछ कार्यक्रम बदलने होंगे। सब्र का फल मीठा होता है अत: धैर्य रखें व अच्छे समय इन्तजार करें। कर्म प्रधान विचार धारा बनाये रखें। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। काम में लगे रहें लाभ होगा। राजकीय कार्यों से लाभ। शत्रु से सावधान रहें। शुभांक-1-3-5

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): महत्त्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। बाहरी और अंदरूनी सहयोग मिलता चला जाएगा। लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंगे। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभांक-2-4-6

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। बुरी संगति से बचें। नौकरी में सावधानीपूर्वक कार्य करें। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी चिंता रहेगी। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। शुभांक-3-4-5

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। खान-पान में सावधानी रखें। व्यापार में प्रगति होगी। अपने अधीनस्त लोगों से कम सहयोग मिलेगा। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। पत्नी का परामर्श लाभदायक रहेगा। शुभांक-2-4-7

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी): व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी। आलस्य का त्याग करें। सच्चाई का सहारा लें कार्यसिद्धि होगी। आर्थिक लाभ उत्तम रहेगा। शैक्षणिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। परिवार में किसी मांगलिक कार्य पर वार्ता होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। समय आपके पक्ष का बना रहेगा। शुभांक-3-5-7

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। जो चल रहा हैं उसे सावधानीपूर्वक संभालें। शुभांक-2-4-6

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): मध्याह्न से ही आशाएं बलवती होंगी। महत्त्वपूर्ण कार्यों को आज ही निबटा लें उसके बाद समय व्ययकारी सिद्ध होगा। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। संतोष रखने से सफलता मिलेगी। नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी। शुभांक-1-3-5

काकुरो पहेली - 1803

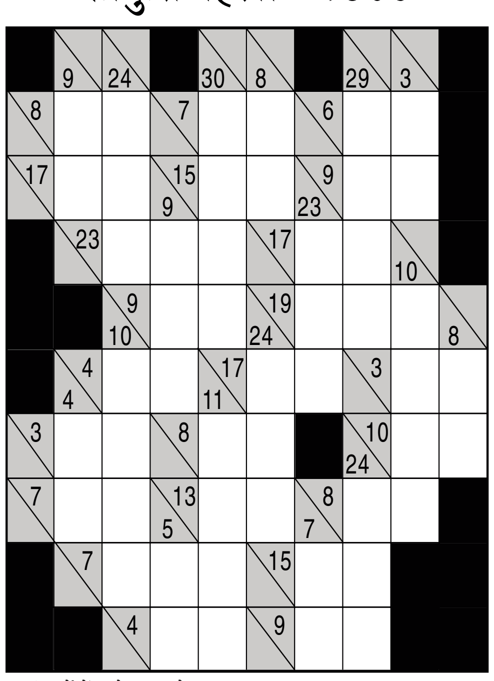

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए. किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणत:

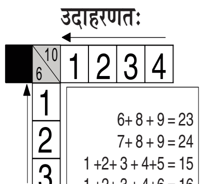

6+8+9=23
7+8+9=24
1+2+3+4+5=15
1+2+3+4+6=16

काकुरो - 1802 का हल

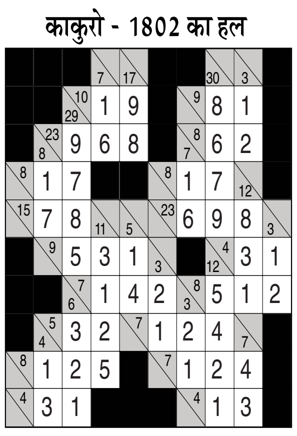

हंसी के फूव्वारें

एक व्यक्ति ने डाक्टर को धन्यवाद देते हुए कहा- 'डाक्टर साहब! मैं आपका बहुत एहसानमन्द हूँ. आपके इलाज से मुझे बहुत फायदा पहुँचा है.'

'मगर.....?' डाक्टर ने चौंकते हुए कहा- 'मैंने तो कभी आपका इलाज नहीं किया.'

'आपने मेरा तो नहीं, मगर मेरे करोड़पति चाचाजी का इलाज किया था. पिछले सप्ताह उनका देहान्त हो गया और मैं उनका एकमात्र वारिस हूँ.'

एक पिता मृत्यु की घड़ियां गिन रहा था . उसके तीन पुत्र आपस में बहस कर रहे थे. बड़ा पुत्र बोला- 'एम्बूलेंस मंगा लेनी चाहिए.'

मंझला- 'नहीं ! बैल ठेला कर लेंगे !'

छोटा- 'कन्धे पर डालकर ले चलो !'

सुनकर पिता से रहा नहीं गया, बोला- 'तुम मेरी चप्पलें ला दो, मैं खुद ही चला जाऊंगा.'

□ □ □

सीता- 'मेरे बाप ने तो तैरने का रिकार्ड तोड़ दिया. पूरे तीन दिन बाद वापस लौटे हैं.'

गीता- 'वह तो ठीक है. लेकिन तुम्हारे बाप हमारे बाप के सामने तो टिक नहीं सकते !'

'कैसे ?'

'मेरे बाप चार वर्ष पहले तैरने गये थे और आज तक वापस नहीं आये हैं.'

फिल्म वर्ग पहेली- 1803

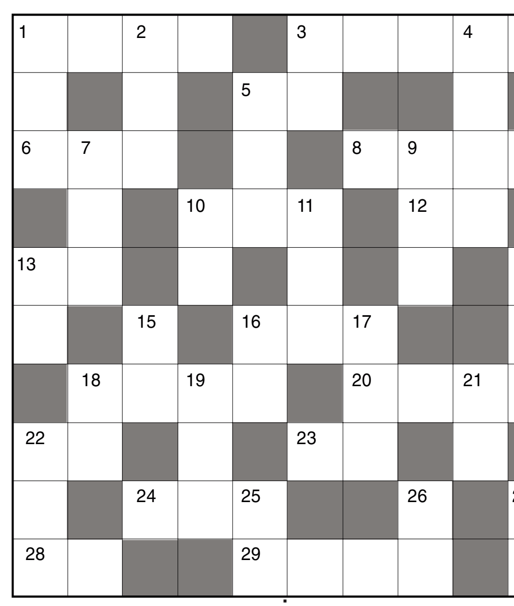

ऊपर से नीचे:-

१. शॉवरअली, तरूण अरोड़ा, मेघना की फिल्म-३
२. 'भागे रे मन' गीत वाली फिल्म-३
३. सनी, सलमान, करीश्मा, तब्बू की फिल्म-२
४. अमिताभ, दीपक, डिम्पल, करिश्मा की 'कभी खुशियों की' गीत वाली फिल्म-४
५. 'तेरे नाम' में सलमान की नायिका थी-३
७. कमल हासन, शाहरूख, रानी की फिल्म-१,२
९. 'जिंदगी इम्तिहान' गीत वाली अमिताभ, संजीव, ऋषि, हेमा, शर्मिला की फिल्म-३
१०. नागार्जुन, अमला की एक फिल्म-२
११. सुनील शेट्टी, रवीना, करिश्मा, की फिल्म-३
१३. संजय सूरी, रेवती, गुल पनाग की 'बेनाम सा ये दर्द' गीत वाली फिल्म-२
१४. 'तुम ने दी आवाज' गीत वाली फिल्म-३
१५. सनी, अजय जडेजा, सेलिना की 'तुमको कितना है' गीत वाली फिल्म-२
१६. 'इस टूटे दिल' गीत वाली फिल्म-२
१७. राजेंद्रकुमार, शर्मिला टैगोर की एक फिल्म-३
१८. 'अकेले ही अकेले चला' गीत वाली दिलीपकुमार, सायरा बानो की फिल्म-२
१९. आयूब खान, आयशा जुल्का की फिल्म-३
२१. 'ऐ मेरी जिंदगी' गीत वाली जॉन अब्राहम, तारा शर्मा की फिल्म-२
२२. राजकुमार, मीना की 'ठाड़े रहियो ओ बांके यार' गीत वाली फिल्म-३
२५. 'मुझे तेरे जैसी' गीत वाली फिल्म-२
२६. मनोज बाजपेयी, अरशद, तब्बू, शीबा की फिल्म-२
२७. 'कैसे कटे दिन' गीत वाली राजेश खन्ना, गोविंदा, जूही, माधवी की फिल्म-२

बायें से दायें:-

१. अक्षय खन्ना, करीना की प्रियदर्शन निर्देशित एक कॉमेडी फिल्म-४
३. 'झिलमिल सितारों का आँगन' गीत वाली धर्मेन्द्र, राखी की फिल्म-३,२
५. अजय, नाना, फरदीन, उर्मिला, रेखा की 'ये सर्द आहें' गीत वाली फिल्म-२
६. 'जिस दिल में बसा था प्यार तेरा' गीत वाली प्रदीपकुमार, कल्पना की फिल्म-३
८. सुनीलदत्त, नूतन की 'बड़ी देर भई नंदलाला' गीत वाली फिल्म-४
१०. 'पर्दे में रहने दो' गीत वाली धर्मेन्द्र, संजीवकुमार, आशा पारेख की फिल्म-३
१२. 'सीता और गीता' में संजीव के साथ वाली हेमामालिनी के पात्र का नाम-२
१३. 'शिकदुम शिकदुम' गीत वाली अभिषेक, उदय चोपड़ा, जॉन अब्राहम, ईशा देओल, रिमी सेन की फिल्म-२
१६. विकास भल्ला, काजोल की 'मेरे चेहरे पे लिखा है' गीत वाली फिल्म-३
१८. 'आने वाला पल जाने' गीत वाली अमोल पालेकर, बिंदिया की फिल्म-४
२०. जैकी, मोहसिन खान, नीलम की 'एक तू ही मेरा' गीत वाली फिल्म-४
२२. 'तेरा काम है जलना' गीत वाली राज कपूर और नर्गिस की फिल्म-२
२३. शाहरूख, चंद्रचूड़, ऐश्वर्या, प्रिया की 'मेरे खयालों की' गीत वाली फिल्म-२
२४. सुदर्शन नाग निर्देशित सनी देओल, नीलम की १९९१ की एक फिल्म-३
२८. जैकी श्रॉफ, रति की 'जितना कभी किसी ने' गीत वाली फिल्म-२
२९. 'हम भूलेंगे' गीत वाली अमिताभ, अरशद, करिश्मा की फिल्म-४

फिल्म वर्ग पहेली- 1802

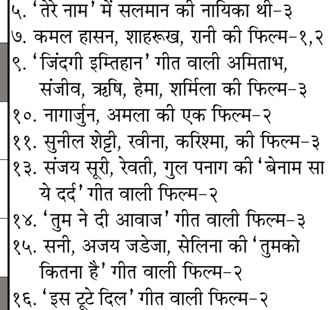

सूडोकु -1803

		5			8			
	7			3	5			
3						6		
							8	5
	6						1	
4	2							
		1						8
			7	4			3	
			2			7		

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -1802 का हल

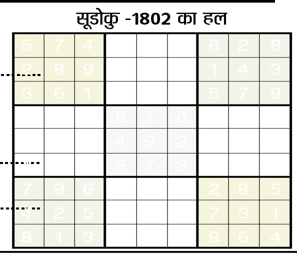

शब्द पहेली - 1803

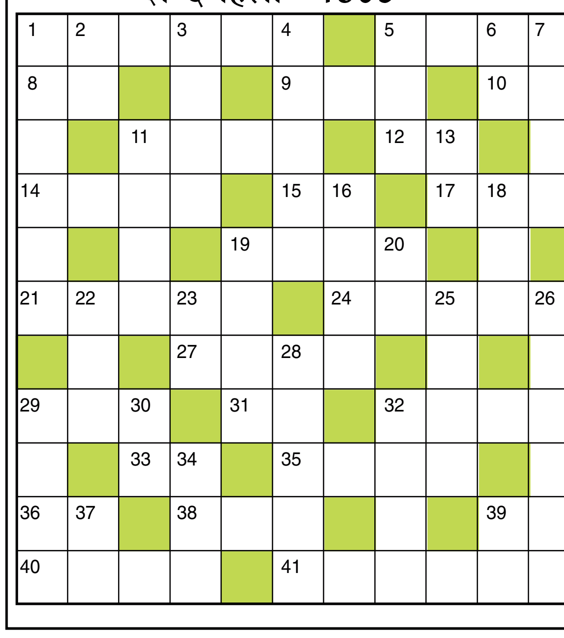

बाएँ से दाएँ

1. अत्यावश्यक-6
5. कारागार,जेल-4
8. पानी,नीर-2
9. मीन,मत्स्य-3
10. लक्ष्मी,कमला-2
11. कलाकार,फनकार-4
12. मर्द,मादा का विलोम-2
14. हसरत,मुराद-4
15. कैद में,अवरुद्ध,रुका-2
17. भूमि,धरती-3
19. मतवासा,मदहोश-4
21. फिल्मी दुनिया-3,3
24. दुर्भाग्यशाली-5
27. ठोकर लगना,भिड़ना-4
29. दौंडी पीटना-3
31. सांप,सर्प-2
32. दाल-4
33. हूर,अप्सरा-2
35. गाड़ी चलाने वाला-4
36. पिता का छोटा भाई-2
38. पुत्र,बेटा-3
39. टौंटी,नलका-2
40. ललचाना,तड़फाना-4
41. टाऊन हाल, नागरिक भवन-2,4

ऊपर से नीचे

1. ईश्वर,अनश्वर-3,3
2. तेलहन-2
3. सुखद वस्तु, वर देना-4
4. करधनी,कमर पेटी-5
5. गलीचा-3
6. दिन-2
7. समस्या का हल-4
11. धरोहर,थाती-4
13. मिट्टी,धूल-2
16. चमकना-4
18. वायुसेना का एक विमान-3
19. इतराना-4
20. परत-2
22. जाप करना-3
23. किवाड़,द्वार-2
25. उदाहरणतः-4
26. परवरिश-3,3
28. राग छेड़ना-5
29. भेंट,मेल-मिलाप-4
30. दिया,दीपक-2
32. औषधालय, दवाखाना-4
34. खाली होना-3
37. छोटी सवारी गाड़ी-2
39. नया,नवीन-2

शब्द पहेली -1802 का हल

सचिवालय अभियान में झड़प : आरजी कर पीड़िता की मां घायल, पुलिस पर लाठीचार्ज का आरोप

एजेंसी

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता में नवान्न (सचिवालय) अभियान के दौरान मचे हंगामे में आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल की यौन उत्पीड़न पीड़िता की मां घायल हो गईं। उनका आरोप है कि महिला पुलिसकर्मियों ने लाठीचार्ज किया, जिससे उनके सिर पर चोट लगी और हाथ की शंखा (चूड़ी) टूट गई। जानकारी के मुताबिक, पीड़िता के माता-पिता ने स्वयं इस अभियान का आह्वान किया था, जिसमें भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने भी समर्थन दिया था। शनिवार दोपहर लगभग 12 बजे धर्मतला से नवान्न की ओर रैली शुरू हुई। पीड़िता के मां-बाप भी इस जुलूस में शामिल थे। रैली जब पार्क स्ट्रीट मोड़ पर पहुंची, तो पुलिस ने उसे रोक दिया। इसी दौरान प्रदर्शनकारियों और पुलिस के बीच धक्का-मुक्की शुरू हो गई। पीड़िता की मां का दावा है कि इस झड़प में महिला पुलिसकर्मियों की लाठी उनके सिर पर लगी, जिससे माथा सूज गया और उनके हाथ की शंखा टूट गई। झड़प के बाद भी पीड़िता के माता-पिता करीब 30 समर्थकों के साथ रेसकोर्स होते हुए विद्यासागर सेतु की ओर बढ़ने लगे। इस समूह में नेता प्रतिपक्ष व भाजपा विधायक शुभेंदु अधिकारी के करीबी कौस्तव बागची और प्रीतम दत्ता भी मौजूद थे।

जम्मू-कश्मीर पुलिस ने किश्तवाड़ में 26 घरों की ली तलाशी

किश्तवाड,। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने किश्तवाड़ जिले में आतंकी तंत्र पर कार्रवाई करते हुए 26 घरों की तलाशी ली जिसमें हिजबुल मुजाहिदीन के आतंकवादी मोहम्मद अमीन भट उर्फ जहांगीर सरूरी का घर भी शामिल है। अधिकारियों ने बताया कि आतंकवादी मोहम्मद अमीन भट के अलावा छापेमारी में ज्यादातर पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर से सक्रिय आतंकवादियों और सीमा पार से हथियारों और गोला-बारूद की तस्करी करने वाले आतंकवादियों के घर शामिल थे। किश्तवाड़ में छापेमारी पास के डोडा जिले में 15 स्थानों पर इसी तरह की तलाशी के एक दिन बाद हुई। अधिकारियों ने कहा कि विभिन्न पुलिस टीमों ने किश्तवाड़ जिले में 26 स्थानों पर तलाशी ली। इस छापेमारी में भट का घर भी शामिल है जो 1990 के दशक में प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन हिजबुल मुजाहिदीन में शामिल हो गया था और उसे सबसे लंबे समय तक जीवित रहने वाला आतंकवादी माना जाता है।

महाराष्ट्र में बंद नहीं होगी लाडकी बहन योजना - एकनाथ शिंदे

अकोला । महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे अकोला शहर पहुंचे, जहां आदिवासी दिवस पर विशाल रैली का आयोजन किया गया था। एकनाथ शिंदे ने इस रैली में हिस्सा लिया। इस दौरान एकनाथ शिंदे ने आदिवासी समाज को संबोधित करते हुए कहा कि जिस समय शिवसेना ने कांग्रेस के साथ हाथ मिलाया, उस समय हमने इस राज्य में सरकार बदल दी और सत्ता परिवर्तन किया। विपक्षी दल हमारी आलोचना करते हुए कहते थे कि एक भी विधायक चुनकर नहीं आने देंगे, लेकिन उन्होंने 100 सीटों पर चुनाव लड़ा और उनके सिर्फ 20 विधायक ही चुनकर आए। एकनाथ शिंदे ने उद्धव ठाकरे का नाम लिए बिना ही निशाना साधा। एकनाथ शिंदे ने रक्षाबंधन के मौके पर अकोला में आयोजित आदिवासी कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भरोसा दिया कि लाडकी बहिन योजना को बंद नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि लाडकी बहिन योजना को लेकर विपक्ष ने इसे एक चुनावी जुमला बताया था, लेकिन अब चाहे विपक्ष कितनी भी अफवाहें फैलाए, लाडकी बहिन योजना बंद नहीं होगी। उन्होंने ये भी कहा कि हमने जो-जो वादे किए हैं, उनको पूरा किया जाएगा। किसानों की कर्जमाफी जैसे वादे को हम निभाकर रहेंगे। ये सरकार 'शब्द देने वाली' नहीं, बल्कि 'शब्द निभाने वाली' सरकार है। शिंदे ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि हम वादों से पलटने के लिए 'प्रिंटिंग मिस्टेक' का बहाना नहीं बनाएंगे।

लालू को अपशब्द कहने से बिहार का भला नहीं होने वाला - तेजस्वी यादव

पटना। बिहार विधानसभा में विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव ने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह पर कटाक्ष करते हुए कहा कि लालू यादव और तेजस्वी को गाली देने से बिहार का भला नहीं होने वाला है। दिल्ली से वापस पटना लौटने के बाद तेजस्वी यादव ने मीडिया से बातचीत में कहा कि वे लोग जब बिहार आते हैं तो एक ही बात बोलते हैं। बिहार की तरक्की की बात करें, बेरोजगारी, महंगाई और गरीबी खत्म करने की बात करें। इसके बारे में तो कोई बात नहीं करना। दिनभर लालू यादव या तेजस्वी को गाली देने से बिहार का भला नहीं होगा। उन्होंने आगे कहा, जब तक बिहार से बेरोजगारी, गरीबी और पलायन नहीं रुकेगी और बेरोजगारी या गरीबी खत्म नहीं होगी, महंगाई खत्म नहीं होगी। कुछ नहीं होगा। शिक्षा और चिकित्सा की बात तो ये करते नहीं हैं। इन लोगों की केवल नकारात्मक राजनीति है। इससे कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है। बिहार की जनता इनको कुछ देने वाली नहीं है। उन्होंने कहा कि इस बार अमित शाह आए, बिहार में ठहरे या रहे, कोई फर्क नहीं पड़ता। लोजपा (रामविलास) के प्रमुख चिराग पासवान के कार्यक्रम को लेकर तेजस्वी यादव ने कहा, अच्छी बात है, क्यों नहीं कार्यक्रम करना चाहिए? नेता लोग जनता के बीच नहीं जाएंगे तो कौन जाएगा? चिराग पासवान या भाजपा के लोग जा रहे हैं तो जाना ही चाहिए।

संसदीय समिति की सिफारिश से तैयार हुआ नया आयकर विधेयक

रिजिजू बोले सोमवार को लोकसभा में होगा पेश

एजेंसी

पटना। संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने बताया कि वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण सोमवार को लोकसभा में नया आयकर विधेयक पेश करेंगी। यह विधेयक लोकसभा की सिलेक्ट कमेटी द्वारा सुझाए गए और सरकार द्वारा स्वीकार किए गए सभी संशोधनों को शामिल करेगा। रिजिजू ने स्पष्ट किया कि मीडिया के कुछ हिस्सों में जो आशंकाएं व्यक्त की गई हैं, वे निराधार हैं। रिजिजू ने कहा कि यह सामान्य संसदीय प्रक्रिया है, जब किसी विधेयक में संशोधनों की संख्या बहुत अधिक होती है। ऐसे में पुराने विधेयक को वापस लेकर सभी स्वीकृत संशोधनों को शामिल

करते हुए नया विधेयक पेश किया जाता है। उन्होंने बताया कि सेलेक्ट कमेटी, जिसकी अध्यक्षता भाजपा सांसद बैजयंत पांडा ने की, ने आयकर विधेयक में कुल 285 सुझाव दिए थे और सरकार ने सभी को स्वीकार कर लिया है। मंत्री ने कहा कि अगर इन सभी संशोधनों को अलग-अलग पेश कर मंजूरी ली जाती, तो यह लंबी और जटिल प्रक्रिया होती। इसलिए नया विधेयक लाना ही सबसे आसान और व्यवहारिक तरीका है। रिजिजू के मुताबिक, इससे संसद को विधेयक पर विचार करने और पास करने में आसानी होगी। उन्होंने कहा, यह वही विधेयक है जिसमें सिर्फ सिलेक्ट कमेटी के सुझाव जोड़े गए हैं।

छह महीने की मेहनत बेकार नहीं जाएगी

रिजिजू ने स्पष्ट किया कि पिछले छह महीनों में विधेयक पर जो काम हुआ है, वह बेकार नहीं जाएगा। बल्कि सभी सुझाव और मेहनत नए विधेयक में परिलक्षित होंगे। उन्होंने कहा कि सरकार पूरी तरह तैयार है और सोमवार को वित्त मंत्री इसे पेश करेंगी। साथ ही उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इस विधेयक के आने से कर ढांचे में स्पष्टता और सुधार आएगा।

जनता और सांसदों की चिंताओं का समाधान

मंत्री ने कहा कि नया विधेयक लोगों और सांसदों की चिंताओं को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है। उन्होंने दोहराया कि इसमें सिर्फ वही बदलाव शामिल होंगे जिन्हें समिति और सरकार दोनों ने मंजूरी दी है। उन्होंने अपील की कि इस प्रक्रिया को लेकर किसी को भ्रम नहीं होना चाहिए।

टैरिफ मामले में सभी देशवासियों को सरकार के साथ खड़े होना चाहिए : शरद पवार

एजेंसी

नागपुर। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के अध्यक्ष शरद पवार ने महाराष्ट्र के नागपुर में कहा कि अमेरिका के लगाए टैरिफ मामले में देशवासियों को मिलकर भारत के हितों कि रक्षा करनी चाहिए। उन्होंने आह्वान किया कि सभी को इस मामले में सरकार के साथ खड़ा होना चाहिए। नागपुर स्थित प्रेस क्लब में आज आयोजित संवाद कार्यक्रम में शरद पवार ने कहा कि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प टैरिफ लगाकर भारत पर दबाव बना रहे हैं। हमें लगता है कि इस मुद्दे पर देशवासियों ने भारत के हितों कि रक्षा के लिए सरकार को सहयोग देना चाहिए। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में डिप्लोमेसी फेल हो गई, मैं ऐसा कहना नही चाहता। लेकिन बीते 5 वर्षों में हम ट्रम्प की सोच और नजरिये को देखा है और अभी भी देख रहे हैं। राकांपा(एनसीपी) के अध्यक्ष ने पवार ने कहा कि ट्रम्प पर अधिक ध्यान देने की जरूरत नही है। उन्होंने बताया कि विदेश नीति के बारे में हमारा रवैया ऐसा है कि हम टैरिफ पर ज्यादा बातचीत नही करेंगे लेकिन नजरअंदाज भी नही कर सकते। देश की विदेश नीति पर अपनी राय रखते हुए पवार ने कहा कि हिंदुस्तान का नक्शा अगर देखें तो पाकिस्तान हमारे खिलाफ है। नेपाल हमसे नाराज है। बांग्लादेश हमसे नाराज है। श्रीलंका हमसे नाराज है। हमारे सब पडोसी हमसे दूर जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि मुझे लगता है कि प्रधानमंत्री मोदी को यह बात नजरअंदाज नही करनी चाहिये, पडोसियों से रिश्ते कैसे सुधारे जायें, इस पर ध्यान देना चाहिए।

धराली आपदा में हर संभव मदद दे रहा केंद्र : रामदास आठवले

एजेंसी

देहरादून। केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता राज्यमंत्री रामदास आठवले ने कहा कि उत्तरकाशी जिले के धराली में हाल के घटनाक्रम पर केंद्र सरकार स्थिति पर नजर रख रही है और हर संभव मदद भी मुहैया करवा रही है। आठवले ने देहरादून स्थित बिजापुर गेस्ट हाउस में प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि प्राकृतिक आपदाएं वर्तमान में मानव नियंत्रण से बाहर हैं, लेकिन केंद्र और राज्य सरकार, दोनों प्रभावित लोगों को राहत पहुंचाने और स्थिति को शांत करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठा रही हैं। मंत्री ने कहा कि उत्तराखंड में दलितों पर अत्याचार की घटनाएं मौजूद हैं, लेकिन इन्हें कम करने के लिए राज्य सरकार और केंद्र दोनों प्रतिबद्ध हैं। दलित के संदर्भ में आठवले ने कहा कि दलितों में जागरूकता बढ़ने से वह न्याय के लिए अब पुलिस के पास पहुचने लगे हैं। उन्होंने संविधान निर्माण में डॉ. भीमराव अंबेडकर के योगदान को याद किया और कहा कि 1989 के अत्याचार निवारण अधिनियम ने ऐसे मामलों को गैर-जमानती बनाकर इन घटनाओं में कमी लाई है। उन्होंने बताया कि नशा मुक्त भारत अभियान देश के हर ज़िले में लागू किया जा

रहा है। अब तक देशभर में 1,700 से अधिक नशा मुक्ति केंद्र स्थापित किए गए हैं, जिन पर लगभग ?345 करोड़ खर्च हुए हैं और जिन्हें अस्पतालों व डॉक्टरों का सहयोग प्राप्त है। वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण के लिए उन्होंने वृद्धाश्रम योजना की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि देशभर में अब तक 1,650 से अधिक वृद्धाश्रम बनाए जा चुके हैं, जिन पर लगभग 321 करोड़ खर्च हुए हैं। केंद्रीय मंत्री ने बताया कि उत्तराखंड में अनुसूचित जाति की आबादी लगभग 19 प्रतिशत, अनुसूचित जनजाति करीब 4 प्रतिशत और ओबीसी लगभग 14 प्रतिशत हैं। प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत घर बनाने के लिए अनुदान लगभग 1.8 लाख से 2.1 लाख तक मिलता है।

प्रधानमंत्री जन धन योजना (2014) देशभर में लगभग 56 करोड़ खाते खोले गए, जिनमें उत्तराखंड में करीब 39 लाख खाते शामिल हैं। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना (2015) देशभर में लगभग ?3.48 लाख करोड़ के ऋण वितरित हुए, जिनमें उत्तराखंड में करीब 34 लाख ऋण दिए गए। उज्ज्वला योजना देशभर में 10 करोड़ से अधिक गैस कनेक्शन दिए गए, जिनमें उत्तराखंड में लगभग 5 लाख कनेक्शन शामिल हैं।

हिमाचल प्रदेश में लगातार छह दिन भारी वर्षा की चेतावनी, 362 सड़कें बंद

एजेंसी

शिमला। हिमाचल प्रदेश में लगातार हो रही बारिश से सामान्य जनजीवन पर असर पड़ा है और कई स्थानों पर भूस्खलन की घटनाएं सामने आ रही हैं। राज्य के अधिकांश इलाकों में भी बादल बरसे। राजधानी शिमला में दोपहर बाद जमकर बारिश हुई। मौसम विभाग ने अगले छह दिनों तक बारिश की रफतार में और तेजी आने की आशंका जताई है। 15 अगस्त तक राज्य भर में भारी बारिश की चेतावनी दी गई है।

खासतौर पर 11 से 14 अगस्त तक मॉनसून के कड़े तेवर देखने को मिलेंगे। इस अवधि में राज्य के अलग-अलग स्थानों पर भारी से बहुत भारी वर्षा का आरेंज अलर्ट जारी किया गया है। वहीं अगले 24 घंटे यानी 10 अगस्त को अलग-अलग स्थानों पर भारी वर्षा व गरज के साथ तूफान का येलो अलर्ट जारी किया गया है। इसी तरह 15 अगस्त को भारी बारिश का येलो अलर्ट जारी किया गया है। मौसम विभाग द्वारा जिलावार जारी पूर्वानुमान के अनुसार, अगले 24 घंटों यानी 10 अगस्त को उना, बिलासपुर, हमीरपुर, कांगड़ा, मंडी, शिमला, सोलन, सिरमौर जिलों में भारी बारिश का येलो अलर्ट रहेगा। 11 अगस्त को कांगड़ा और कुल्लू जिलों में भारी से बहुत भारी वर्षा का आरेंज अलर्ट रहेगा। वहीं उना, बिलासपुर, हमीरपुर, शिमला, सोलन, सिरमौर में भारी

बारिश का येलो अलर्ट रहेगा। 12 अगस्त को उना, कांगड़ा व सिरमौर जिलों में भारी से बहुत भारी वर्षा का आरेंज अलर्ट जारी किया गया है, जबकि हमीरपुर, चंबा, कुल्लू, मंडी में भारी वर्षा का येलो अलर्ट रहेगा। 13 अगस्त को कुल्लू, मंडी, शिमला और सिरमौर जिलों में भारी से बहुत भारी वर्षा का आरेंज अलर्ट जारी किया गया है। वहीं सोलन जिला में भारी वर्षा का येलो अलर्ट रहेगा।

मौसम विभाग के अनुसार बीते 24 घंटों में बिलासपुर जिला के नैना देवी में सर्वाधिक 110 मिलीमीटर वर्षा हुई। जबकि मंडी जिला के पंडोह में 100, सिरमौर जिला के पच्छाद, बिलासपुर के आरएल बीबीएमबी, शिमला जिला के नारकंडा, सोलन जिला के कसौली और शिमला जिला के शिलारू में 70-70 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई। सिरमौर जिला के राजगढ़ में 60, शिमला जिला के कुफरी में 50 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई है। इस दौरान सिओबाग व धौलाकूआ में क्रमशः 50 व 46 किलोमीटर प्रति घंटे की रफतार से हवाएं भी चलीं।

केन्द्रीय मंत्री शिवराज ने भोपाल में मनाया रक्षाबंधन, महिलाओं ने बांधी राखी

एजेंसी

भोपाल। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मध्य प्रदेश प्रवास के दौरान राजधानी भोपाल में रक्षाबंधन का त्योहार उत्साह के साथ मनाया। इस अवसर पर प्रदेश के विभिन्न जिलों से महिलाएं 'मामा के घर' पहुंचीं और उनकी कलाई पर राखी बांधी। इस अवसर पर केन्द्रीय मंत्री चौहान ने कहा कि जब तक उनकी सांसें हैं, वे बहनों के सुख, सम्मान और मुस्कान के लिए काम करते रहेंगे। केन्द्रीय मंत्री चौहान ने कहा कि बहनों की सेवा मेरे लिए भगवान की पूजा के समान है। मेरे रहते कोई बहन यह नहीं कह सकती कि उसका कोई भाई नहीं है। इस दौरान उन्होंने लाडली बहना और लाडली लक्ष्मी जैसी योजनाओं का जिक्र करते

हुए बताया कि इन्हें कई राज्यों ने अलग-अलग नामों से लागू किया है। इस मौके पर उन्होंने वादा किया कि लाडली बहना योजना की राशि को तीन हजार रुपये तक बढ़ाया जाएगा और सरकार इस दिशा में काम कर रही है। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर सभी भाई-बहनों को रक्षाबंधन की बधाई और शुभकामनाएं दी। उन्होंने लिखा कि मेरी प्यारी बहनों, आपके प्रेम की डोर मेरी कलाई पर बंधती है तो मुझे सेवा का संकल्प देती है। जब तक सांस है, आपके सुख, सम्मान और मुस्कान के लिए काम करता रहूंगा। इस राखी पर स्वदेशी का संकल्प भी लें। सभी भाई-बहनों को रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनाएं।भोपाल में किया पौधरोपण, पहले लगाए पेड़ों को बांधी राखी केन्द्रीय कृषि मंत्री चौहान ने इससे पहले अपने प्रतिदिन पौधरोपण के संकल्प के क्रम में भोपाल के स्मार्ट सिटी पार्क में उन्होंने बहनों के साथ पौधरोपण किया। इसके साथ ही उन्होंने रक्षाबंधन के अवसर पर अपने द्वारा वर्षों पहले लगाए पेड़ों को राखी बांधी। उन्होंने इस मौके पर कहा कि पेड़ है तो जीवन है।

सीबीआई ने राजस्थान के पाली से लापता नाबालिग लड़की को किया बरामद, पांच आरोपी गिरफ्तार

एजेंसी

पाली। केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) ने पश्चिम बंगाल के बर्धमान से लापता एक नाबालिग लड़की को राजस्थान के पाली से बरामद किया है। कलकत्ता हाई कोर्ट के आदेश पर सीबीआई ने 16 फरवरी 2024 को मुकदमा दर्ज किया था। लापता नाबालिग लड़की 9 अगस्त 2023 को ट्यूशन के लिए गई थी और वापस नहीं लौटी। यह आशंका जताई गई थी कि उसका गलत इरादे से अपहरण किया गया था। शुरुआत में मामले की जांच स्थानीय पुलिस और फिर पश्चिम बंगाल सीआईडी ने की थी। इसके बाद लापता नाबालिग लड़की की मां की याचिका पर हाई कोर्ट ने मामला सीबीआई, एससीबी, कोलकाता को स्थानांतरित कर दिया।सूत्रों से प्राप्त जानकारी और कॉल डिटेल रिकॉर्ड के आधार पर पता चला कि लापता लड़की को संभवतः राजस्थान के पाली जिले में भेजा गया होगा। इस पर सीबीआई की टीम राजस्थान के पाली पहुंची। सूचना की पुष्टि करने के बाद सीबीआई के अधिकारियों ने शुक्रवार को लापता लड़की को पाली में आरोपी के घर से बरामद किया।

जांच से पता चला है कि लड़की लापता होने के समय नाबालिग थी और उसकी शादी के लिए बनाए गए हलफनामों में उसे बालिग दिखाया गया था।

सीएम फडणवीस का बड़ा एलान-राज्य में बनाई जाएंगी एक करोड़ लखपति दीदियां, आर्थिक विकास को मिलेगी गति

एजेंसी

मुंबई। लाडली बहनों ने एक कार्यक्रम के दौरान महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की कलाई पर राखी बांधीं। वहीं, मुख्यमंत्री ने उनके अच्छे भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं। इसके साथ ही उन्होंने एलान किया कि सरकार ने लाडली बहना योजना के तहत एक करोड़ 'लखपति दीदियां' बनाने का लक्ष्य तय किया है। सरकार के इस कदम से प्रदेश में महिला सशक्तिकरण होगा। लखपति दीदियां बनाने के लिए केंद्र सरकार ने देशभर में खास पहल की शुरुआत की थी। इसके तहत स्वयं सहायता समूह में शामिल महिला सदस्यों की सालाना आय एक लाख रुपये तक करने पर जोर दिया जा रहा है।

इस वर्ष 25 लाख और लखपति दीदियां बनाना चाहते हैं- मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री फडणवीस ने कहा कि पिछले साल हमने राज्य की 25 दीदियों को लखपति बनाया था। इस वर्ष हम 25 लाख और लखपति दीदियां बनाना चाहते हैं। हमला लक्ष्य है कि प्रदेश में एक करोड़ लखपति दीदियां बनाई जाएं।मुख्यमंत्री ने योजना को लेकर फैलाई जा रहीं अफवाहों का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि कुछ लोग यह कह रहे थे कि यह योजना बंद कर दी जाएगी। ये

बात झूठी है। सच यह है कि हम इस योजना में मिलने वाली मदद को और अधिक करेंगे। लखपति दीदी अभियान मुख्यमंत्री माझी लड़की बहन योजना का हिस्सा है।

फडणवीस ने कहा कि लाडली बहना योजना के तहत सरकार बहनों को 1500 रुपये का मासिक लाभ दे रही है। यह लाभ उन बहनों को दिया जा रहा है, जो योजना के मानदंडों को पूरा करती हैं। कुछ लोग इस योजना का गलत लाभ उठा रहे हैं। उनकी पहचान करके उन्हें इस योजना से बाहर किया जाएगा। उन्होंने आगे कहा, महाराष्ट्र में देशभर में सबसे ज्यादा स्वयं सहायता समूह हैं। सरकार की अब अगली योजना राज्य के 10 जिलों में मॉल बनाने की है। इससे रोजगार के नये अवसर सृजित होंगे। बहनें आर्थिक रूप से सशक्त बनेंगी। इन मॉल में स्वयं सहायता समूह द्वारा बनाए गए उत्पादों की बिक्री की जाएगी। साथ ही सरकार ने इन महिला समूहों के लिए ऋण की सीमा भी बढ़ा दी है। वहीं, पुरुषों की तुलना में महिलाओं में कर्ज चुकाने का प्रतिशत अधिक है। कई योजनाओं में पुरुषों ने 50 प्रतिशत ऋण भी नहीं चुकाया है।

महाराष्ट्र के बारामती एयरपोर्ट पर प्रशिक्षण विमान दुर्घटनाग्रस्त, कोई हताहत नहीं

एजेंसी

मुंबई। महाराष्ट्र के पुणे जिले के बारामती एयरपोर्ट पर सुबह रेड बर्ड कंपनी का एक प्रशिक्षण विमान तकनीकी खराबी के कारण दुर्घटनाग्रस्त हो गया। लेकिन प्रशिक्षु पायलट ने दुर्घटनाग्रस्त विमान को किसी तरह कंट्रोल कर लिया, जिससे इस घटना में कोई हताहत नहीं हुआ। फिलहाल रेड बर्ड कंपनी के दुर्घटनाग्रस्त विमान की मरम्मत का काम जारी है। बारामती एयरपोर्ट सूत्रों ने बताया कि आज सुबह प्रशिक्षु पायलट विवेक यादव प्रशिक्षण विमान की लैंडिंग कर रहे थे। जब अचानक लैंडिंग के दौरान विमान में तकनीकी खराबी आ गई और आगे का पहिया निकल गया। इसके बाद विवेक यादव ने आपातकालीन लैंडिंग का प्रयास किया। लेकिन इस दुर्घटना में विमान क्षतिग्रस्त हो गया। दुर्घटना की सूचना मिलते ही प्रशिक्षण स्थल पर अफरा-तफरी मच गई थी। एयरपोर्ट पर मौजूद कर्मचारी तुरंत मदद के लिए दौड़ पड़े । इसके बाद कंपनी के कर्मचारियों ने तुरंत विमान को एक तरफ ले जाकर उसकी मरम्मत शुरू कर दी। विमान का अगला पंखा क्षतिग्रस्त हो गया और पहिये के पास के कुछ हिस्से भी क्षतिग्रस्त हो गए हैं। इस संबंध में रेड बर्ड की ओर से इस संबंध में कोई आधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है।

शहजाद पूनावाला बोले- भजनलाल सरकार में बदली जयपुर की तस्वीर

बना देश का दूसरा सबसे सुरक्षित शहर

एजेंसी

उत्तरकाशी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय प्रवक्ता शहजाद पूनावाला ने कहा कि जयपुर ने हाल ही में अपनी पुरानी पहचान को पीछे छोड़कर एक नई पहचान बनाई है। अब यह शहर सिर्फ अपनी गुलाबी दीवारों और ऐतिहासिक हवेलियों के लिए ही नहीं, बल्कि अपनी सुरक्षा के लिए भी जाना जा रहा है।

उन्होंने कहा कि न्यूंबियो सेफ्टी इंडेक्स 2025 में जयपुर को देश का दूसरा सबसे सुरक्षित शहर घोषित किया गया है। यह केवल एक रैंक नहीं है, बल्कि उस बड़े बदलाव की यह एक कहानी है, जो पिछले एक साल में शहर में देखने को मिली है।पूनावाला ने हाल ही में अपने एक ब्लॉग में दावा किया कि एक समय था जब जयपुर में शाम होते ही लोगों के मन में एक डर बैठ जाता था, खासकर महिलाओं, बुजुर्गों और छात्रों में। कानून-व्यवस्था एक चुनावी मुद्दा बन कर रह गया था, जिसका हल कभी नहीं निकलता था। लेकिन अब यह तस्वीर बदल चुकी है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के कार्यकाल में सुरक्षा को सिर्फ कानून

का मसला नहीं, बल्कि लोगों के विश्वास का मसला माना गया। भाजपा प्रवक्ता ने कहा, जयपुर में 3,000 से भी ज्यादा सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं, रैपिड रेस्पॉन्स टीमें हर वक्त तैयार रहती हैं और थानों में महिलाओं के लिए स्पेशल डेस्क बनाए गए हैं। इन सभी कदमों से शिकायतों का जल्द से जल्द निपटारा होता है और काम में भी पारदर्शिता आई है। यह सब अब सिर्फ बातें नहीं, बल्कि हकीकत में दिखाई दे रहा है। राजस्थान पुलिस के आंकड़ों के मुताबिक, जयपुर में अपराध की दर में 14 फीसदी की कमी आई है। लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि यह बदलाव केवल कागजों पर नहीं, बल्कि लोगों के मन में भी महसूस हो रहा है।

जिस कांग्रेस का स्वयं का वोट बैंक दिवालिया हो चुका है, वही अब दूसरों पर लगा रही है 'वोट चोरी' का आरोप : सिंधिया

एजेंसी

भोपाल। मध्य प्रदेश में 2023 के विधानसभा चुनाव में वोट चोरी और चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा दिए गए बयान के बाद राजनीतिक माहौल गरमा गया है। राहुल गांधी के बयान पर केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि जिस कांग्रेस पार्टी का स्वयं का वोट बैंक दिवालिया हो चुका है, वही अब दूसरों पर वोट चोरी का आरोप लगा रही है। भोपाल प्रवास पर आए केन्द्रीय मंत्री सिंधिया ने मीडिया से बातचीत से बातचीत में कहा कि जिन लोगों ने भारत को मृत रूप में देखा है, चाहे वह भारत की अर्थव्यवस्था हो, न्यायपालिका हो, सेना का सम्मान हो या फिर चुनाव आयोग की निष्पक्षता, वे बार-बार इन संस्थाओं को अपमानित करते आए हैं। चुनाव आयोग एक स्वायत्त संवैधानिक संस्था है, जो पारदर्शिता और निष्पक्षता के आधार पर कार्य करती है। यह संस्था हर राज्य और देशभर में फेयर और फ्री इलेक्शन सुनिश्चित करती है। सिंधिया ने कहा कि कांग्रेस का रवैया हमेशा से ही संस्थाओं के प्रति अविश्वास का रहा है। अगर सेना कोई वीरता का कार्य करती है तो वे सबूत मांगते हैं। न्यायपालिका पर आरोप लगाते हैं, प्रधानमंत्री को नीचा दिखाने का प्रयास करते हैं। अब चुनाव आयोग को भी बदनाम करने में लगे हैं। यह जनता सब देख रही है और उचित समय पर जवाब देगी। वहीं, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी कांग्रेस नेता राहुल गांधी के चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर उठाए गए सवालों पर कड़ा विरोध जताया है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी द्वारा सुप्रीम कोर्ट, सेना के पराक्रम और चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर सार्वजनिक रूप से बयानबाजी करना, उनकी 'अर्बन नक्सलाइट' मानसिकता को उजागर करता है। उनके अशोभनीय बयानों से देश में नेता प्रतिपक्ष की गरिमा धूमिल हो रही है, उन्हें तुरंत इसके लिए माफी मांगनी चाहिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया एक्स पर एक वीडियो जारी कर कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर सवाल उठाने वाले बयान पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी की इस सार्वजनिक बयानबाजी से उनकी 'अर्बन नक्सलाइट' मानसिकता उजागर हो रही है।

भारतीय टीम ने किया कमाल, दो दशकों बाद अंडर-20 महिला एशियाई कप के लिए किया क्वालीफाई

नई दिल्ली (एजेंसी)। यांगून (म्यांमार) -यांगून के थुवुन्ना स्टेडियम में ग्रुप डी के अपने अंतिम मुकाबले में मेजबान म्यांमार को 1-0 से हराकर भारत की अंडर-20 महिला राष्ट्रीय टीम ने एएफसी अंडर-20 महिला एशियाई कप के लिए क्वालीफाई कर लिया है। ऐसा 20 वर्षों में पहली बार हुआ है। विंगर पूजा के 27वें मिनट में किए गए गोल की बदौलत यंग टाइग्रेसेस ने थुवुन्ना स्टेडियम में मेजबान टीम के सामने जीत हासिल की और सात अंकों के साथ अपने ग्रुप में शीर्ष स्थान हासिल किया।

यह दो हाफ का खेल था, पहले हाफ में भारत का दबदबा रहा, जबकि दूसरे हाफ में म्यांमार ने दबदबा बनाए रखा। नेहा और सिबानी देवी नोंग्मीकापम ने तीसरे मिनट में ही मिलकर गोल कर दिया, जब सिबानी ने सिबानी देवी को एक क्रॉस दिया, जो गोल करने से बस कुछ ही इंच दूर थी। मेजबान टीम ने सारा दबाव झेलते हुए कुछ जवाबी हमले भी किए और नौवें मिनट में यिन लून इआन के सीने से टकराने के बाद, फॉरवर्ड सु सु खिन करीब पहुंच गईं। जैसे-जैसे मिनट बीतते गए मेजबान टीम ने खेल में अपनी पकड़ मज़बूत करनी शुरू कर दी, लेकिन भारत ने 30 मिनट से कुछ मिनट पहले पूजा के गोल की बदौलत बढ़त बना ली।

दाईं ओर से क्रॉस करने से पहले पूजा ने ही काउंटर पर हमला शुरू किया था। उनकी गेंद सभी से बच गई, लेकिन नेहा, जो दूसरी तरफ से थी, गेंद के सिरे तक पहुंचने में कामयाब रही और उसे वापस गोल में पहुंचा दिया। पूजा, जो तब तक गोलमुख तक पहुंच चुकी थीं, के पास प्रतिक्रिया करने का समय नहीं था और उन्होंने अपने धड़ से गेंद को गोल लाइन के पार पहुंचा दिया। इससे भारतीय खेमे में, कम से कम पहले हाफ के अंत तक घबराहट कम हो गई। यंग टाइग्रेसेस ने गेंद पर कब्जा बनाए रखा और ब्रेक तक अपनी मामूली बढ़त बनाए रखी।

दूसरे हाफ में स्थिति बिल्कुल अलग थी। घरेलू समर्थन से उत्साहित म्यांमार ने पूरी ताकत झोंक दी और भारतीय गोलकीपर मोनालिशा देवी को 48वें मिनट में सु सु खिन को रोकने के लिए एक बेहतरीन बचाव करना पड़ा। भारत ने म्यांमार के लगातार हमलों का सामना किया। मोनालिशा, जिन्होंने पिछले दो मैचों में एक भी गोल नहीं खाया था, को खेल के 10 मिनट बचे थे जब म्यांमार के सब्सटीट्यूट मो प्विंट फ्यू ने एई थेट फ्यू के क्रॉस को हेडर से गोलपोस्ट में मारा। गेंद लाइन पर तेजी से लुढ़कती रही, लेकिन भारतीय गोलकीपर ने छलांग लगाकर उसे सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया।

फ्यू ने एक बार फिर इस बार 90वें मिनट में, शुभांगी से टकराकर गोलपोस्ट से खेल से बाहर हो गई। कुछ ही सेकंड बाद भारत ने जवाबी हमला किया जब सिबानी ने सुलंजना राउल को एक क्रॉस भेजा, जो भी गोलपोस्ट से टकराया और उनका हेडर क्रॉस-बार से टकरा गया। मेजबान टीम के तमाम दबाव के बावजूद भारत ने अपनी बढ़त बरकरार रखी और दो दशकों में पहली बार क्वालीफिकेशन हासिल किया।

सैमसन ने टी20 में अपनी सफलता का श्रेय गंभीर को दिया

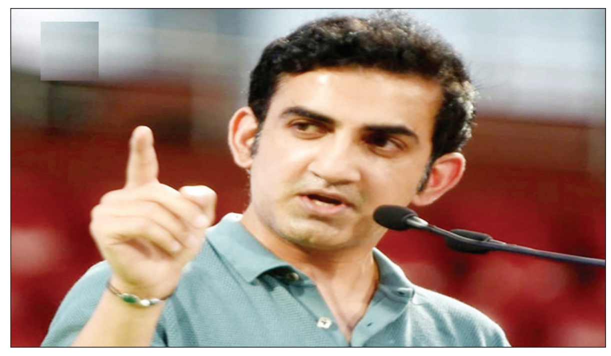

नई दिल्ली (एजेंसी)। अनुभवी विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन ने कहा है कि भारतीय टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर के कारण ही वह टी20 क्रिकेट में सफल हो पाये हैं। सैमसन ने कहा कि गंभीर खिलाड़ियों का पूरा समर्थन करते हैं। सैमसन के अनुसार जब वह टीम में आये थे तब गंभीर ने उनसे कहा था कि उन्हें निडर होगर खेलना चाहिये क्योंकि टीम से बाहर होने से पहले 20 अवसर तो मिलेंगे ही। साथ ही कहा था कि जब वह 21 बार शून्य पर आउट होंगे तभी बाहर किया जाएगा। गंभीर के कोच बनने के बाद सूर्यकुमार यादव की कप्तानी में तैयार टीम में सैमसन को सलामी बल्लेबाज की जिम्मेदारी मिली थी। सैमसन ने बाएं हाथ के बल्लेबाज अभिषेक शर्मा के साथ मिलकर एक मजबूत सलामी जोड़ी बनाकर अपने चयन को सही साबित किया। .

सैमसन ने कहा, 'यह बदलाव अचानक ही टी20 विश्व कप के बाद हुआ। गंभीर आये और सूर्यकुमार कप्तान बने। वहीं मुझे पारी की शुरुआत का अवर मिला। तभी सूर्यकुमार ने कहा कि आपके लिए एक अच्छा अवसर है। हमारे पास सात मैच हैं. मैं आपको सभी सात मैच सलामी बल्लेबाज के तौर पर खिलाऊंगा।' सैमसन ने कहा, 'मैंने इससे पहले श्रीलंका में दो मैच खेले थे पर रन नहीं बना पाया। ड्रेसिंग रूम में थोड़ा निराश था। तब गंभीर मेरे पास आए और पूछा कि क्या हुआ है? मैंने कहा, 'काफी समय बाद मुझे अवसर मिला पर मैं इसका लाभ नहीं उठा पाया।' उन्होंने कहा, कि निराश होने की जरुरत नहीं है। अगर आप 21 बार जीरो पर आउट हो गए, तभी मैं आपको टीम से बाहर करूंगा।' कप्तान और कोच की इन बातों ने निश्चित रूप से मेरा मनोबल बढ़ा और इससे मुझे मैदान पर उतरकर अच्छा प्रदर्शन करने में सहायता मिली.'

सैमसन अब अगले माह होने वाले एशिया कप के लिए टीम में जगह बनाने का प्रयास कर रहे हैं। सैमसन ने भारतीय टीम की ओर से 42 टी20 मैचों में 25.32 की औसत के साथ 861 रन बनाये हैं। उन्होंने इस प्रारुप में तीन शतक और दो अर्धशतक लगाए हैं।

डेविड वार्नर ने लंदन स्पिरिट को दिलाई पहली जीत, खेली 70 रनों पर नाबाद पारी

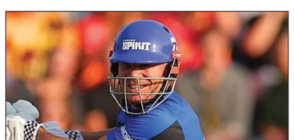

लंदन (एजेंसी)। लंदन स्पिरिट ने शनिवार (9 अगस्त) को वेल्श फायर पर 8 रनों की कड़ी जीत के साथ मेन्स हंड्रेड में अपना खाता खोलने में कामयाबी हासिल की। टूर्नामेंट के पहले मैच में अपने खराब बल्लेबाजी प्रदर्शन के बाद, लंदन स्पिरिट ने अनुभवी डेविड वार्नर की अगुवाई में शानदार वापसी की, जिन्होंने 70 रनों पर नाबाद रहते हुए बल्लेबाजी की। वेल्श फायर के सलामी बल्लेबाज जॉनी बेयरस्टो भी रन चेज में नाबाद रहे और अपनी टीम द्वारा बनाए गए आधे से ज्यादा रन बनाए, लेकिन फिर भी वे लड़खड़ा गए।

वार्नर पारी की शुरुआत में ही अच्छी फॉर्म में आ गए थे, लेकिन दूसरे छोर पर केन विलियमसन लड़खड़ा गए। आखिरकार उन्होंने मैदान पर छक्का जड़कर अपनी लय तोड़ी, लेकिन जोश हल के आउट होने के कारण ज़्यादा देर तक टिक नहीं पाए। पारी को आधे समय में एक बड़ा झटका तब लगा जब वार्नर और जेमी स्मिथ ने मिलकर क्रिस ग्रीन को तीन छक्के जड़कर आउट कर दिया। यह सिलसिला जारी रहा और स्मिथ ने हल की गेंद पर एक और बड़ा छक्का जड़ा, उसके बाद एक चौका जड़ा, और फिर गेंदबाज ने इस पारी का अंत कर दिया।

इसके बाद एश्टन टर्नर की बारी आई और उन्होंने भी एक उपयोगी छक्का जड़ा। दूसरे छोर पर वार्नर ने रन बनाना जारी रखा और स्कोर को 160 के पार पहुंचाया, जिसका मतलब था कि लक्ष्य का पीछा करने वाली टीम के लिए एक ठोस शुरुआत जरूरी थी। हालांकि स्टीव स्मिथ और बेयरस्टो ने अपने पहले मैच में पहले विकेट के लिए 62 रन जोड़े थे, लेकिन इस बार ऐसा नहीं हुआ क्योंकि ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी शुरुआत में ही स्कूप करने की कोशिश में थर्ड मैन पर आउट हो गए। दुर्भाग्य से वेल्श फायर के लिए, विकेटों के गिरने के साथ ही रन गति की शुरुआत हो गई।

धोनी से आगे निकल जाएंगे पंत, गिलक्रिस्ट भी पीछे छूट सकते हैं : आकाश चोपड़ा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के पूर्व सलामी बल्लेबाज आकाश चोपड़ा ने कहा है कि अगर ऋषभ पंत भारत के लिए ज्यादा मैच खेलते हैं तो वह टेस्ट मैचों में महेंद्र सिंह धोनी के रनों की संख्या को पीछे छोड़ देंगे। टेस्ट मैचों में भारत के उप-कप्तान पंत फिलहाल मैनचेस्टर में इंग्लैंड के खिलाफ चौथे मैच में बल्लेबाजी करते हुए दाहिने पैर में लगी चोट से उबर रहे हैं।

पंत ने अब तक 47 टेस्ट मैचों में 44.50 की औसत से 3427 रन बनाए हैं। उनके शतकों की संख्या में आठ शतक शामिल हैं, जो धोनी के छह शतकों से दो ज़्यादा हैं, हालांकि धोनी ने 90 टेस्ट मैच खेले हैं। चोपड़ा ने सवाल उठाया है कि क्या यह कहना सही होगा कि पंत भारत के लिए टेस्ट खेलने वाले सबसे महान विकेटकीपर-बल्लेबाज हैं।

उन्होंने कहा, 'खेलों और रनों की संख्या के मामले में एमएस धोनी शीर्ष पर हैं। उन्होंने 90 मैच, 144 पारियां

खेली हैं जिनमें 38.09 की औसत से 4876 रन बनाए हैं और उनके नाम छह शतक हैं। ऋषभ पंत ने पिछले पांच सालों में छह शतक लगाए हैं।' चोपड़ा ने कहा, 'अगर हम कुल मिलाकर देखें, तो ऋषभ पंत आठ शतक लगा चुके हैं और एमएस धोनी छह शतक लगा चुके हैं। ऋषभ पंत पहले ही (रनों की संख्या के मामले में) दूसरे स्थान पर हैं। वह एमएस धोनी से 1400 रन पीछे हैं और लगभग आधे मैच खेल चुके हैं। अगर वह और खेलेंगे, तो जाहिर है कि वह एमएस धोनी से आगे निकल जाएंगे।'

इंग्लैंड के हालिया टेस्ट दौरे की 7 पारियों में पंत ने 68.42 की शानदार औसत से 479 रन बनाए जिसमें लीड्स के हेडिंग्ले में सीरीज के पहले मैच में लगाए गए दो शतक भी शामिल हैं। उन्होंने कहा, 'अगर हम इंग्लैंड में किसी विकेटकीपर द्वारा बनाए गए सबसे ज़्यादा रनों पर नजर डालें, तो वह इंग्लैंड में 1000 रन बनाने वाले इकलौते खिलाड़ी हैं। उन्होंने चार शतक और पांच अर्धशतक लगाए हैं। उन्होंने 13 मैचों और 24 पारियों में 1000 से ज़्यादा रन बनाए हैं। इंग्लैंड में उनकी मूर्तियां बननी शुरू हो सकती हैं।'

चोपड़ा ने आगे कहा, 'अगर हम दुनिया के अब तक के सभी टेस्ट विकेटकीपरों की सूची देखें, तो एडम गिलक्रिस्ट ने 96 मैचों में 47.60 की औसत से 5570 रन बनाए हैं। वह उनसे काफी आगे हैं। हालांकि गिलक्रिस्ट भी पीछे छूट सकते हैं क्योंकि पंत उनसे लगभग 2250 रन पीछे हैं। बिना किसी संदेह के भारत के अब तक के नंबर 1 विकेटकीपर-बल्लेबाज और विश्व क्रिकेट में, वह सबसे बेहतरीन और शायद सर्वश्रेष्ठ में से एक बनकर उभरेंगे।'

बेंगलुरु में 80 हजार दर्शकों की क्षमता वाला नया स्टेडियम बनेगा : सिद्धारमैया

बेंगलुरु । कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया ने कहा है कि बेंगलुरु में नया क्रिकेट स्टेडियम बनाया जाएगा। इस स्टेडियम की क्षमता 80 हजार दर्शकों होगी और ये अहमदाबाद स्थित नरेंद्र मोदी स्टेडियम के बाद देश का दूसरा सबसे बड़ा क्रिकेट स्टेडियम होगा। हाल में चिन्नास्वामी स्टेडिमय में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की जीत के बाद हुए समारोह में जगह कम होने के बाद हुए हादसे के बाद नये स्टेडियम को बनाने की मांग उठी थी। जिससे सबक लेते हुए सिद्धारमैया ने नया स्टेडयम बनाने की घोषण कर दी। इस स्टेडियम को बनाने के लिए कर्नाटक हाउसिंग बोर्ड की सूर्या सिटी, बोम्मासंद्रा के प्रस्ताव को मंजूरी मिल गयी है। इसमें 1650 करोड़ रुपए की लागत आने का अनुमान है। ये स्टेडियम 100 एकड़ में बनाया जाएगा और इस परियोजना का पूरा खर्च कर्नाटक हाउसिंग बोर्ड उठाएगा। इसमें केवल क्रिकेट मैदान ही नहीं, बल्कि आठ इनडोर और आठ आउटडोर खेलों की सुविधाएं, आधुनिक जिम, ट्रेनिंग सेंटर, स्विमिंग पूल, गेस्ट हाउस, हॉस्टल, होटल और अंतरराष्ट्रीय आयोजनों के लिए एक कन्वेंशन हॉल भी होगा।

वॉन बोले अभी सचिन से बेहतर नहीं हुए हैं रुट

लंदन । इंग्लैंड के अनुभवी बल्लेबाज जो रुट ने हाल ही भारतीय टीम के खिलाफ सीरीज में शानदार बल्लेबाजी करते हुए कई अहम रिकार्ड अपने नाम किये हैं। जिसके बाद से ही दावा किया जा रहा है कि वह भारतीय टीम के महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर से भी अच्छे हैं और सबसे अधिक रनों का तेंदुलकर का रिकार्ड भी वह तोड़ सकते हैं। अभी वह सबसे अधिक रनों के मामले में दूसरे नंबर पर हैं। इसी को लेकर जब इंग्लैंड के पूर्व कप्तान माइकल वॉन से पूछा गया कि क्या रुट सचिन से बेहतर हैं तो वॉन ने कहा कि अभी नहीं। उन्होंने कहा कि रूट ने अभी तक 158 टेस्ट मैच खेले हैं। अगर बात सचिन के 200 में से पहले 158 टेस्ट मैचों की करें तो, रूट कई मामलों में अभी भी भारतीय बल्लेबाज से पीछे हैं। उदाहरण के के लिए 158 टेस्ट के बाद सचिन का औसत 54.75 का था, जबकि रूट का औसल 51.29 का है। तेंदुलकर के नाम जहां 158 टेस्ट मैचों में 42 शतक थे, वहीं रूट ने अभी तक इतने ही मैचों में 39 शतक लगाये हैं। हाल ही में संपन्न हुई 5 मैच की टेस्ट सीरीज में रूट ने 537 रन बनाये और वह सीरीज में शुभमन गिल के बाद सबसे ज्यादा रन बनाने वाले दूसरे बल्लेबाज रहे। इससे वह टेस्ट क्रिकेट के इतिहास में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाजों की दौड़ में लंबी छलांग लगाकर दूसरे स्थान पर पहुंच गए हैं। रूट ने इस दौरान राहुल द्रविड़, जैक कैलिस और रिकी पोंटिंग को पीछे छोड़ा अब उनके आगे केवल तेंदुलकर ही हैं। तेंदुलकर ने अपने टेस्ट करियर में कुल 15921 रन बनाए हैं, वहीं जो रूट 13543 रनों के साथ दूसरे पायदान पर पहुंच गए हैं। दोनों के बीच अब सिर्फ 2378 रनों का अंतर रह गया है।

जिंजर के चार विकेट, ऑस्ट्रेलिया ए ने भारत ए को हराकर टी20 सीरीज 3-0 से जीती

मैके (एजेंसी)। सियाना जिंजर के 16 रन देकर 4 विकेट की बदौलत ऑस्ट्रेलिया ए ने रविवार को मैके के ग्रेट बैरियर रीफ एरिना में भारत ए को चार रन से हराकर टी20 सीरीज में 3-0 से क्लीन स्वीप किया। भारत ए को दूसरे टी20 में 114 रनों से मिली करारी हार के ठीक एक दिन बाद मेहमान टीम ने गेंदबाजी में बेहतर प्रदर्शन करते हुए ऑस्ट्रेलिया ए को 144/8 पर रोक दिया जिसमें प्रेमा रावत और राधा यादव ने तीन-तीन विकेट लिए।

सलामी बल्लेबाज शेफाली वर्मा ने 25 गेंदों में छह चौकों और एक छक्के की मदद से 41 रनों की तेज पारी खेलकर टीम की जीत की नींव रखी। लेकिन क्वींसलैंड जिंजर की 20 वर्षीय ऑलराउंडर सियाना ने आठवें ओवर में शेफाली को आउट करके और 15वें ओवर में राघवी बिष्ट को स्टंप आउट करके मैच का रुख ऑस्ट्रेलिया ए के पक्ष में कर दिया।

इसके बाद सियाना ने 19वें ओवर में राधा और सजाना सजीवन को आउट किया, जिन्होंने सिर्फ तीन रन दिए और मेहमान टीम को जीत से 15 रन दूर छोड़ दिया। पुछल्ले बल्लेबाज क्रीज पर थे, जिसका टेस फ्लिंटॉफ ने आखिरी ओवर में बखूबी बचाव किया और ऑस्ट्रेलिया ए को कड़ी टक्कर देते हुए जीत दिलाई। भारत ए ने 140/8 का स्कोर बनाया।

इससे पहले एलिसा हीली ने 21 गेंदों पर 27 रन बनाए, जिसमें तीन चौके और एक छक्का शामिल था। उन्होंने एक दिन पहले ही 70 रनों की तूफानी पारी खेली थी। ताहलिया विल्सन (14) और अनिका लियरॉयड (22) ने अच्छी शुरुआत की, जबकि मैडलिन पेना ने 32 गेंदों पर 39 रनों की पारी खेली। इसके बाद सियाना ने 7 गेंदों पर नाबाद 17 रन बनाकर ऑस्ट्रेलिया ए को 144/8 के प्रतिस्पर्धी स्कोर तक पहुंचाया। इसके बाद उन्होंने अंत में गेंदबाजी में भी कमाल दिखाया और मेजबान टीम को लगातार तीसरी जीत दिलाई। दोनों टीमें अब बुधवार को होने वाले पहले वनडे के लिए ब्रिस्बेन जाएंगी।

नीरज और अरशद के बीच सिलेसिया डायमंड लीग में नहीं होगा मुकाबला

दोनो के नाम प्रवेश सूची में नहीं

मुम्बई । इस माह 16 अगस्त को पोलैंड में होने वाली सिलेसिया डायमंड लीग एथलेटिक्स स्पर्धा में भारत के स्टार भाला फेंक खिलाड़ी नीरज चोपड़ा और पाकिस्तान के अरशद नदीम के बीच अब मुकाबला देखने को नहीं मिलेगा। इसका कारण है कि इस प्रतियोगित की प्रवेश सूची में इनके नाम नहीं हैं। वहीं इससे पहुले जुलाई में विश्व एथलेटिक्स ने जुलाई में कहा था कि दोनों प्रतिद्वंद्वी अगस्त 2024 में पेरिस ओलंपिक फाइनल के बाद सिलेसिया में पहले बार आमने-सामने आने वाले थे। अब संभावना है कि नीरज चोपड़ा और अरशद नदीम की अगली भिड़ंत सितंबर में टोक्यो में आयोजित होने वाली विश्व एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में होगी। अरशद ने पेरिस ओलंपिक में स्वर्ण पदक जबकि नीरज ने रजत पदक जीता। नीरज ने हाल ही में दोहा डायमंड लीग में भाग लिया था पर वहां अरशद नहीं आये थे। वहीं इससे पहले 24 मई को होने वाले एनसी क्लासिक में इन दोनो का मुकाबला होना था पर भारत-पाक के बीच तनाव के कारण अरशद को उससे बाहर कर दिया गया था। पिछले महीने लंदन में अरशद नदीम की काफ सर्जरी हुई थी। इस कारण भी व कई टूर्नोमेंटों से बाहर थे। अरशद नदीम के कोच सलमान बट ने बताया नदीम अब सितंबर में टोक्यो में होने वाली विश्व चैम्पियनशिप की तैयारी पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं। नीरज इस साल अच्छे फॉर्म में रहे है। उन्होंने मई 2025 में दोहा डायमंड लीग में पहली बार 90.23 मीटर का थ्रो किया था।

रोहित-कोहली को कब तक वनडे प्रारूप में खेलना चाहिए, सौरव गांगुली ने दिया जवाब

कोलकाता। पूर्व भारतीय कप्तान सौरव गांगुली ने रोहित शर्मा और विराट कोहली के एकदिवसीय रिकॉर्ड को 'असाधारण' करार देते हुए कहा कि इन दोनों दिग्गजों को 50 ओवर के प्रारूप में तब तक खेलते रहना चाहिए जब तक कि उनका प्रदर्शन अच्छा है। कुछ मीडिया रिपोर्टों में कयास लगाया गया है कि ऑस्ट्रेलिया का आगामी दौरा इन दोनों खिलाड़ियों का आखिरी वनडे दौरा हो सकता है। गांगुली ने इस बारे में पूछे जाने पर कहा कि उन्हें ऐसे किसी बात की जनकारी नहीं है। गांगुली ने कहा, 'मुझे इसके बारे में कोई जानकारी नहीं है। इसलिए मैं इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दे सकता हूं।' गांगुली ने हालांकि इस बात पर जोर दिया कि उनके करियर को आगे बढ़ाने में प्रदर्शन सबसे महत्वपूर्ण कारक होना चाहिए। उन्होंने एक कार्यक्रम के इतर कहा, 'यह कहना मुश्किल है। जो भी अच्छा करेगा, वही खेलेगा। अगर वे अच्छा करते हैं, तो उन्हें खेलना जारी रखना चाहिए। कोहली का वनडे रिकॉर्ड असाधारण है, रोहित शर्मा के साथ भी ऐसा ही है। वे दोनों सफेद गेंद की क्रिकेट (सीमित ओवरों के मैच) में असाधारण हैं।' टेस्ट और टी20 अंतरराष्ट्रीय प्रारूण से संन्यास ले चुके इन दोनों खिलाड़ियों ने 2027 के विश्व कप के बारे में अपनी योजनाओं को अभी तक स्पष्ट नहीं किया है। भारत का एकदिवसीय श्रृंखला के लिए ऑस्ट्रेलिया दौरा 19 अक्टूबर से शुरू होगा, जिसके मैच पर्थ, एडिलेड और सिडनी में खेले जाएंगे। इसके बाद दिसंबर में भारत घरेलू मैदान पर दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ तीन वनडे मैच खेलेगा।

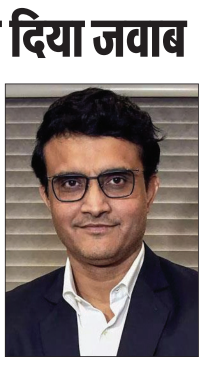

एशिया कप में पाकिस्तान-भारत के बीच मुकाबले पर... औपचारिक गारंटी नहीं दे सकता

एमिरेट्स क्रिकेट बोर्ड के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर का बयान

नई दिल्ली । भारत और पाकिस्तान के बीच पहलगाम में अप्रैल में हुए आतंकी हमले के बाद से तनाव बढ़ा हुआ है। भारत ने निर्दोष लोगों की जान का बदला लेने के लिए ऑपरेशन सिंदूर कर पाकिस्तान को सबक सिखाया है। दोनों के बीच छिड़े युद्ध पर भले ही विराम लग गया हो लेकिन रिश्ते अभी भी गर्त पर है। हाल में वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स के लीग और फिर सेमी मुकाबले से भारतीय टीम ने पाकिस्तान के साथ खेलने से मना किया। अब एशिया कप में दोनों टीमों के बीच होने वाले मुकाबले पर सवाल उठ रहे हैं। वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स (डब्ल्यूसीएल) के दो मैच रद्द कर दिए गए क्योंकि भारतीय खिलाड़ियों ने पाकिस्तान के खिलाफ खेलने से मना किया। इसी तरह, आगामी एशिया कप में भारत और पाकिस्तान के बीच होने वाले मैच का भविष्य भी अनिश्चित है। भारत और पाकिस्तान का मुकाबला 14 सितंबर को दुबई में होना है। संभावना है कि दोनों टीमें सुपर 4 और फाइनल में भी आमने-सामने हो सकती हैं। टूर्नामेंट शुरू होने में एक माह से भी कम समय बचा है और एमिरेट्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) के चीफ ऑपरेटिंग ऑफिसर सुब्हान अहमद ने सुझाव दिया है कि एशिया कप में दोनों टीमों का एक-दूसरे से न खेलना लगभग असंभव है। सुब्हान अहमद ने कहा, 卐हालांकि मैं औपचारिक गारंटी नहीं दे सकता लेकिन पाकिस्तान और भारत ना खेलें ऐसा कोई जोखिम नहीं दिख रहा। एशिया कप की तुलना निजी टूर्नामेंट जैसे वर्ल्ड चैंपियनशिप ऑफ लीजेंड्स से नहीं की जा सकती, जहां भारत ने लीग स्टेज और सेमी-फाइनल दोनों में पाकिस्तान के खिलाफ खेलने से मना कर दिया था। दुबई और अबू धाबी को 2025 पुरुषों के टी20 एशिया कप के आधिकारिक मेजबान शहरों के रूप में पुष्टि की गई है। टूर्नामेंट का आयोजन 9 से 28 सितंबर तक के बीच होना है। दुबई 11 मैचों की मेजबानी करेगा जिसमें फाइनल भी शामिल है।

मैं उस मौके का फायदा उठाना चाहता था, द ओवल में अपनी 66 रनों की पारी पर बोले आकाश दीप

नई दिल्ली (एजेंसी)। द ओवल में खेले गए अंतिम टेस्ट मैच में आकाश दीप के बल्ले ने कमाल कर दिया। चौथे नंबर पर नाइटवॉचमैन के रूप में एक मुश्किल स्थिति में उतरते हुए इस तेज गेंदबाज ने अद्भुत धैर्य और संयम का परिचय देते हुए 94 गेंदों में 12 चौकों की मदद से अपने करियर की सर्वश्रेष्ठ 66 रनों की पारी खेली। यशस्वी जायसवाल के साथ उनकी 107 रनों की साझेदारी निर्णायक मोड़ साबित हुई, जिससे भारत ने 5 मैचों की श्रृंखला 2-2 से बराबर कर ली।

आकाश ने पारी के बारे में बात करते हुए एक स्पोर्ट्स चैनल पर कहा, 'अगर हम अपने खेले गए मैचों पर नजर डालें, तो एक-दो मैचों को छोड़कर, निचला क्रम ज्यादा रन नहीं बना रहा था। यह बहुत जरूरी है कि निचला क्रम नंबर 9, 10 और 11 टीम के अच्छे प्रदर्शन के लिए कम से कम 25-30 रन जोड़े। जब मुझे नाइटवॉचमैन के तौर पर भेजा गया, तो मैं उस मौके का फायदा उठाना चाहता था और ज्यादा से ज्यादा समय तक वहां रहना चाहता था। मेरी टीम के भले के लिए यही एकमात्र योजना थी। सुबह जब मैंने उन्हें निराश देखा, तो मुझे एहसास हुआ कि मैं यहां भी कुछ रन बना सकता हूं।' उनकी पारी का एक खास आकर्षण वह स्टाइलिश चौका था जिससे उन्होंने अपना पहला टेस्ट अर्धशतक पूरा किया।

यह पूछे जाने पर कि क्या यह योजनाबद्ध था या सिर्फ सहज ज्ञान, आकाश ने खुलासा किया, 'मुझे लगा कि अगर गेंद लेगसाइड पर है और हवा में ऊपर जाती है, कोई फील्डर नहीं है, तो हम वहां बाउंड्री लगा सकते हैं। योजना यह थी कि अगर गेंद लेग-स्टंप क्षेत्र में है, तो मैं उसे हवा में मारूंगा। शॉट थोड़ा गलत टाइमिंग से लगा।' अपने पहले टेस्ट अर्धशतक के साथ आकाश दीप ह्यूग ट्रम्बल, शेन वार्न, इमरान खान, कीथ मिलर और रिचर्ड हैडली के साथ एक मैच में 10 विकेट और इंग्लैंड दौरे पर अर्धशतक लगाने वाले 12वें खिलाड़ी बन गए हैं।

ओवल टेस्ट से पहले 11.48 के प्रथम श्रेणी औसत के साथ आकाश दीप इस सदी में इंग्लैंड में चौथे नंबर पर पुरुष टेस्ट अर्धशतक बनाने वाले सचिन तेंदुलकर, विराट कोहली और शुभमन गिल के साथ चौथे भारतीय हैं। आकाश दीप ने आलोचकों को चुप करा देने वाली, युग-परिभाषित जीत में 10 विकेट लेकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। एजबेस्टन में इंग्लैंड पर 336 रनों से जीत पिछले महीने इस स्थल पर उनकी पहली टेस्ट जीत। टेस्ट मैच के दौरान आकाश ने इंग्लैंड में भारत का अब तक का सर्वश्रेष्ठ स्पेल डालकर एक बड़ा रिकॉर्ड बनाया।

तेज गेंदबाज ने इंग्लैंड में भारत के लिए एक मैच में सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजी आंकड़े दर्ज करके रिकॉर्ड बुक में अपना नाम दर्ज कराया और चेतन शर्मा के लंबे समय से चले आ रहे रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया। आकाश दीप के 10/187 के मैच के आंकड़े शर्मा के

10/188 के आंकड़े से आगे निकल गए। आकाश दीप 2011 में इसी स्थान पर इसी प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ अमित मिश्रा (84 रन) के बाद 50 से अधिक रन बनाने वाले पहले भारतीय नाइटवॉचमैन भी हैं। यह साझेदारी इस मौजूदा इंग्लैंड दौरे में 18वीं 100 रन की साझेदारी थी, जो इस सदी में (2000 के बाद से) किसी टेस्ट श्रृंखला में सर्वाधिक है, इससे पहले 2003-04 में बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में 17 बार साझेदारी हुई थी।

मायासभा में कैसा होगा दिव्या दत्ता का किरदार, एक्ट्रेस ने किया खुलासा

राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता अभिनेत्री दिव्या दत्ता ने तेलुगु सीरीज मायासभा- द राइज ऑफ द टाइटन्स में अपने किरदार को लेकर खुलकर बात की। इसमें वह राजनीतिक नेता इरावती बोस का किरदार निभा रही हैं। उन्होंने बताया कि उनका किरदार चालाकी से दूसरों को अपनी बातों में फंसाने वाला और उनका फायदा उठाने वाला है। उन्होंने बताया कि उनका किरदार इरावती ताकतवर है; साथ ही, वह अपनी कमजोरियों को भी छुपाती हैं ताकि लक्ष्य को हासिल करने में उनके रास्ते में कोई बाधा न बन सके। दिव्या दत्ता ने कहा कि इरावती के चालाक और हिसाब से काम करने वाले गुण उनके लिए सिर्फ एक कमजोरी या ताकत नहीं हैं, बल्कि ये सब मिलाकर उनके जीवन की स्थिति को समझने का एक तरीका है।
उन्होंने बताया कि एक अभिनेता के रूप में, उनका काम यह है कि वे अपने किरदार को निभाते वक्त इन गुणों को अलग-अलग तरीके से दिखाएं, जैसे कभी कुछ शब्दों को थोड़ा ऊपर, कभी नीचे, या कभी थोड़ा बदलकर, ताकि वह किरदार सच्चे और प्रभावी तरीके से दर्शकों तक पहुंच सके। एक्ट्रेस ने 1994 में फिल्म इश्क में जीना, इश्क में मरना से अपने करियर की शुरुआत की थी। वह अपने किरदारों में अलग-अलग पहलुओं को एक्सप्लोर करना पसंद करती हैं। न्होंने कहा, जब हम किसी किरदार पर काम करते हैं, तो हम उसमें थोड़ी सी चालाकी, थोड़ी सी मस्ती, थोड़ी सी बुद्धिमानी, या कभी-कभी एक इमोशनल उतार-चढ़ाव जोड़ते हैं। यह सब मिलाकर किरदार को और भी वास्तविक और दिलचस्प बनाता है।
मायासभा- द राइज ऑफ द टाइटन्स एक राजनीतिक ड्रामा वेब सीरीज़ है, जिसे देवा कट्टा और किरण जय कुमार ने डायरेक्ट किया है। इसमें चैतन्य राव, आधी, रवींद्र विजय, नासर, साई कुमार और चरिता वर्मा नजर आएंगे। इसके अलावा रघु बाबू, भावना वझापंडल और तान्या एस रविचंद्रन जैसे कलाकार भी सीरीज का हिस्सा हैं। यह सीरीज़ 1990 के दशक के आंध्र प्रदेश की राजनीति पर आधारित है।

सीजनल नहीं, इंसानी कहानियां हैं क्वीर स्टोरीज

अभिनेत्री-निर्माता श्वेता त्रिपाठी के ड्रामा कॉक को मुंबई और दिल्ली में प्राइड मंथ के दौरान खूब सराहना मिली। उन्होंने कहा कि क्वीर कहानियां सीजनल नहीं, बल्कि मानवीय हैं, जो साल भर सम्मान की हकदार हैं। श्वेता अपनी स्टेज प्रोडक्शन कंपनी ऑलमायटी के तहत इस ड्रामा को भारत के अन्य शहरों में ले जाने की तैयारी कर रही हैं।
श्वेता ने बताया, यह ड्रामा मेरे दिल के बहुत करीब है। एक सहयोगी के रूप में, हमें हर दिन इन कहानियों को बढ़ावा देना चाहिए। ये इंसानी कहानियां हैं, जिन्हें जगह और सम्मान मिलना चाहिए। उन्होंने बताया कि एक कलाकार के रूप में वह उस दुनिया की विविधता को दिखाने की जिम्मेदारी महसूस करती हैं, जिसमें हम रहते हैं।
कॉक एक ड्रामा है, जो प्यार, पहचान और सेक्सुअलिटी जैसे विषयों पर बनी है। ब्रिटिश नाटककार माइक बार्टलेट लिखित और मनीष गांधी के निर्देशन में बने इस नाटक में एक पुरुष की कहानी है, जो अपने पुराने पुरुष साथी और एक महिला के प्रति आकर्षण के बीच उलझा है। यह नाटक भारतीय रंगमंच में एलजीबीटीक्यू प्लस प्रतिनिधित्व को लेकर महत्वपूर्ण चर्चा छेड़ रहा है। श्वेता ने बताया कि वह साल 2025 और 2026 तक इस नाटक को और शहरों में ले जाने की योजना बना रही हैं, ताकि नए दर्शकों के साथ भी यह बातचीत जारी रहे। नाटक के अलावा, श्वेता एक निर्माता के रूप में अपनी पहली फिल्म की तैयारी कर रही हैं, जो एक मार्मिक क्वीर प्रेम कहानी होगी। एक्टिंग की बात करें तो श्वेता साल 2023 में आई विपुल मेहता की कॉमेडी फिल्म कंजूस मखीचूस में नजर आई थीं। कंजूस मखीचूस का निर्माण सोहम रॉकस्टार एंटरटेनमेंट के साथ थंडरस्काई एंटरटेनमेंट ने किया है। यह फिल्म प्रसिद्ध गुजराती नाटक सजन रे झूठ मत बोलो पर आधारित है। फिल्म में श्वेता त्रिपाठी के साथ कुणाल खेमू, पीयूष मिश्रा, अलका अमीन और राजीव गुप्ता अहम भूमिकाओं में हैं। जी5 पर रिलीज हुई कंजूस मखीचूस कमीडियन राजू श्रीवास्तव की आखिरी फिल्म रही।

बैटल ऑफ गलवान का उद्देश्य वास्तविक नायकों को सम्मान देना है

अभिनेत्री चित्रांगदा सिंह जल्द ही सलमान खान के साथ फिल्म में नजर आएंगी। इस फिल्म का टाइटल बैटल ऑफ गलवान है। उन्होंने फिल्म को साहस और वीरता की एक सच्ची और जमीनी कहानी बताया। वास्तविक घटनाओं पर आधारित इस फिल्म को चित्रांगदा ने रियल हीरोज का सम्मान बताया। अभिनेत्री चित्रांगदा सिंह का कहना है कि उन्हें इस फिल्म में सबसे खास चीज जो नजर आई है, वह थी इसकी भावनात्मक गहराई और मजबूत थीम। चित्रांगदा ने फिल्म के बारे में बताया, यह एक ऐसी कहानी है जो साहस और वीरता को दर्शाती है। आर्मी बैकग्राउंड होने की वजह से मैंने इस फिल्म से जुड़ने के बारे में सोचा। मैंने इस घटना के बारे में पहले काफी सुना था। इस फिल्म का हिस्सा बनना मेरे लिए गर्व की बात है। चित्रांगदा सिंह ने आगे कहा, फिल्म की कहानी सुनकर गर्व होता है, और मैं फिल्म में अपनी भूमिका को एक किरदार से बढ़कर मानती हूं, क्योंकि फिल्म का उद्देश्य केवल वास्तविक नायकों को सम्मान देना और कम चर्चित कहानियों को मुख्यधारा में लाने का एक प्रयास है।

फिल्म में सलमान खान के साथ काम करने के अनुभव के बारे में चित्रांगदा ने कहा, सलमान जिस प्रोजेक्ट का हिस्सा होते हैं, वह अपने आप में बड़ा बन जाता है। चाहे अभिनेता हो या तकनीशियन, सब कुछ बड़े स्तर पर होता है। यह कहानी ऐसी है जिसे बताया जाना चाहिए, और मुझे खुशी है कि मैं इसका हिस्सा हूं। इससे पहले सलमान खान फिल्म्स ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर इंडिया गेट से चित्रांगदा सिंह की एक खूबसूरत तस्वीर शेयर की। साथ में लिखा, सादगी और शालीनता का रूप चित्रांगदा सिंह का बैटल ऑफ गलवान की टीम में स्वागत है।

सबसे महंगी एक्शन फिल्म बनी वॉर 2, रजनीकांत की 'कूली' को देगी कड़ी टक्कर

400 करोड़ का बजट, 90 करोड़ में तेलुगु राइट्स और सुपरस्टार्स को मुनाफे में हिस्सेदारी। 'वॉर 2' संभवतः बॉलीवुड की सबसे बड़ी एक्शन फिल्म बनने वाली है। फिल्म में पानी की तरह पैसा कहां बहाया गया? और इससे थिएटर मालिकों और डिस्ट्रीब्यूटर्स को इतनी उम्मीद क्यों हैं?

स्टार्स और टेक्निकल टीम की फीस

फिल्म में ऋतिक रोशन और जूनियर एनटीआर जैसे बड़े सितारे हैं, जिनकी फीस 50 से 75 करोड़ रुपये तक मानी जा रही है। इसके साथ ही कियारा आडवाणी, निर्देशक अयान मुखर्जी और टेक्निकल क्रू की फीस को मिलाकर सिर्फ कास्ट और टीम पर 100 से 150 करोड़ रुपये तक का खर्च हुआ है।

इंटरनेशनल शूट और वीएफएक्स

डायरेक्टर अयान मुखर्जी ने फिल्म को इंटरनेशनल लेवल पर शूट किया है। इसमें हॉलीवुड स्टंट- कोरियोग्राफर्स की मदद से बोट चेज, कार एक्शन और हैंड-टू-हैंड फाइट सीन शामिल किए गए हैं। ड्रोन शॉट्स, ग्रीन स्क्रीन और हाई-क्वालिटी वीएफएक्स की वजह से पोस्ट-प्रोडक्शन का खर्च काफी बढ़ा।

आईमैक्स और डॉल्बी सिनेमा रिलीज

'वॉर 2' भारत की पहली फिल्म होगी जो डॉल्बी सिनेमा में रिलीज होगी। साथ ही इसे आईमैक्स स्क्रीन्स पर भी रिलीज किया जाएगा। इसके लिए खास कैमरा इक्विपमेंट और मास्टरिंग की जरूरत होती है, जो कि बहुत महंगा है। फिल्म में काम कर रही इंटरनेशनल स्टंट टीमें न सिर्फ महंगी हैं, बल्कि उनके साथ शूटिंग के दौरान बीमा, सुरक्षा और बॉडी डबल्स का खर्च भी जुड़ा होता है। फिल्म के ग्लोबल डिजिटल कैंपेन, सोशल मीडिया, इंटरनेशनल म्यूजिक स्कोर और डबिंग पर भी बड़ी रकम खर्च की गई है।

इंटरनेशनल स्केल पर 6 देशों में शूटिंग

'वॉर 2' की शूटिंग 150 दिनों में 6 देशों में हुई है। स्पेन के सलामांका और मैड्रिड में कार चेज सीन, अबू धाबी में बोट चेज और इटली में एक्शन सीन शूट किए गए। जापान और रूस में भी कुछ अहम सीन फिल्माए गए हैं। क्लाइमैक्स का 15 दिन का शेड्यूल मुंबई में यशराज स्टूडियो और फिल्म सिटी में हुआ है। पूरी शूटिंग बेहद सख्त सिक्योरिटी के बीच की गई ताकि कुछ भी लीक न हो।

इस वजह से रुबीना ने स्वीकारा पति पत्नी और पंगा का ऑफर

लोकप्रिय टीवी अभिनेत्री रुबीना दिलैक और उनके पति अभिनव शुक्ला पॉपुलर शो पति-पत्नी और पंगा में नजर आ रही हैं। अभिनेत्री ने आईएएनएस के साथ बातचीत में बताया कि उन्होंने मां बनने के बाद शो का ऑफर क्यों स्वीकार किया। अभिनेत्री ने बताया, इस शो की कहानी उनकी जिंदगी के नए दौर से मेल खाती है। साथ ही इस शो के जरिए उन्हें अपने पति अभिनव के साथ स्क्रीन पर नया अनुभव करने का मौका मिला। मां बनने के बाद मैं अपने पति के साथ ज्यादा समय बिताना चाहती थी। कुछ मस्ती भी करनी थी, इसलिए मैंने यह शो किया।
जब अभिनेत्री से पूछा गया, क्या रियलिटी शो स्क्रिप्टेड होते हैं? अभिनेत्री ने बताया, रियलिटी शो स्क्रिप्टेड नहीं होते, लेकिन उन्हें थोड़ा निर्देशित किया जाता है। अगर कोई चीज अच्छी चल रही हो, तो शो के निर्माता उसे और हाइलाइट करते हैं। यह स्क्रिप्टेड नहीं, बल्कि गाइडेड होता है। वहीं, अभिनेता अभिनव शुक्ला ने रियलिटी शो में स्क्रीन टाइम और रिश्तों की लंबी उम्र के बारे में भी बात की। उनके मुताबिक, रिश्ते में जितना ज्यादा स्क्रीन टाइम होता है, रिश्ता उतना ही कम समय तक चल सकता है। रुबीना ने उनकी बात का समर्थन करते हुए कहा, अभिनव सही कह रहे हैं। जितना ज्यादा हम एक-दूसरे की बातों और सोच को स्वीकार करेंगे, रिश्ता उतना ही बेहतर होगा। एक अच्छा रिश्ता तब बनता है, जब हम एक-दूसरे को वैसे ही अपनाएं, जैसे हम हैं। जब हम ये समझते हैं कि हम अलग हैं और फिर भी एक-दूसरे की इज्जत करते हैं, तो रिश्ते में प्यार और समझ बढ़ती है।
अभिनव शुक्ला ने बताया कि जब किसी बात पर बहस या मतभेद होता है, तो वह उसे संभालने का एक शांत तरीका अपनाते हैं। अभिनव ने कहा, जब हम दोनों के बीच झगड़ा होने लगता है, तो मैं थोड़ा पीछे हट जाता हूं, या फिर रुबीना को स्पेस देता हूं, थोड़ी देर बाद शांत होकर दोबारा उस बात पर चर्चा करता हूं, ताकि समस्या आसानी से सुलझ जाए। कुछ परेशानियां, कुछ घंटों में सुलझ जाती हैं, तो कुछ में ज्यादा समय लग जाते हैं। अभिनव ने मजाकिया अंदाज में कहा, हमारे रिश्ते में तो मैं बस यही कहता हूं, जो तुम कहो। और, अब ये लाइन काफी फेमस हो गई है। शो की शुरुआत 2 अगस्त से हो चुकी है और इसे कलर्स टीवी पर प्रसारित किया जा रहा है। शो को अभिनेत्री सोनाली बेंद्रे और कॉमेडियन मुनव्वर फारूकी होस्ट कर रहे हैं।

फरहान अख्तर ने राशि खन्ना की जमकर तारीफ की

'120 बहादुर' का टीज़र लॉन्च केवल एक प्रमोशनल इवेंट नहीं था, बल्कि यह आपसी सम्मान, कलात्मक तालमेल और साझा उद्देश्य का एक सशक्त उत्सव बन गया। इस कार्यक्रम में पैन-इंडिया स्टार राशी खन्ना और फरहान अख्तर ने दर्शकों को अपने ऑफ-स्क्रीन रिश्ते की एक झलक दिखाई, जो आपसी सम्मान और सच्ची केमिस्ट्री पर आधारित था। टीज़र में जहाँ रेजांग-ला के युद्ध की एक गंभीर और भावनात्मक कहानी दिखाई गई, वहीं मंच पर एनर्जी ताज़गी भरी, फिर भी बेहद सम्मानजनक रही। फिल्म में राशि के किरदार पर बात करते हुए फरहान अख्तर ने उनकी तारीफ़ करने से खुद को रोक नहीं पाए- राशि, आपके साथ काम करना एक बेहद शानदार अनुभव रहा। वह कहती हैं कि यह कहानी खुद उनके पास आई, लेकिन मुझे लगता है कि शायद इसका उल्टा हुआ है।
मेरा मानना है कि रास्ते खुद उन लोगों को ढूंढते हैं जो उन्हें निभाने के लिए सबसे उपयुक्त होते हैं। और इस भूमिका के लिए राशि को लेना — इससे बेहतर निर्णय हम कर ही नहीं सकते थे। वह फिल्म में बेहद शानदार हैं। आपने जो अभी देखा है, वह तो सिर्फ़ एक टीज़र है — असली जादू अभी बाकी है। यह एक सच्चे सम्मान का पल था, जिसने राशि को भी भावुक कर दिया। उन्होंने उतनी ही गर्मजोशी और सच्चाई से जवाब दिया- जब हम इस फिल्म के लिए एक साथ आए, तो सबसे पहले मुझे फरहान सर का धन्यवाद करना है क्योंकि उन्होंने ही बातचीत की शुरुआत की। मैं थोड़ी शर्मीली हूं, लेकिन सर बहुत ही विनम्र और सहज थे।एक व्यक्ति के रूप में उनकी ख़ासियत पर विचार करते हुए, उन्होंने आगे कहा- मेरे माता-पिता ने हमेशा सिखाया है कि किसी इंसान को समझना हो, तो यह देखो कि वह अपने आसपास के लोगों से कैसा व्यवहार करता है। और फरहान सर हर किसी को बराबरी का सम्मान देते हैं — चाहे वह कोई भी हो। यह एक ऐसी खूबी है जो मैंने बहुत कम लोगों में देखी है। इसलिए मैं उन्हें एक इंसान के तौर पर और भी ज़्यादा पसंद करती हूं। बेशक, मैं उन्हें एक अभिनेता और निर्देशक के रूप में सराहती हूं, लेकिन मुझे लगता है कि मैं उन्हें एक इंसान के रूप में भी बहुत पसंद करती हूँ। वह बहुत ही प्रेरणादायक और बहुत ही अनुशासित हैं। और अब तो सब जानते हैं कि जब मैं कुछ कहती हूं, तो दिल से कहती हूं। और मैं दिल से कह रही हूं — यह अनुभव वाकई अद्भुत रहा है। और मैं सच में उम्मीद करती हूं कि आगे भी मुझे उनके साथ काम करने के ऐसे और मौके मिलें।
मीडिया ने भी उनकी सहज दोस्ती और मंच पर साझा किए गए हल्के-फुल्के पलों को तुरंत भांप लिया। फरहान और राशि की हाज़िरजवाबी और सेंस ऑफ ह्यूमर ने पूरे इवेंट को जीवंत बनाए रखा। '120 बहादुर' जैसी फिल्म, जो गहरे भावनात्मक स्तर और जटिल पात्रों पर आधारित है, उसमें ऑफ-स्क्रीन तालमेल ऑन-स्क्रीन प्रभाव को और भी गहरा बना देता है। और जहाँ एक ओर पूरी नज़र फिल्म की कहानी और इसके भव्य पैमाने पर है, वहीं अब इसके मुख्य कलाकारों के बीच की यह सधी हुई, पर सच्ची केमिस्ट्री दर्शकों की उत्सुकता को एक और स्तर पर ले जा रही है।

सपने और फायनेंशियल प्लानिंग

शादी के बाद आपके जीवन में एक और साथी शामिल हो जाता है। जब हमारे परिवार में कोई नया सदस्य बढ़ता है तो उसके साथ-साथ हमारे खर्चों का बढ़ना भी स्वाभाविक है।

शादी के बाद कई बार प्रापर प्लानिंग के अभाव में हमारा बजट गड़बड़ा जाता है। उस वक्त होने वाली परेशानियों से बचने के लिए पहले से ही हर चीज की प्लानिंग करके चलें ताकि बाद में आपको कोई परेशानी नहीं हो।

शादी के बाद हमारे सपनों में भी पंख लग जाते हैं। शादी के बाद नए घर, बच्चे, अच्छी लाइफ स्टाइल, खर्च आदि के रूप में हमारे कई सपने उपजने लगते हैं।

ऐसे में अपने सपनों को हकीकत बनाने के लिए तथा अपने जीवनसाथी को खुशियों का तोहफा देने के लिए अपनी फायनेंशियल प्लानिंग करें। यदि आप प्री-प्लानिंग नहीं करेंगे तो पलक झपकते ही आपकी जेब कैसे ढीली हो जाएगी आपको पता ही नहीं चलेगा।

हमारे जीवन में कई ऐसी घटनाएँ होती हैं, जिनका पूर्वानुमान भी हम नहीं कर सकते हैं। ऐसी परिस्थितियों के लिए हमेशा तैयार रहें तथा अपने बजट में से कुछ धनराशि इन आपातकालीन खर्चों के लिए जमा करके रखें।

प्राथमिकताएँ तय करें :

शादी के बाद फरमाइशों की लंबी फेहरिस्त लग जाती है। ऐसे में प्राथमिकता वाले काम को पहले करें। एक-दूसरे की सलाह से यह तय करें कि पहले आपके लिए गाड़ी, घर, नौकरी आदि में से क्या बहुत जरूरी है। उसके हिसाब से यह तय करेंगे कि आपका बजट क्या है और उस बजट में आप उस चीज को खरीद सकते हैं या नहीं?

बीमा और हेल्थ पॉलिसी : शादी के बाद आपकी जिम्मेदारियाँ बहुत बढ़ जाती हैं इसलिए दोनों की बीमा पॉलिसी जरूर लें। इससे आपका भविष्य सुरक्षित हो जाएगा। यह एक ऐसा कार्य है, जिसको टालना भविष्य की कई परेशानियों का सबब बनता है।

आपके बेहतर स्वास्थ्य के लिए 'हेल्थ पॉलिसी' बहुत फायदेमंद सिद्ध होती है। बीमारी कभी कहकर दस्तक नहीं देती है इसलिए भविष्य में आने वाले खतरों के लिए पहले से ही सचेत रहें।

जब घर खरीदें :

यदि आप नया घर खरीदना चाहते हैं तो पहले ही घर खरीदने के रुपए के अलावा महीनेभर के राशन, बिजली, पानी व केबल का बिल आदि खर्च को भी उसमें जोड़ें। ऐसा करने पर आपको महीनेभर में आपकी जेब से इन खर्चों के नाम पर निकलने वाले रुपयों का अनुमान हो जाएगा।

आपातकालीन खर्च :

हमारे जीवन में कई ऐसी घटनाएँ होती हैं, जिनका पूर्वानुमान भी हम नहीं कर सकते हैं। ऐसी परिस्थितियों के लिए हमेशा तैयार रहें तथा अपने बजट में से कुछ धनराशि इन आपातकालीन खर्चों के लिए जमा करके रखें।

बजट का हमेशा ध्यान रखें :

किसी शादी-ब्याह व अन्य समारोहों में अपने बजट का पूरा ख्याल रखें क्योंकि उत्सुकतावश व दूसरों को खुश करने के लिए हम दिल खोलकर खर्च करते हैं परंतु बाद में उसकी भरपाई के लिए हमें अपनी कई चीजों से समझौता करना पड़ता है। इस स्थिति से बचने के लिए अपनी चादर देखकर ही पैर पसारें।

'आज सब कुछ लुटा दिया तो कल को आपके पास क्या बचेगा' हमेशा कुछ भी खरीदते वक्त इस बात का हमेशा ख्याल रखें।

अपने भविष्यगामी खर्चों की प्रापर प्लानिंग करें। इस प्रकार प्रापर प्लानिंग से आप अपने जीवनसाथी को उम्रभर की खुशियाँ दे सकते हैं तथा एक सुखमय जीवन की शुरुआत कर सकते हैं।

मेहमानों का कमरा हो खास

घर के हिस्से में मेहमानों का कमरा अपने अलग मायने रखता है। जितनी खुशी से आप मेहमानों का स्वागत करते हैं। उसी उत्साह को घर के गेस्ट रूम को सजा कर गेस्ट को अपने पन का अहसास करा सकते हैं। जिससे मित्र या हो रिश्तेदार बार-बार मिलने के लिए घर आए और आपकी तारीफ करें। इसलिए ये कमरा हर तरह से आरामदायक होना चाहिए। आप भी अपने घर को कुछ ऐसा अंदाज दे सकते हैं-

- कमरे में हल्के रंगों का प्रयोग करे जैसे ऑफ व्हाइट, क्रीम, लाइट ब्ल्यू आदि। क्योंकि अक्सर ऐसा होता है कि घर आने वाले मेहमान लम्बा सफर तय आते हैं। ऐसे में हल्के रंग आंखों को सुकून पहुंचाने वाले होते है। गहरे रंग आंखों में चुभते हैं।
- कमरे को और भी आकर्षक रूप देने के लिए कमरे की चादरें, पर्दो के रंग मिलते-जुलते होने चाहिए।
- कमरे को कुछ इस तरह सजाएं कि वह होटल के किसी कमरे की तरह न लगे। इस बात का ध्यान जरूर रखें कि फर्नीचर बहुत ज्यादा भरा हुआ न हो जिससे कि कमरे में चलने-फिरने में आसानी रहे और कमरा भी खुला-खुला दिखाई दे। इंटीरियर डेकोरेशन में ओपन स्पेस की अहमियत को समझें।
- गेस्ट रूम को स्टोरेज रूम में भी तब्दील न करें, घर की कोई भी पुरानी चीज या फिर बेकार पड़े सामान को इस कमरे की अपेक्षा स्टोर रूम में ही रखें। इससे घर के इस हिस्से में ठहरने वाले मेहमान को अपने घर जैसा ही अहसास होगा।
- कमरे में कपड़ों और दूसरे सामान को रखने के लिए एक अलमारी जरूर होनी चाहिए। इससे कमरे में रखा सामान बिखरा हुआ नहीं लगेगा।
- कमरे में कचरा रखने के लिए छोटा सा कूड़े दान, एक टेबल या फिर दीवार घड़ी के अलावा चाहें तो ताजे फूलों को फूलदान में सजा सकते हैं। इससे भी आपके घर आने वाले मेहमानों को फ्रेश अहसास मिल सकेगा। आप चाहें तो साइड टेबल पर कुछ पुस्तक व पत्रिकाएं भी रख सकते हैं।
- गेस्ट रूम में रोशनी का पूरा प्रबंध करना भी आवश्यक है। इसके अलावा नाइट लैंप की व्यवस्था भी इस कमरे में की जा सकती है। आप चाहें तो ड्रेसिंग टेबल के साथ ही आलमारी या फिर दीवार में फुल साइज का मिरर भी लगा सकते हैं। इससे उन्हें कही आने-जाने के समय तैयार होने में सहायता मिलेगी।

गुस्से पर लगाएं ब्रेक

भौंहें हर दम तनी रहती हैं मिसेज बेला उपाध्याय की। बच्चों से कोई चीज रखने में चूक हो जाए तो सातवें आसमान पर चढ़ जाता है उनका पारा। पति उनके कहे काम को टाल दें तो बर्दाश्त नहीं हो पाता उनसे। फट पड़ती हैं पति पर। ऑफिस में भी सहयोगी ज्यादा बात नहीं करना चाहते हैं उनसे, सभी अनप्रेडिक्टेबल कहते हैं उन्हें। अपने गुस्सैल स्वभाव पर काबू नहीं कर पाती हैं बेला। बाद में सोचती जरूर हैं कि नाहक गुस्सा किया मैंने, लेकिन तब तक तीर कमान से निकल चुका होता है। बात-बात में गुस्सा करने की उनकी आदत अब खुद पर भारी पड़ने लगी है। उनके लिए कोई कहता है, बड़ा एटीट्यूड है इसका, कोई कहता है, इससे तो बात करना ही बेकार है और कोई तो यह तक कह देता है, नकचढ़ी हैं। परिवार के लोग भी उनकी इस आदत को बखूबी समझते हैं, इसलिए उनसे सिर्फ जरूरत भर की बात करना ही पसंद करते हैं। चूंकि वह अपनी इस फितरत को मैनेज नहीं कर पा रही हैं, इसलिए अलग-थलग पड़ती जा रही हैं।

बेला की अपनी टेंशंस हैं, अपनी मुश्किलें हैं, अपनी कमजोरियां, मजबूरियां हैं, अपनी व्यस्तता और निराशा है, लेकिन कोई दूसरा उसका खामियाजा क्यों भुगते? गुस्सा करने की उनकी आदत उन पर तो भारी है ही, पर दूसरों को भी जीने नहीं देती। क्या बेला का यह व्यवहार उचित है? उनके अनुरूप अगर मैं बच्चों को डांटूं नहीं या पति और ऑफिस के सहयोगियों को टोकूं नहीं तो सब कुछ अस्त-व्यस्त हो जाएगा। बेला को अपनी सोच भले ही सही लगती हो, लेकिन वह इसके कुप्रभावों को लेकर बेपरवाह हैं।

आज जमाना परंपरागत तरीकों को छोड़कर व्यावहारिक उपायों को अपनाने का है। अगर कूल लाइफ चाहिए तो मैनेज करना ही पड़ेगा तुरंत भड़क जाने की इस आदत को और देनी पड़ेगी दूसरों को सांस लेने की आजादी।

एक बार चीखती हूं बस

मुझे जब बहुत तेज गुस्सा आता है तो एक बार चीखती जरूर हूं, लेकिन जल्दी ही खुद पर कंट्रोल कर लेती हूं और किचन में चली जाती हूं। अपने गुस्से को मैं वहीं उतारती हूं। जल्दी-जल्दी काम खत्म कर लेती हूं। कुछ समय मिल जाता है कूल होने के लिए और पति व बच्चों को मेरी नाराजगी समझ में आ जाती है। ज्यादा देर माहौल में तनाव नहीं रखती। जल्दी ही सब नॉर्मल कर देती हूं।% कनिका का यह फॉर्मूला एकदम प्रैक्टिकल है। इसमें किसी का कोई नुकसान नहीं। उनका काम भी तेजी से हो जाता है और आवेश भी खत्म हो जाता है। दरअसल, समय की मांग भी यही है। व्यर्थ का तनाव मुश्किलों को बढ़ाएगा ही।

खुश्बू से रिलैक्स

भीनी-भीनी सी खुश्बू हर मर्ज का इलाज साबित होती है। मल्टीनेशनल कंपनी में मैनेजर पद पर कार्यरत प्रज्ञा श्रीवास्तव के लिए तो कम से कम ऐसा ही है। दफ्तर में छोटी सी बात पर भड़क जाती थीं वह। शुरू में तो उन्हें लगा कि उनके तेज बोलने से काम तेजी से हो रहा है, लेकिन जब लगा कि अपनी टीम से कटने लगी हैं वह तो उन्होंने खुश्बू को अपना सहारा बना लिया। जब उनका पारा हाई होने लगता है तो खुश्बूदार टिश्यू पेपर निकाल लेती हैं। उससे चेहरे को पोंछने पर उन्हें हीलिंग इफेक्ट का अहसास होने लगता है। इसकी नमी उन्हें ताजगी देती है और खुश्बू खुद को काबू करने की क्षमता।

ब्रिस्क वॉक से कूल

मैंने तो छोटी सी बात पर रिएक्ट किया था। ऐसा तो मैं हरदम ही करती हूं। इसमें नया क्या था। ये चाहते तो चुप रहकर बात खत्म भी कर सकते थे, लेकिन इन्होंने ही बहस बढ़ा दी और मेरा गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया। अच्छा हुआ कि फिर मैं निकल गई सैर पर। तेज कदम चलकर मैंने अपने गुस्से को बाहर आने की जगह दी और खुद को कूल किया। किरण को शायद यह अहसास नहीं था कि किसी भी मौके पर गुस्सा हो जाना उनकी आदत में शुमार हो गया था और यही झगड़े की जड़ था। फिर भी उन्होंने बिगड़ी बात को और बिगड़ने से बचा लिया और ब्रिस्क वॉक करके अपनी सेहत को भी सुधरने का मौका दिया।

रामबाण है संगीत

संगीत में खो जाना दुनिया भुला देने जैसा है। आवेग को नियंत्रित करने में रामबाण साबित हो सकती है संगीत सुनने की प्रैक्टिस। घर में आपके मनपसंद गीत हल्की आवाज में चल रहे हों तो कोई कुछ भी करे, कुछ भी कहे आपको कोफ्त नहीं होगी। आप शांति से समाधान निकाल पाएंगी। अगर गाड़ी चला रही हैं और मध्यम आवाज में एफएम पर आ रहे पुराने गीत या गजलों का लुत्फ उठा रही हैं तो सड़क पर तकरार जैसी नौबत तो नहीं आएगी। इस संगीत की बदौलत ही शालिनी अपने घर और दफ्तर का सफर बिना किसी तनाव के पूरा कर लेती हैं। घर से भी गुनगुनाती हुई निकलती हैं और ऑफिस में भी अच्छे मूड में प्रवेश करती हैं।

मेरी बीवी से पूछिए

हम दुनिया को हंसाते हैं, उनका तनाव दूर करते हैं, लेकिन खुद मुझे गुस्सा बहुत आता है। सीरियल करते वक्त इसे रोकना मुश्किल हो जाता है। मेरी बीवी से पूछिए मेरे गुस्से की बात, क्योंकि झेलना तो उन्हें ही पड़ता है। मैं अपना गुस्सा बिल्कुल भी मैनेज नहीं कर पाता। अपसेट हो जाता हूं। चिड़चिड़ा हो जाता हूं, लेकिन यह सब चलता है सिर्फ 10 मिनट के लिए। ज्यादा देर के लिए नहीं। बहुत जल्दी ही सब कुछ नॉर्मल हो जाता है।

अतुल परचुरे, टीवी एक्टर

झलक दिख जाती है चेहरे पर

मैं अपने गुस्से को बाहर नहीं निकाल पाती, लेकिन उसकी झलक मेरे चेहरे पर दिख जाती है। खिचड़ी के बाद जब मैं आर. के. लक्ष्मण की दुनियाके लिए आई तो सब लोगों को यही लगा कि मैं बड़ी एटीट्यूड वाली हूं, लेकिन ऐसा नहीं है। हां, शूट में कुछ गलत होता है तो मुझे लगता है क्यों? आखिर ऐसा क्यों हो रहा है? एकदम से गुस्सा आ जाने की अपनी इस आदत को काफी हद तक मैनेज कर लेती हूं मैं।

वंदना पाठक, टीवी एक्टर

गौर करें

- क्या वाकई बात इतनी चुभने वाली थी कि आप रिएक्ट कर गई?
- क्या आपकी अपनी जल्दबाजी तो गुस्से का सबब नहीं?
- क्या मुश्किलें सहन करने की आपकी साम?र्थ्य कम तो नहीं हो गई?
- क्या आपके प्रियजन तो आहत नहीं हुए?
- क्या प्रभाव नजर आ रहे हैं आपको अपने गुस्से के?

क्या करें

- कोई बात आपको बुरी लगी है तो उसे सीधे-सीधे बता दें। जाहिर कर दें अपनी नाराजगी।
- खुद को टाइम दें, स्पेस दें और स्थिति को समझें।
- खुद को उस जगह पर रख कर सोचें।
- बात-बात पर गुस्सा करने से भी इसकी आदत बन जाती है। अगर ऐसा है तो बदलें खुद को और खुश रहने की आदत डालें।
- तुरंत रिएक्ट न करें।

फील गुड फैक्टर

हमारे भीतर का जो गुस्सा होता है वह हमें कहीं न कहीं भरोसा दिलाता है कि हम अपने हालात बदल सकते हैं। हॉर्वर्ड डिसीजन साइंस लेबोरेटरी की रिसर्च के मुताबिक अगर हम अपने अंदर के गुस्से को सही रास्ता दिखा दें तो जिंदगी बदल सकते हैं। अपने अधूरेपन को भरने की कोशिश हमें कहीं से कहीं ले जा सकती है। बदलाव की छटपटाहट एक टॉनिक का काम भी कर सकती है।

क्या हैं कारण

- लाइफस्टाइल में बढ़ती व्यस्तता
- उम्मीदों से कम सफलता
- क्षमताओं से ज्यादा टारगेट